राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 290

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, शनिवार, 28 मार्च 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

कोरोना को हराने के लिए सेना का ऑपरेशन नमस्ते

>>3

कोरोना मीटर

	विश्व	अमेरिका	चीन	भारत	(21 मार्च)	दिल्ली
कुल केस	5,52,943	85,762	81,340	827	308	40
मौतें	25,045	1,306	3,292	20	4	1
स्वस्थ हुए	1,28,706	1,868	74,588	67	23	5

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
केरल	164	0
महाराष्ट्र	156	4
कर्नाटक	64	2
तेलंगाना	59	0
गुजरात	47	3
उत्तर प्रदेश	51	0
राजस्थान	50	0
पंजाब	38	0
अन्य	196	7

समय : रात 11:45 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	केस	मौतें
इटली	80,589	8,215
स्पेन	64,059	4,858
जर्मनी	47,373	285
ईरान	32,332	2,378

निश्चिंत रहें, पूरी तरह सुरक्षित है आपका अखबार

आप सब इससे अवगत ही होंगे कि प्रख्यात डॉक्टर, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ आदि बार-बार यह कह रहे हैं कि अखबारों से कोरोना वायरस के संक्रमण फैलने का कोई खतरा नहीं है। आप पूरी तरह निश्चिंत होने के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करके खुद देख सकते हैं कि आपका प्रिय दैनिक जागरण समाचार पत्र कितने सुरक्षित तरीके से छपकर आपके हाथों में पहुंचता है। सतर्कता और सजगता की यह प्रक्रिया हम हर दिन-हर क्षण अपनाते हैं, क्योंकि आपकी तरह हम भी कोरोना को परास्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रतिबद्धता को और प्रबल करने के लिए यह आवश्यक है कि आप समाचारों के सबसे विश्वसनीय स्रोत से जुड़े रहें। आपकी तरह हमें भी यह भरोसा है कि हम यह जंग जीतेंगे।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +919013151515

कोरोना को हराना है

सरकार ने जरूरी चीजों की आपूर्ति के लिए बनाई टास्क फोर्स • पेज 5

फिलहाल मास टेस्टिंग की जरूरत नहीं : आइसीएमआर • पेज 6

अक्षय कुमार बोले, इस समय जो घर पर है वही सुपरस्टार • पेज 7

सरोकार

कोरोनाजानकारी.इन हिंदी दे रही काम की जानकारी

लखनऊ : युवा आइएएस अधिकारी प्रशांत शर्मा ने कोरोना के प्रति लोगों को सही जानकारी उपलब्ध कराने के लिए कोरोनाजानकारी.इन नामक हिंदी वेबसाइट तैयार की है। (पेज-4)

जागरण विशेष

हारेगा कोरोना! अपना डीएनए ही नहीं आरएनए भी बेजोड़

लखनऊ : शोधकर्ताओं का दावा है कि भारतीयों में विशिष्ट और विरला माइक्रो आरएनए मौजूद है, जिसमें कोरोना वायरस की तीव्रता को कमजोर करने की ताकत है। (पेज-7)

कर्ज सस्ता, ईएमआइ में मोहलत

रेपो रेट में एकमुश्त 75 आधार अंकों की कटौती, तीन महीनों तक ईएमआइ भुगतान पर रोक

जयप्रकाश रंजन • नई दिल्ली

कोरोना से प्रभावित इकोनॉमी और लॉकडाउन में फंसी आम जनता को सरकार ने वित्तीय राहत का कवच दे दिया है। एक दिन पहले ही गरीब वर्ग के लिए अन्न और धन का इंतजाम करने के बाद शुक्रवार को वेतनभोगी और कारोबारी वर्ग के लिए बड़ी घोषणा कर दी है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए बैंकों को हर तरह के टर्म लोन के भुगतान पर तीन महीने तक राहत की अनुमति दे दी है। इसका मतलब हुआ है कि मार्च से मई, 2020 तक के लिए होम लोन, ऑटो लोन, अन्य पर्सनल लोन की मासिक किस्त (ईएमआइ) के साथ क्रेडिट कार्ड बिल के भुगतान से भी छूट दे दी गई है। इसके साथ ही कारोबार चलाते रहने के लिए बैंक लोन लेने वाले उद्यमियों को इस पर देय ब्याज को इन तीन महीनों के लिए टाल दिया गया है। आरबीआइ ने कर्ज को सस्ता करने के लिए रेपो रेट में 75 आधार अंकों और रिवर्स रेपो रेट में 90 आधार अंकों की कटौती व बैंकों के लिए नकद आरक्षित अनुपात को चार से घटाकर तीन फीसद करने का भी फैसला किया है। दूसरे कई कदमों से बैंकिंग व्यवस्था में 3.74 लाख करोड़ रुपये की राशि भी डाली गई है।

आरबीआइ गवर्नर डॉ. शक्तिकांत दास ने माना कि कोविड-19 की वजह से अर्थव्यवस्था के समक्ष जो चुनौतियां बनी हैं, वैसी स्थिति पहले कभी नहीं देखी गई। यही वजह है कि 31 मार्च से दो अप्रैल के बीच होने वाली मौद्रिक नीति समीक्षा समिति (एमपीसी) की बैठक पहले ही 25-27 मार्च के बीच बुलाई गई। आरबीआइ ने कहा है कि कोरोना वायरस का असर कब तक रहता है, इससे देश की अर्थव्यवस्था की दशा व दिशा भी तय होगी। आरबीआइ ने बताया है कि सभी वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक, लोकल एरिया बैंक, एनबीएफसी, हाउसिंग फाइनेंस कंपनी, सहकारी बैंक से लिए गए हर तरह के टर्म लोन (कृषि, खुदरा, फसल समेत) के मासिक किस्त भुगतान पर पहली मार्च से 30 मई, 2020 तक रोक लग जाएगी। सभी संस्थानों के बोर्ड इस अवधि के दौरान किस्त अदाएगी को आगे बढ़ा देंगे। वैसे इस दौरान बकाये कर्ज पर ब्याज की गणना होती रहेगी। आरबीआइ ने यह भी स्पष्ट किया है कि इन तीन महीनों के दौरान नहीं होने वाले भुगतान से बैंक के वित्तीय प्रदर्शन और ग्राहकों की क्रेडिट रेटिंग पर कोई असर नहीं होगा। यानी जो कर्जदार अपने कर्ज का भुगतान नहीं करेंगे, उसे बैंक एनपीए नहीं मानेंगे।

स्वचालित तरीके से लागू होगा निर्देश पेज>>10

राहत का कवच

- इकोनॉमी पर असर कम करने के लिए मिशन मोड में आरबीआइ
- उद्योग जगत को वर्किंग कैपिटल लोन पर 3 महीने का ब्याज माफ
- वर्ष 2008 के वित्तीय संकट के मुकाबले ज्यादा मजबूत है भारतीय इकोनॉमी की बुनियाद

3.74 लाख करोड़ रुपये की राशि कई अन्य माध्यमों से बैंकिंग व्यवस्था में दी

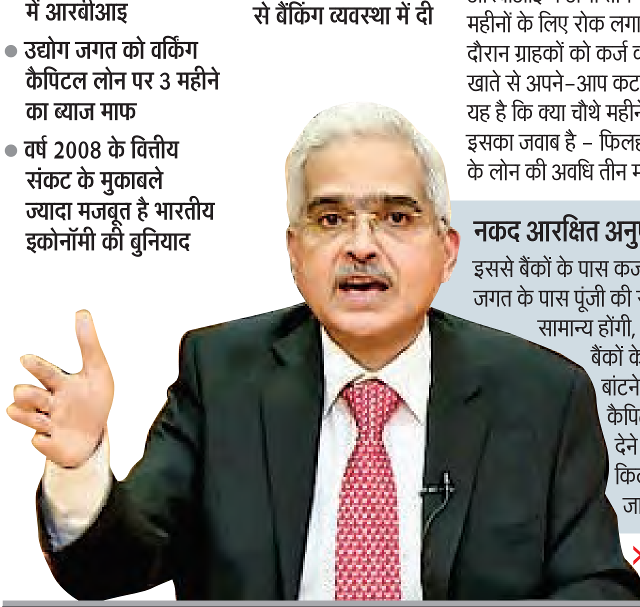

>> मुंबई में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से मीडिया को संबोधित करते आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास • प्रेट्र

यूं समझें आरबीआइ के फैसलों को

लोन पर ईएमआइ में तीन महीने की मोहलत का क्या मतलब है?

आरबीआइ ने अभी तीन महीने के लिए हर तरह के कर्ज की ईएमआइ पर तीन महीनों के लिए रोक लगा दी है। इसका सीधा मतलब यह है कि इस अवधि के दौरान ग्राहकों को कर्ज की ईएमआइ नहीं चुकानी है। अगर ग्राहक की ईएमआइ खाते से अपने-आप कट जाती है, तो इस अवधि में वह नहीं कटेगी। अब सवाल यह है कि क्या चौथे महीने में पिछले तीने महीनों की ईएमआइ चुकानी होगी, तो इसका जवाब है - फिलहाल नहीं। अभी ऐसा कोई फैसला नहीं हुआ है। ग्राहकों के लोन की अवधि तीन महीने बढ़ाई जा सकती है।

नकद आरक्षित अनुपात एक फीसद घटाने से क्या होगा?

इससे बैंकों के पास कर्ज बांटने के लिए ज्यादा रकम बचेगी। अभी कारोबारी जगत के पास पूंजी की सख्त कमी है और जैसे ही बाजारों में गतिविधियां सामान्य होंगी, उन्हें तुरंत अतिरिक्त पूंजी की जरूरत होगी। ऐसे में बैंकों के पास अपने कारोबारी ग्राहकों को कर्ज के रूप में बांटने के लिए ज्यादा से ज्यादा रकम होनी चाहिए। वर्किंग कैपिटल लोन का ब्याज चुकाने में तीन महीने की मोहलत देने का भी मतलब यही है कारोबारी ग्राहकों पर वित्तीय किल्लत के मौजूदा माहौल में ज्यादा दबाव नहीं डाला जाए।

एसबीआइ का कर्ज 0.75 फीसद सस्ता

नई दिल्ली : देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक ने रेपो रेट में की गई कटौती का फायदा ग्राहकों को देने का फैसला किया है। एसबीआइ ने एलान किया है कि वह सभी तरह के कर्ज पर ब्याज दरों में पहली अप्रैल से 0.75 आधार अंकों की कटौती करेगा। इसका असर यह होगा कि 30 वर्ष की परिपक्वता अवधि वाले होम लोन की मासिक किस्त में 52 रुपये प्रति लाख की कमी आएगी। बैंक ने 28 मार्च से खुदरा सावधि जमा पर ब्याज दरों में 0.20 से 0.50 फीसद और बल्क एफडी में 50 से 100 आधार अंकों की है।

रेपो रेट और रिवर्स रेपो रेट में कटौती का क्या मतलब है?

रेपो रेट में कटौती का मतलब है कि आरबीआइ बैंकों को घटी दरों पर कर्ज देगा। इससे बैंकों के पास ज्यादा कर्ज लेने का विकल्प होगा, जिससे वे ग्राहकों को भी आसानी से ज्यादा कर्ज दे सकेंगे। इससे इकोनॉमिक गतिविधियों में तेजी आएगी। रिवर्स रेपो रेट में कटौती से भी यही होगा कि बैंक जितनी बची रकम आरबीआइ के पास रखते हैं, उस पर उन्हें कम ब्याज मिलेगा। ऐसे में बैंक आरबीआइ के पास पूंजी रखने की बजाय ग्राहकों को कर्ज देकर अधिक ब्याज कमाना उचित समझेंगे। दोनों की स्थितियों में ग्राहकों को फायदा होगा।

देश में एक ही दिन में 125 नए मामले और चार मौतें

- केरल में सबसे ज्यादा 39 और महाराष्ट्र में 28 नए मामले मिले
- संक्रमितों का आंकड़ा 818 पर पहुंच गया है, गुजरात में 18 नए केस मिले

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी है। एक दिन में संक्रमण के 125 नए मामले सामने आए हैं, जबकि चार लोगों की मौत हो गई है। देशभर में संक्रमितों की संख्या 800 को पार कर गई है। जिसमें 47 विदेशी नागरिक, वायरस के चलते जान गंवाने वाले 20 व्यक्ति और स्वस्थ हो चुके 67 लोग शामिल हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य के स्वास्थ्य विभागों के मुताबिक देश में वायरस से संक्रमित लोगों का आंकड़ा 818 पर पहुंच गया है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि इस वायरस के चलते 17 लोगों की जान गई है। महाराष्ट्र में एक दिन में सबसे ज्यादा 28 नए मामले सामने आए हैं और राज्य में संक्रमितों की संख्या 153 हो गई है। मुंबई में एक डॉक्टर की मौत हो गई है, उसे कोरोना वायरस से संक्रमित होने की आशंका में भर्ती किया गया था, हालांकि अभी जांच रिपोर्ट आनी बाकी है। राज्य के सांगली जिले में 12 नए केस मिले हैं और जिले में इनकी संख्या 24 हो गई है। ये सभी लोग एक परिवार से जुड़े हैं या उसके संपर्क में आए थे। यह परिवार हाल ही में सऊदी अरब से लौटा था और वायरस से संक्रमित पाया गया था। मुंबई में नौ व्यक्ति संक्रमित पाए गए हैं। राज्य में चार लोगों की अब तक मौत हो चुकी है।

तिरुअनंतपुरम में केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने हालात की समीक्षा के बाद बताया कि राज्य में एक दिन में सबसे ज्यादा 39 केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 164 हो गई है। नए मामलों में राज्य के सबसे ज्यादा प्रभावित कासरगोड जिले के 34 मामले शामिल हैं। राज्य में एक लाख से ज्यादा लोगों को निगरानी में रखा गया है।

तमिलनाडु में 500 डॉक्टर नियुक्त : तेलंगाना में संक्रमण के 10 नए केस सामने आए हैं और इनकी संख्या 59 हो गई है। राज्य में एक व्यक्ति को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। तमिलनाडु में छह मामले दर्ज किए गए हैं और पीड़ितों की संख्या 35 हो गई है। खराब होते हालात को देखते हुए राज्य सरकार ने 500 नए डॉक्टरों को नियुक्त किया है।

कर्नाटक के तुमकुरु में 60 साल के व्यक्ति की मौत : कर्नाटक के तुमकुरु में 60 साल के एक व्यक्ति की कोरोना वायरस से मौत हो गई है। यह व्यक्ति 13 मार्च को ट्रेन से दिल्ली से लौटा था। राज्य में कोरोना से यह तीसरी मौत है। इससे पहले कलबुर्गी में एक पुरुष और चिक्कबल्लपुरा में एक महिला की मौत हो चुकी है। संक्रमण के सात नए मामले मिले हैं और यह संख्या 62 हो गई है। इनमें 10 महीने की एक बच्ची भी है। बच्ची की हालत अभी स्थिर बताई गई है।

लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों को सबक सिखाने के लिए पुलिस तरह-तरह के तरीके अपना रही है। कर्नाटक में शुक्रवार को नियम तोड़ने वालों को पुलिस ने प्लेकॉर्ड दिया। जिस पर लिखा था, मेरी गलती है। हमने नियम तोड़ा है। एएनआइ

गुजरात में मेडिकल कॉलेज के डीन की पत्नी संक्रमित पेज>>5

पहली अप्रैल से शुरू हो जाएगी पढ़ाई

- शैक्षणिक संस्थानों और बोर्डों के साथ मिलकर मानव संसाधन विकास मंत्रालय बना रहा है कार्यक्रम
- हर दिन लगेंगी ऑनलाइन क्लास, कौन सा चैप्टर कब पढ़ाया जाएगा, पहले दी जाएगी सूचना

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमण के चलते लॉकडाउन से घरों में बैठकर ऊब रहे स्कूली बच्चों के लिए एक बड़ी खबर है। एक अप्रैल से उनकी कक्षाएं शुरू हो जाएगी। हालांकि यह स्कूल में नहीं, घरों में ही लगेंगी। जिसे वह टीवी, यू-ट्यूब चैनल समेत दूसरे ऑनलाइन माध्यमों से अटेंड कर सकेंगे। साथ ही किस विषय की क्लास कब लगेगी और कौन सा चैप्टर पढ़ाया जाएगा, उसकी सारी जानकारी स्कूल अपने बच्चों को मोबाइल मैसेज और मेल के जरिए देगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय फिलहाल एनसीईआरटी, सीबीएसई और एनआइओएस के साथ मिलकर योजना को अंतिम रूप देने में जुटा है। देश भर के शैक्षणिक बोर्डों से भी पूरे प्लान को अपने से संबद्ध स्कूलों तक पहुंचाने के लिए तैयार रहने को कहा है। छात्रों तक ज्यादा से ज्यादा पाठ्य सामग्री पहुंचाने की भी तैयारी है। साथ ही फोन-इन प्रोग्राम, स्टूडियो क्लास आदि आयोजित की जाएगी।

एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, स्कूलों की ओर से जल्द ही बच्चों और अभिभावकों को मोबाइल या ई-मेल पर सूचना दी जाएगी। कैसे क्लास लगेगी, इसकी भी पूरी जानकारी दी जाएगी। इसके लिए टोल फ्री नंबर भी जारी किया जाएगा।

चूकने के बाद भी कर सकेंगे पढ़ाई : छात्र यदि ऑनलाइन क्लास किन्ही कारणों से अटेंड करने से चूक जाते हैं तो बाद में उसे यू-ट्यूब पर देख सकेंगे। कोशिश यह भी है कि हर दिन के क्लास के वीडियो अभिभावकों के मोबाइल पर भेज दिए जाएं। ताकि छात्र बाद में किसी तरह की कठिनाई होने पर उसे देखकर समझ सकें। प्रस्तावित योजना में साफ किया गया है कि ऑनलाइन कराई जाने वाली इस पढ़ाई का परीक्षा से कोई जुड़ाव नहीं होगा। यह सिर्फ छात्रों को स्कूलों के बंद होने और 21 दिनों तक घरों में कैद रहने से होने चिंताओं से उबारने की एक पहल है।

नीट और जेईई मेंस मई के अंतिम सप्ताह तक स्थगित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना संकट को देखते हुए सरकार ने राष्ट्रीय पात्रता कम प्रवेश परीक्षा (नीट) और संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) मेंस को अब मई के अंतिम हफ्ते तक के लिए टाल दिया है। नई तारीखों का एलान बाद में होगा। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने शुक्रवार को इसका एलान किया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मौजूदा हालात को देखते हुए नीट और जेईई जैसी प्रतियोगी परीक्षाएं आयोजित कराने वाली एजेंसियों से परीक्षाओं की तारीख पर नए सिरे विचार करने के निर्देश दिए। इसके बाद एनटीए ने यह फैसला लिया। साथ ही 21 दिनों के लॉकडाउन के बाद 15 अप्रैल को नए सिरे से फिर से समीक्षा करने को कहा है। इसके साथ ही प्रवेश पत्र जारी करने की तारीख भी बढ़ा दी गई है। फिलहाल इसे 27 मार्च से ही जारी किया जाना था। जबकि जेईई मेंस का प्रवेश पत्र भी 31 मार्च से जारी होना है। अभी तक नीट की परीक्षा जहां तीन मई को होनी थी, वहीं जेईई की परीक्षा पांच अप्रैल से शुरू होकर 11 अप्रैल तक होनी थी।

डरें नहीं, जहां हैं वहीं होगी प्रवासी मजदूरों की देखभाल

कोरोना वायरस के कारण पूरे देश में लागू हुए लॉकडाउन के बाद दिहाड़ी मजदूरों के सामने गंभीर मुश्किलें खड़ी हो गई हैं। यातायात साधन ठप होने के बावजूद मजदूरों का कारवां पैदल ही अपने-अपने गांव की ओर चल पड़ा है। यह नजारा गाजियाबाद के यूपी गेट का है। इस बीच केंद्र सरकार ने इस स्थिति को गंभीरता से लिया है। केंद्र ने सभी राज्यों को इन मजदूरों के लिए तत्काल ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था करने का निर्देश दिया है। गृह मंत्री अमित शाह ने कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों से इस मसले पर बात की है। **(संबंधित समाचार-पेज-4 पर)** जागरण

सरकार का फैसला

32 वर्ष बाद धारावाहिक रामायण का आज से दूरदर्शन पर प्रसारण, जावडेकर ने कहा, सुबह और रात नौ बजे रोजाना दो एपिसोड दिखाए जाएंगे, चाणक्य, सर्कस जैसे कुछ अन्य धारावाहिकों के दोबारा प्रसारण पर भी विचार

आपके टीवी पर फिर से मंगल भवन अमंगल हारी...

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

दूरदर्शन के नेशनल चैनल पर टेलीविजन इतिहास के सबसे लोकप्रिय सीरियलों में से एक रामायण की शनिवार से वापसी हो रही है और इसके साथ ही आपके टेलीविजन सेटों में फिर से रविंद्र जैन की खनकती आवाज में गूंजने जा रहा है-मंगल भवन अमंगल हारी...। यह वह सिग्नेचर आवाज है जो पूरे देश को बांध देती थी, क्योंकि उसके बाद अगले एक घंटे तक हर जगह सब कुछ थम सा जाता था। कोरोना के कहर के बीच लगाए गए लॉकडाउन के कारण भी देश थमा हुआ है और केंद्र सरकार चाहती है कि रामायण जैसे सीरियल कोरोना से लड़ने के देश के संकल्प को और मजबूत करें। रामायण के दो एपिसोड प्रतिदिन डीडी नेशनल पर सुबह नौ से दस बजे तक और फिर रात में भी इसी समय दिखाए जाएंगे। खुद सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी।

सरकारी सूत्रों ने बताया कि रामायण के पुनः प्रसारण का फैसला होने के बाद जल्द ही दूरदर्शन के कुछ दूसरे प्रमुख चैनलों पर पिछली सदी के आठवें और नौवें दशक के कुछ अन्य लोकप्रिय सीरियलों का प्रसारण भी शुरू किया जाएगा। दूरदर्शन पर रामायण का प्रसारण 1988 में खत्म हुआ था और इस तरह लगभग तीन दशक बाद इसकी छोटे पर्दे पर वापसी हो रही है।

प्रतीकात्मक फोटो

दूरदर्शन के जिन कुछ दूसरे मनोरंजक व लोकप्रिय धारावाहिकों को दोबारा प्रसारित करने पर विचार हो रहा है उनमें सर्कस, व्योमकेश बक्शी, चाणक्य, उपनिषद गंगा आदि शामिल हैं। 74 एपिसोड के रामायण की लोकप्रियता का आलम यह था कि इसके प्रसारण से पहले ही पूरा घर-परिवार पूरी आस्था और निष्ठा के साथ सीरियल देखने बैठता था। गांव-शहर सभी जगहों पर प्रसारण के दौरान सड़कें सूनी दिखाई देती थीं।

रामायण में राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल, सीता की भूमिका निभाने वाली दीपिका चिखलिया और लक्ष्मण का रोल करने वाले सुनील लाहिरी को लोगों ने उनके इस रूप को ऐसा अपने मन में बिठा लिया था कि छोटे या बड़े पर्दे पर इन्हें किसी दूसरी भूमिका में सहजता से स्वीकार ही नहीं किया गया।

डीडी भारती पर आज से महाभारत का भी प्रसारण : रामायण की तरह दूरदर्शन के लोकप्रिय धारावाहिक महाभारत का प्रसारण भी शनिवार से डीडी भारती चैनल पर शुरू हो रहा है। इसके भी दिन में दो एपिसोड प्रसारित किए जाएंगे। दोपहर 12 से एक बजे पहला और शाम सात से आठ बजे दूसरा एपिसोड प्रसारित होगा।

किसानों को बड़ी राहत, कृषि क्षेत्र को लॉकडाउन से मिली छूट

नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने कृषि क्षेत्र को लॉकडाउन नियमों से छूट देने की घोषणा की है। रबी की फसलों को लेकर किसानों को कोई दिक्कत नहीं हो इसका ध्यान रखते हुए सरकार ने शुक्रवार को मंडी, खरीद एजेंसियों, खेती से जुड़े कामकाज, भाड़े पर कृषि मशीन देने वाले केंद्रों के साथ ही कृषि से संबंधित सामान के अंतर-राज्यीय परिवहन को लॉकडाउन से छूट दे दी। (पेज-4)

ब्रह्माकुमारीज की प्रमुख दादी जानकी का निधन

जयपुर : महिलाओं द्वारा संचालित दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी का 104 वर्ष की आयु में शुक्रवार को निधन हो गया। राजस्थान के माउंट आबू के एक निजी अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। उनका अंतिम संस्कार ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में स्थित मैदान में किया गया। (पेज-10)

ब्रिटेन के पीएम बोरिस जॉनसन का कोरोना टेस्ट पॉजिटिव

लंदन, रायटर : प्रिंस चार्ल्स के बाद ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन का कोरोना टेस्ट भी पॉजिटिव आया है। जॉनसन ने खुद को आइसोलेट कर लिया है, लेकिन महामारी से निपटने को वह वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से सरकार का नेतृत्व करते रहेंगे।

इससे पहले ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ के बेटे प्रिंस चार्ल्स का कोरोना वायरस टेस्ट भी पॉजिटिव आया था। वह स्कॉटलैंड में आइसोलेशन में रह रहे हैं। संक्रमण के खतरे को देखते हुए महारानी एलिजाबेथ भी राजमहल छोड़ चुकी हैं। ब्रिटेन के पीएम के सरकारी निवास 10 डाउनिंग स्ट्रीट के प्रवक्ता ने शुक्रवार को कहा, 'बोरिस जॉनसन में कोरोना संक्रमण के लक्षण देखे गए हैं। वह आइसोलेशन में हैं। इंग्लैंड के चीफ मेडिकल ऑफिसर प्रोफेसर क्रिस विटी की सलाह पर उनका टेस्ट कराया गया था जिसके बाद वह कोरोना पॉजिटिव निकले।'

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन अपनी पार्टनर कैरी सायमंडस के साथ। एपी

इस बीच, देश में लोगों को खाना पहुंचाने, शवों के अंतिम संस्कार और एंबुलेंस के परिचालन के लिए दमकलकर्मियों की मदद लेने का एलान किया गया है। ब्रिटेन में अब तक कोरोना से 578 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि करीब 12 हजार लोग संक्रमित हैं। ब्रिटेन में गुरुवार को लोगों ने अपने घरों के दरवाजे और बालकनी में खड़े होकर स्वास्थ्य कर्मियों के सम्मान में तालियां बजाईं।

3 और कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले हैं नोएडा में। इन सभी में संक्रमण का स्रोत लंदन से कंपनी में आया ऑडिटर ही है। इसी के साथ जिले में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या 17 पर पहुंच गई है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शनिवार 28 मार्च 2020

चतुर्थ

कूष्माण्डा

देवी आराधना के पर्व वासंतिक नवरात्र के चौथे दिन देवी के चतुर्थ स्वरूप कूष्मांडा का दर्शन-पूजन किया जाता है। जगदंबा के इस स्वरूप के पूजन में 'अर्द्ध मात्रा स्थिता नित्या यानुचार्या विशेषत, त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननीपरा' मंत्र की विशेष महत्ता मानी गई है। असुरों के अत्याचार से देव-ऋषियों को मुक्ति दिलाने के लिए देवी दुर्गा कूष्मांडा स्वरूप में अवतरित हुई। मान्यता है कि पुष्प, धूप, नैवेद्य और घृत दीप आदि से देवी सूक्त का पाठ करते हुए आराधना से कूष्मांडा देवी प्रसन्न होकर समस्त संतापों से मुक्ति दिलाती हैं।

गौरी दर्शन यात्रा : गौरी दर्शन यात्रा के क्रम में चौथे दिन श्रृंगार गौरी का दर्शन पूजन करना चाहिए।

आज का संदेश : देवी का स्वरूप दर्शाता है कि हर रात की सुबह होती है। धैर्य का दामन कभी न छोड़ें।

-पं. ऋषि द्विवेदी

दिल्ली छोड़कर न जाएं दूसरे राज्यों के लोग : केजरीवाल

एलान ▶ शनिवार से प्रतिदिन चार लाख गरीबों को खाना खिलाएगी दिल्ली सरकार

कहा-325 स्कूलों में की गई 500- 500 लोगों को खाना खिलाने की व्यवस्था

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि राजधानी में किसी भी व्यक्ति को भूखा नहीं सोने दिया जाएगा। दो लाख लोगों के भोजन की व्यवस्था कर दी गई है। इसे शनिवार को बढ़ाकर चार लाख कर दिया जाएगा। दिल्ली में रहने वाले सभी प्रदेशों के लोग हमारे अपने हैं और किसी को परेशानी नहीं होने देंगे, कोई भी दिल्ली छोड़कर न जाए।

दिल्ली सरकार ने कोरोना के प्रकोप को नियंत्रित करने के साथ ही लॉकडाउन से प्रभावित गरीब परिवारों को दो वक्त की रोटी मुहैया कराने के लिए शुक्रवार को कई महत्वपूर्ण फैसले लिए। मुख्यमत्री ने डिजिटल प्रेस वार्ता कर बताया कि दिल्ली में 224 रैन बसेरे हैं और 20 हजार लोगों को प्रतिदिन दिल्ली सरकार दोपहर और रात में खाना खिला रही थी। लेकिन यह व्यवस्था काफी कम पड़ रही थी। इसे बाद शुक्रवार से दिल्ली सरकार ने दो लाख लोगों तक सुबह शाम भोजन पहुंचाने की व्यवस्था की है। इसके लिए 325 स्कूलों में पांच-पांच सौ लोगों को खाना खिलाने की व्यवस्था की गई है। वहीं शनिवार से चार लाख लोगों को खाना खिलाने की व्यवस्था पूरी कर ली जाएगी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में रहने वाले गरीब तबके के लोगों को राशन दिया जा रहा है, लेकिन जिनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है। ऐसे लोगों को सरकार खाना बनाकर खिला रही है। कई स्थानों से खबर आ रही थी कि वहां लोग भूखे हैं, कई वीडियो भी सामने आए। इसके बाद अब 10 गुना ज्यादा भोजन की व्यवस्था सरकार ने की है, जिससे दो लाख लोगों को भोजन मिल सकेगा।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, बंगाल आदि के जितने लोग दिल्ली को छोड़ कर जा रहे हैं, उनसे मेरी हाथ जोड़ कर विनती है कि दिल्ली छोड़ कर आपको जाने की जरूरत नहीं है। आपके खाने का इंतजाम हम लोग कर रहे हैं, जो लोग बॉर्डर के पास पहुंच गए हैं, वे भी वापस आ जाएं।

कोरोना के 100 मरीजों के इलाज के लिए दिल्ली तैयार : केजरीवाल ने कहा-कोरोना के सौ मरीजों का प्रतिदिन इलाज करने की व्यवस्था सरकार ने कर ली है। केस यदि बहुत ज्यादा बढ़ते हैं, तो इसके लिए भी सरकार तैयार है। इसके लिए आइएलबीएल के प्रमुख डॉ. सरीन की अध्यक्षता में पांच डॉक्टरों की टीम बनाई गई थी। इस टीम ने पूरा प्लान बनाकर रिपोर्ट दे दी है। डॉ. सरीन की टीम ने तैयारियों को तीन स्टेज में बांटा है। एक, अगर प्रतिदिन 100 से कम केस आते हैं, तो क्या करना है, 500 आते हैं तो क्या करना है और प्रतिदिन 1000 आने पर क्या व्यवस्था करनी होगी। रिपोर्ट के मुताबिक फिलहाल 100 केस तक की तैयारी कर ली गई है।

डिजिटल प्रेसवार्ता को संबोधित करते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। दिल्ली सरकार

विधायक अपने इलाके में लोगों को खिलाएं खाना

केजरीवाल ने कहा कि उन्होंने अपने सभी विधायकों को बोला है कि वे अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र में समाज के लोगों के साथ मिलकर सुनिश्चित करें कि कोई भूखा न सोने पाए। इस दौरान सामाजिक दूरी बनी रहे, इसका अवश्य ध्यान रखना है। ऐसा न हो कि खाना तो खिला दें, लेकिन कोरोना वहीं से फैलना शुरू हो जाए। ऐसे में यह लॉकडाउन बेकार चला जाएगा। कई सारी सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं मदद के लिए साथ आई हैं। इस्कॉन, राधा स्वामी और गुरुद्वारा वाले बहुत मदद कर रहे हैं। यह सरकार की भी मदद कर रहे हैं और खुद भी खाने के कई केंद्र चला रहे हैं। इसके अलावा भी कई संस्थाएं मदद कर रही हैं।

आठ लाख लोगों के खातों में पहुंची पांच-पांच हजार रुपये पेंशन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली में कोरोना के संक्रमण से बचाव और राजधानी में मौजूदा हालात को लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को उपराज्यपाल अनिल बैजल के साथ बैठक की। बैठक में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन और सीनियर अधिकारी शामिल रहे। बैठक के बाद केजरीवाल ने डिजिटल प्रेस वार्ता कर बताया कि दिल्ली में हालात नियंत्रण में हैं। लेकिन, फिर भी हम हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठेंगे। केजरीवाल ने यह भी कहा कि मुसीबत की इस घड़ी में लोगों की सहूलियत के लिए आठ लाख लोगों के खातों में पांच-पांच हजार रुपये पेंशन पहुंच गई है। अप्रैल के पहले हफ्ते में पांच-पांच हजार की पेंशन और डाल दी जाएगी। इनमें पांच लाख बुजुर्ग पेंशनधारी शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय की तरफ से दिल्ली विश्वविद्यालय के 12 कॉलेजों के लिए फंड जारी कर दिया गया है।

रैन बसेरों में 600 लोगों के लिए सुविधा बढ़ाई

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना के प्रकोप को देखते हुए दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड (डूसिब) ने रैन बसेरों में 600 लोगों के लिए सुविधा और बढ़ा दी है। गाजीपुर में स्थित एक इमारत में अभी तक एक ही फ्लोर पर रैन बसेरा चल रहा था, लेकिन अब इस इमारत की चारों मंजिल रैन बसेरे के लिए निर्धारित कर दी गई हैं। यहां पहले 200 के करीब लोग रह रहे थे, मगर अब इसमें 800 के करीब लोग रह रहे हैं। इसमें कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो यहां काम धंधा करते थे और लॉकडाउन के चलते फंस गए हैं। डूसिब ने इन लोगों को आश्वस्त किया है कि ये लोग यहीं रहें उन्हें किसी तरह की परेशानी नही होने दी जाएगी। सरकार के आदेश के तहत यहां रह रहे लोगों में सोशल डिस्टेंसिंग का भी प्रमुखता से पालन किया जा रहा है।

डूसिब 35 और खोलेगा रैन बसेरे : बेघर लोगों के लिए दिल्ली शहरी आशय सुधार बोर्ड 35 और रैन बसेरे खोलेगा। कोरोना के चलते ये रैन बसेरे खोले जा रहे हैं।। इन्हें एक सप्ताह के अंदर तैयार कर देने का लक्ष्य है। माना जा रहा है इन रैन बसेरों में करीब 6 हजार लोगों के ठहरने की व्यवस्था होगी। अभी तक करीब 16 हजार लोग रेन बसेरों में रह रहे हैं।

कोरोना से जानकारी के लिए दस हेल्पलाइन नंबर जारी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के बारे में जानकारी लेने के लिए दिल्ली सरकार ने अब 10 हेल्पलाइन नंबर जारी कर दिए हैं, जो 24 घंटे काम करेंगे। इसके लिए 50 कर्मचारियों का स्टाफ लगाया गया है।

कोरोना को लेकर करीब 10 दिन पहले एक हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया था। लेकिन बड़ी संख्या में लोग इस नंबर पर कॉल कर रहे थे। तमाम लोगों की कॉल नही मिल रही थी। इसके बाद चार दिन पहले हेल्पलाइन में 3 फोन नंबर निर्धारित किए गए थे। अब ये फोन नंबर भी कम पड़ रहे थे। ये भी कम पड़े तो शुक्रवार से हेल्पलाइन के लिए 10 फोन नंबर निर्धारित कर दिए गए हैं।

कोरोना के बारे में जानकारी के लिए हेल्पलाइन के फोन नंबर

22391014	22307745
22301028	22307135
22302441	22307145
22307133	22300012
22304568	22300036

लोगों के मन से डर निकाल रही हेल्पलाइन

हेल्पलाइन पर फोन करने वालों में से अधिकतर लोग दहशत में दिखते हैं। ये लोग सवाल भी कोरोना वायरस के खतरे को लेकर पूछ रहे हैं। कई लोग तो यह भी पूछ रहे हैं कि इटली और ईरान जैसे हालात तो यहां नही होंगे। कुछ की जिज्ञासा होती है कि क्या घर में भी मास्क लगाना जरूरी है। हालांकि, अधिकतर लोग कोरोना के लक्षण और इससे बचाव को लेकर सवाल पूछ रहे हैं। कुछ ऐसे जागरूक लोग भी हैं, जो अपनी कॉलोनी में बाहर से आने वालों के बारे भी जानकारी दे रहे हैं। इनका मानना है कि ऐसा करके ये समाज के प्रति अपने फर्ज को निभा रहे हैं। हेल्पलाइन के स्टाफ ने कहा कि हम लोगों के मन से डर निकाल रहे हैं, उन्हें बता रहे हैं कि डरें नही, सावधान रहें।

सी-40 समूह के नेताओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग से केजरीवाल ने की बैठक

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के प्रकोप से सबक लेने के लिए शुक्रवार की शाम वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये शीर्ष शहरों के सी-40 समूह के नेताओं की बैठक हुई। इसमें दिल्ली और देश का प्रतिनिधित्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने किया। इसमें लॉस एंजिल्स के महापौर एरिक गार्सेटी, सियोल के वोन-सोन पार्क, पेरिस के ऐनी हिडाल्गो, मिलान के गुइसेप्पा साला, इस्तांबुल के एक्रेम इमामोग्लू और रोम के वर्जीनिया रागी शामिल थे। इस बैठक को केजरीवाल के अलावा लॉस एंजिल्स, सियोल, मिलान के मेयर और जकार्ता के गवर्नर के अलावा लंदन, जोहानिसबर्ग, मैड्रिड के मेयर ने संबोधित किया। इस दौरान कोरोना को रोकने के लिए भारत और दिल्ली की ओर से किए जा रहे प्रयास की दुनिया के कई नेताओं ने सराहना की।

सी-40 समूह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि 'भारत भाग्यशाली है कि कोरोना यहां देरी से पहुंचा। इससे अन्य देशों के अनुभव से सीखते हुए कोरोना पर नियंत्रण के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। यही नहीं दुनियाभर के जिन शहरों में कोरोना के केस मिले हैं। उनके साथ भी बचाव के अनुभवों को साझा कर रहे हैं। सरकार के सख्त कदमों की वजह से ही दिल्ली में अब तक 40 से कम मामले मिले हैं, जबकि पहला मामला 25 दिन पहले संज्ञान में आया था।

दिलशाद गार्डन के दो पॉकेट को किया गया सील

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- दोनों पॉकेट में आने-जाने के लिए एक ही गेट खोला गया है
- जिला प्रशासन ने पुलिस के साथ वालंटियर्स भी किए तैनात

दिलशाद गार्डन के जेएंडके और एल पॉकेट को जिला प्रशासन ने सील कर दिया है। यहां से आने-जाने वाले हर शख्स का पूरा रिकॉर्ड रखा जा रहा है। दोनों पॉकेट में आने-जाने के लिए एक ही गेट खोला गया है। इन पर पुलिस की तैनाती है। साथ ही जिला प्रशासन ने वालंटियर्स भी यहां 24 घंटे के लिए तैनात कर दिए हैं। बता दें कि सऊदी अरब से लौटीं कोरोना संक्रमित महिला एल पॉकेट में रहती हैं और उनका इलाज करने के कारण संक्रमित हुए मोहल्ला क्लीनिक के डॉक्टर जेएंडके पॉकेट में परिवार के साथ रहते हैं। महिला की दो बेटियां और डॉक्टर की पत्नी व बेटी भी संक्रमित हैं। ये सभी अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती हैं।

जिला स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के मुताबिक महिला आसपास के 74 लोगों के संपर्क में आई थी। वहीं डॉक्टर भी कई लोगों से मिले। ऐसे में इन दो पॉकेट पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बृहस्पतिवार को सीमापुरी के एसडीएम पंकज भटनागर ने आदेश जारी किया कि इन दोनों पॉकेट में आने-जाने के लिए ही एक रास्ता हो। इस पर पुलिस और सिविल डिफेंस वालंटियर्स तैनात रहेंगे। जिला प्रशासन ने एक पॉकेट में कुल नौ वालंटियर्स तैनात किए हैं। तीन-तीन वालंटियर्स आठ-आठ घंटे यहां तैनात रहेंगे। जिला प्रशासन का कहना है कि यह कोरोना वायरस के फैलाव रोकने के लिए नियंत्रण योजना (कंटेनमेंट प्लान) है, जिसे इन दोनों पॉकेटों में लागू किया गया है। यह योजना जिलाधिकारी संजीव कुमार के आदेश पर जारी किया गया है।

65 लोगों के खिलाफ और एफआइआर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : कोरोना के संक्रमण से बचाने के लिए लॉकडाउन के बावजूद बगैर जरूरी काम के घरों से बाहर निकलने वाले 65 लोगों के खिलाफ दिल्ली पुलिस ने सरकारी आदेश का पालन न करने की धारा के तहत एफआइआर दर्ज की है। शुक्रवार को लॉकडाउन के पांचवे दिन कम लोगों के खिलाफ एफआइआर दर्ज हुई।

दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल के मुताबिक लॉकडाउन के बावजूद घरों से बाहर निकलने पर 3,432 लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। इनमें बगैर जरूरी काम से बाहर निकलने वाले 263 लोगों के वाहनों को जब्त कर लिया गया। इसके अलावा दिल्ली पुलिस ने शुक्रवार को 4445 जरूरतमंद लोगों को कर्फ्यू पास जारी किया। कोरोना के संक्रमण को देखते हुए दिल्ली पुलिस लगातार लोगों से अपील कर रही है कि वे अपने-अपने घरों में कैद रहें। जांच में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को पूरा सहयोग करें।

दिल्ली पुलिस के डीसीपी और कांस्टेबल की तबीयत हुई खराब

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- विदेश से लौटी थी डीसीपी की बेटी, एयरपोर्ट पर जांच में नहीं मिले थे कोरोना के लक्षण
- डीसीपी और उनके स्टाफ के सदस्य आइसोलेशन में हैं

दिल्ली पुलिस के एक डीसीपी की बेटी के विदेश से लौटने के बाद आइसोलेशन में हैं। एक दिन पहले उनकी तबीयत खराब हो गई थी, जिस कारण उन्हें आइसोलेशन में रखा गया है। वहीं रोहिणी ट्रैफिक सर्किल में तैनात एक अन्य कांस्टेबल को पिछले एक सप्ताह से बुखार से पीड़ित होने के बाद गुरुवार को अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उनके नमूने लिए गए हैं और रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है।

विदेश से बेटी की वापसी के बाद डीसीपी वेस्ट और उनके स्टाफ के सदस्य आइसोलेशन में हैं। हालांकि, जब एयरपोर्ट पर उनकी बेटी की जांच की गई थी, तब तक कोई लक्षण नहीं थे। उसके बाद से वह ठीक महसूस नहीं कर रही थीं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया और नमूने लिए गए हैं। अभी रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। वहीं एक सप्ताह से बुखार के कारण कोरोना से प्रभावित होने के संदेह के चलते यातायात पुलिस के कांस्टेबल सुकेंद्र के रक्त के नमूने लिए गए हैं। उनकी रिपोर्ट 48 घंटे बाद आएगी।

इस बीच दिल्ली के पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने 25 से 33 फीसद पुलिस बल को रोटेशन के आधार पर आइसोलेशन में जाने को कहा है जिससे 24 घंटे काम करने वाले पुलिस अधिकारी घर में आइसोलेट और क्वारंटाइन में रहें। पुलिस आयुक्त की तरफ से जारी किए गए आदेश में यह भी कहा गया है कि वरीयता उन लोगों को दी जानी चाहिए जो 50 वर्ष से अधिक उम्र के हैं या जिनकी कोई मेडिकल हिस्ट्री है।

दिल्ली में कोरोना के एक नए मामले की पुष्टि

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली में कोरोना वायरस के संक्रमण का एक नया मामला सामने आया है। 33 वर्षीय पीड़ित मरीज को एम्स के हरियाणा के झज्जर स्थित राष्ट्रीय कैंसर संस्थान (एनसीआइ) में भर्ती किया गया है। वह उत्तम नगर के रहने वाले हैं। वह हाल ही में फिलीपींस से लौटे हैं। इसके बाद एयरपोर्ट से उन्हें सरकारी क्वारंटाइन में रखा गया था। क्वारंटाइन में तबीयत खराब होने के बाद उन्हें एम्स के एनसीआइ में भर्ती कराया गया है।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार दिल्ली में कोरोना के अब तक 40 मामले आ चुके हैं। इनमें से 30 विदेशों से वापस आए हैं। जबकि 10 लोग यहां कोरोना पीड़ितों के संपर्क में आने से बीमार पड़े। 3सफदरजंग अस्पताल में दिल्ली के 14, लोकनायक में 6, राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में 7, जीटीबी में 2, डीडीयू में 2, मेदांता में दिल्ली का एक व एम्स एनसीआइ में एक मरीज भर्ती हैं। इसके अलावा सात अस्पतालों में 151 संदिग्ध मरीज भर्ती हैं।

किसी भी मस्जिद में नहीं हुई जुमे की नमाज

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना के कहर के चलते जामा मस्जिद, फतेहपुरी व कश्मीरी गेट के शिया जामा मस्जिद समेत पुरानी दिल्ली की अन्य मस्जिदों में शुक्रवार को जुमे की नमाज अदा नहीं की गई। वर्ष 1975 में लगे आपातकाल के बाद यह दूसरा मौका था जब लोगों ने शुक्रवार को मस्जिदों की बजाय घरों में जुमे की जगह जोहर (दोपहर की नमाज) की नमाज पढ़ी। बता दें कि जुमे की नमाज तो मस्जिद में ही पढ़ी जा सकती है, जबकि जोहर की नमाज घर में पढ़ी जा सकती है।

शाही जामा मस्जिद और फतेहपुरी मस्जिद में सिर्फ शाही इमाम ने मुअज्जिन और खादिम के साथ नमाज पढ़ी। आम व्यक्तियों से मस्जिदों को दूर रखा गया। एहतियात के तौर पर प्रमुख मस्जिदों के बाहर पुलिस के साथ ही अर्द्धसैनिक बल के जवान तैनात रहे। वैसे, लॉकडाउन को देखते हुए कई मस्जिदों में आम लोगों के लिए नमाज भी बंद कर दिए गए हैं। वहीं, मस्जिदों से भी लोगों से अपील की जा रही है कि वह मस्जिदों में न आएं बल्कि घरों में ही धार्मिक अनुष्ठान पूरा करें। हालांकि कुछ लोग तब भी नहीं मान रहे हैं। ऐसे में अब जिला प्रशासन से तालमेल कर मस्जिदों के दरवाजे आम लोगों के लिए बंद किए जा रहे हैं। मटिया महल, तुर्कमान गेट, बल्लीमारान, कश्मीरी गेट, चावड़ी बाजार व दरियागंज समेत अन्य इलाकों में लोगों ने घरों में ही नमाज पढ़ी और इसके बाद कोरोना वायरस से निजात पाने के लिए खुदा से दुआ भी मांगी।

फतेहपुरी मस्जिद के शाही इमाम मुफ्ती मुकर्रम अहमद ने बताया कि जुहर की नमाज का सवाब (पुण्य) भी जुमे की नमाज के बराबर मिलता है। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि यह वायरस एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलता है, ऐसे में लोग घरों में रहकर ही खुदा से पूरे विश्व में अमन व सलामती की दुआ करें। उन्होंने बताया कि आपातकाल के समय भी लोगों ने अपने घरों में रहकर ही नमाज पढ़ी थी, इसके अलावा कहीं पर कर्फ्यू लगता है तो वहां की मस्जिदों में भी नमाज नहीं होती। जामा मस्जिद के इमाम सैयद अहमद बुखारी ने कहा कि सरकार और स्वास्थ्य विभाग कोरोना को लेकर जो दिशा निर्देश दे रही है उसका लोग सख्ती से पालन करें।

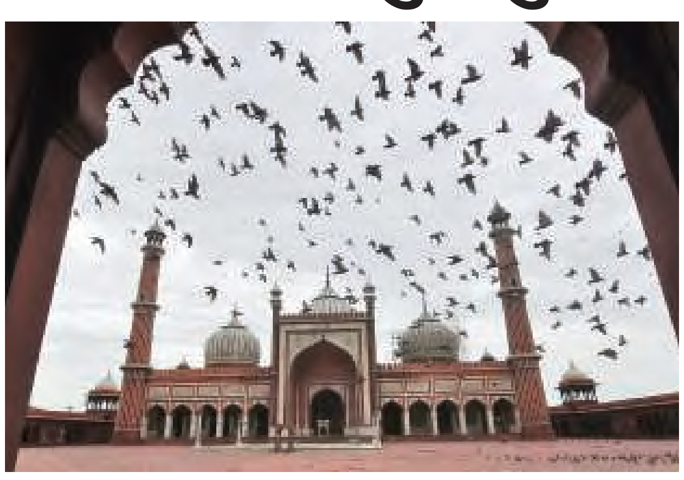

कोरोना वायरस के चलते हुए देशभर में लॉकडाउन के कारण जामा मस्जिद में लोगों ने शुक्रवार को नमाज नहीं पढ़ी। इस दौरान कुछ इस तरह मस्जिद का परिसर खाली पड़ा नजर आया। ध्रुव कुमार

हौसला बढ़ाने को न्यायाधीश ने बच्चों संग गाया गीत

विनीत त्रिपाठी, नई दिल्ली

- प्रांजल कैशियों वाद्ययंत्र की धुन पर गाना गाकर लोगों को संयम को दिया संदेश
- दिल्ली हाई कोर्ट के मध्यस्थता केंद्र में अतिरिक्त समन्वयक पद पर हैं कार्यरत

कोरोना वायरस के खौफ के बीच इससे लड़ने की हिम्मत देने और लोगों की हौसला अफजाई करने वाली खबरें लगातार सामने आ रही हैं। इसी कड़ी में अपने बच्चों के साथ आम लोगों का उत्साह बढ़ाने के लिए दिल्ली हाई कोर्ट के मध्यस्थता केंद्र में प्रतिनियुक्ति पर अतिरिक्त समन्वयक पद पर कार्यरत न्यायाधीश प्रांजल अनेजा ने एक वीडियो तैयार किया है। इसमें वह अपनी बेटी अमृता व बेटे प्रियांश के साथ गाना गाते नजर आ रहे हैं।

प्रांजल कैशियों वाद्ययंत्र की धुन पर गाना गाकर लोगों को संयम और साहस के साथ कोरोना से लड़ने का संदेश दे रहे हैं। फोन पर हुई बातचीत में प्रांजल ने दैनिक जागरण को बताया कि देश में कोई निजी क्षेत्र में काम करता है तो कोई सार्वजनिक क्षेत्र में। अभी भी सरकारी कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों की मदद कर रहे हैं। अस्पताल में डॉक्टर लोगों के लिए भगवान बनकर उनकी जान बचाने की कोशिश कर रहे हैं तो पुलिस समेत विभिन्न विभाग के कर्मचारी भी लोगों को जरूरी सामान पहुंचा रहे हैं। प्रांजल कहते हैं कि हमें इस समय हिम्मत से काम लेना है। उनका कहना है कि समाज और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखे तो अंत में हिम्मत ही हमें विजय दिलाती है। सरकार कितनी भी योजना तैयार कर ले, लेकर अगर हम हिम्मत से अंत तक नहीं लड़े तो जीत नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि यह समय बहुत धैर्य बनाए रखने का है। साथ ही घर में रहकर कुछ ऐसा भी किया जा सकता है, ताकि दूसरों की हिम्मत बढ़े।

उन्होंने कहा कि हमारे परिवार का मकसद सकारात्मक रूप से लोगों में संदेश पहुंचाने के साथ ही अपने घर में अच्छा माहौल बनाए रखना है। बच्चों को भी पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों में शामिल करने का मौका मिला है। उन्होंने कहा कि वर्चुअल दुनिया के दौर में अपनों की खैरियत के साथ ही अन्य लोगों की हौसला अफजाई की जा सकती है।

प्रांजल कहते हैं कि हर तरफ नकारात्मक खबरें चल रही हैं कि इस देश में इतने मर गए, इतने हजार कोरोना से प्रभावित हैं। ऐसे में बचपन में दूरदर्शन पर आने वाला एक गीत मेरे जहन में आया, जिसे मैं बचपन में अक्सर गुनगुनाया करता था। घर में मैंने बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए इसे गाने का मन बनाया। इसमें मेरे दोनों बच्चों ने भी साथ दिया। हम तीनों ने मिलकर गाना गाया और मेरी पत्नी ने यह वीडियो बनाया है। मैं इस वीडियो के माध्यम से लोगों को संदेश देना चाहता हूं कि लोग हिम्मत न हारे और इस लड़ाई को अंत तक लड़ें।

यह है गीत के बोल

ये वक्त न ठहरा है, हां हां ये वक्त न ठहरेगा हो हो.... क्योंकि ये गुजर जाएगा, घबराना कैसा। हिम्मत से काम लेंगे, घबराना कैसा।

जज्बा

दिल्ली पुलिस जहां एक तरफ लॉकडाउन का सख्ती से पालन कराने के लिए सीमाओं और सड़कों पर तैनात है, वहीं दूसरी ओर जरूरतमंदों को हर संभव मदद भी पहुंचा रही है

एक तरफ संक्रमण, दूसरी ओर भूख मिटा रही पुलिस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस एक तरफ कोरोना वायरस के संक्रमण को खत्म करने तो दूसरी ओर लोगों की भूख को मिटाने का प्रयास कर रही है। दिल्ली पुलिस जहां एक तरफ लॉकडाउन का सख्ती से पालन कराने के लिए सीमाओं और सड़कों पर तैनात है, वहीं दूसरी ओर जरूरतमंदों को हर संभव मदद भी पहुंचा रही है। एक तरफ से जहां पुलिस लोगों को घरों से निकलने से रोक रही है, वहीं दूसरी ओर लोगों को खाना, दूध और दवा भी उपलब्ध करा रही है। शुक्रवार को दिल्ली पुलिस ने राजधानी के कई इलाकों में लोगों को खाना, दूध और दवा उपलब्ध कराई, वहीं सीमाओं पर जांच को और बढ़ा दिया है। किसी भी व्यक्ति को बिना कागजात जांच के दिल्ली की सीमा में प्रवेश नहीं दिया जा रहा है।

नजफगढ़ में पुलिस ने लोगों को दूध के पैकेट उपलब्ध कराए, वहीं चिकित्सकों की टीम के साथ बीमार लोगों को दवा भी वितरित की। कालिंदी कुंज सीमा पर सड़क किनारे और झुग्गियों में रहने वाले लोगों को खाने के पैकेट दिए गए। इस दौरान सबसे अधिक ध्यान इस बात का रखा गया कि लोग एक जगह एकत्र न हो। खाने दिए जाने के समय पहले सैनिटाइजर से लोगों के हाथ साफ कराए गए, इसके बाद उन्हें खाने के पैकेट दिए गए।

दिल्ली पुलिस आपके लिए आपके साथ सदैव : दिल्ली पुलिस आपके लिए आपके साथ सदैव.... पुलिस की इस टैगलाइन के हर शब्द का लॉकडाउन के दौरान लोगों को मतलब समझ में आ रहा है। पुलिस लोगों की हर तरीके से मदद कर रही है। लॉकडाउन के कारण पहाड़गंज, करोलबाग, नबी करीम व महिपालपुर आदि जगह के होटलों में फंसे लोगों व मुखर्जी नगर, मौरिस नगर, तिमारपुर, बुरारी आदि इलाकों में पीजी या किराये के मकानों में फंसे छात्र-छात्राओं की दिल्ली पुलिस हर संभव सहायता कर रही है। पुलिस इनकी खाने-पीने के सामान से लेकर, दूध, फल, दवा के अलावा फोन भी रिचार्ज कराने में मदद कर रही है।

पैसे नहीं, खाना दें : पुलिस जरूरतमंदों को खाने पीने का सामान विभिन्न गैर सरकारी संगठनों व दिल्ली पुलिस मेस के जरिए मुहैया करा रही है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि झुग्गियों व फुटपाथ पर रहने वाले लोगों को शुरुआती दिनों में लोगों ने पैसे भी बांटे। अब वे पैसे लेने से इन्कार कर रहे हैं और खाने-पीने का सामान मांग रहे हैं।

पलायन कर रहे लोगों को भोजन मुहैया करा रही पुलिस : वहीं दक्षिणी दिल्ली में भी पुलिस शिद्दत से लोगों की सेवा में जुटी है। दक्षिणी दिल्ली में पुलिस ने तमाम जगह गरीबों को खाने के पैकेट व राशन बांटा। इसके अलावा दिल्ली से पलायन कर रहे लोगों को भी खाना बांटा गया। कालिंदी कुंज बैराज से होते हुए यूपी व बिहार जाने वाले लोगों को सरिता विहार सर्किल के ट्रैफिक पुलिसकर्मियों ने खाना बांटा।

लॉकडाउन के दौरान गुरु गोविंद सिंह अस्पताल, ख्याला बॉर्डर के पास भूखों को भोजन बांटते पुलिसकर्मी। सौजन्य : दिल्ली पुलिस

बचाव में कारगर होगा एम्स का वीडियो

रणविजय सिंह, नई दिल्ली

दुनियाभर में चल रहे शोध के बावजूद वैश्विक महामारी कोरोना की कोई दवा खोजी नहीं जा सकी है और संक्रमण से बचाव के विकल्पों पर ध्यान केंद्रित है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के निर्देश पर एम्स के डॉक्टर छोटे-छोटे वीडियो और ऑडियो तैयार कर रहे हैं, जिसमें कोरोना से बचाव के उपाय बताए जा रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि ये वीडियो रामबाण साबित होंगे।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) का कहना है कि जल्द ही ये वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किए जाएंगे ताकि लोगों तक कोरोना से बचाव की सही जानकारी पहुंच सके। एम्स की वेबसाइट पर भी इसे पोस्ट किया जाएगा। इससे सोशल मीडिया पर चल रही भ्रामक सूचनाओं से निपटने में भी मदद मिलेगी। सेंटर फॉर मेडिकल एजुकेशन, ट्रेनिंग एंड रिसर्च (सीमेट) को वीडियो तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है।

एम्स की प्रवक्ता डॉ. आरती विज ने कहा कि इसके तीन मकसद हैं। पहला-सही सूचना उपलब्ध कराना, दूसरा लोगों को शिक्षित करना व तीसरा संचार। एक-एक मिनट के करीब 15 वीडियो में पल्मोनरी, क्रिटिकल केयर, पीडियाट्रिक, इमरजेंसी, जेरियाट्रिक, आहारविद सहित सभी संबंधित विभाग के क्लीनिकल विशेषज्ञ अहम जानकारी देंगे। आठ वीडियो तैयार भी हो चुके हैं।

शारीरिक दूरी और हाथ धोने का तरीका भी बताएंगे : वीडियो के माध्यम से डॉक्टर शारीरिक दूरी, हाथ धोने व सैनिटाइजर के सही इस्तेमाल की जानकारी देंगे। घर में सफाई के बारे में भी बताया जाएगा क्योंकि घर का फर्श छूने के बाद यदि चेहरे पर हाथ लगाए तो उससे कोरोना वायरस का संक्रमण हो सकता है। कोरोना का संक्रमण खांसी व छींक के कारण निकले ड्रॉपलेट में मौजूद वायरस से फैलता है। इसलिए डॉक्टर बताएंगे कि खांसते समय मुंह पर टिश्यू पेपर या रूमाल रखें। यदि ये उपलब्ध न हो तो खांसी आने पर बाजू के कमीज से चेहरे को ढकना चाहिए।

18 जनवरी से 23 मार्च तक करीब 15 लाख यात्री अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से भारत पहुंचे, लेकिन अभी तक जितने लोगों की निगरानी हुई है उसकी संख्या और कुल आने वालों की संख्या में काफी अंतर है।

ऑक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति को सरकार ने उठाए कदम

▸ पेट्रोलियम एंड एक्सप्लोसिव सेफ्टी ऑर्गनाइजेशन ने सभी कार्यालयों को जारी किए निर्देश

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार ने शुक्रवार को बताया कि अस्पतालों को ऑक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति के लिए कई कदम उठाए गए हैं। ये कदम वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत आने वाले पेट्रोलियम एंड एक्सप्लोसिव सेफ्टी ऑर्गनाइजेशन (पेसो) ने उठाए हैं।

पेसो ने लॉकडाउन की वजह से पेट्रोलियम, एक्सप्लोसिव, फायरवर्क्स और इंडस्ट्रियल गैस कंपनियों के समक्ष आ रही मुश्किलों को हल करने के लिए भी कदम उठाए हैं। मंत्रालय ने एक बयान जारी कर कहा, 'पेसो मुख्यालय ने अपने सभी कार्यालयों को निर्देश जारी कर मेडिकल ऑक्सीजन की कमी दूर करने और उसके परिवहन के लिए तत्काल लाइसेंस सुनिश्चित करने के लिए कहा है।' 25 मार्च को पेसो ने सभी राज्यों के प्रमुख सचिवों (गृह) को एडवाइजरी जारी कर उनसे मेडिकल ऑक्सीजन और नाइट्रस ऑक्साइड के निर्बाध परिवहन और उत्पादन की अनुमति देने का अनुरोध किया है। इसमें कहा गया था, 'ऑक्सीजन एवं अन्य गैसों के परिवहन के लिए 31 मार्च, 2020 को खत्म हो रही लाइसेंस की वैधता 30 जून, 2020 तक बढ़ा दी गई है। एक्सप्लोसिव और फायरवर्क्स के भंडारण, परिवहन, बिक्री, उपयोग एवं उत्पादन के लिए 31 मार्च, 2020 को खत्म हो रही लाइसेंस की वैधता 30 सितंबर तक बढ़ा दी गई है।' इसके अलावा लाइसेंसों के विलंब से नवीनीकरण के लिए लिया जाने वाला शुल्क भी नहीं लिया जाएगा।

कंप्रेस्टड ऑक्सीजन, सीएनजी, एलपीजी और अन्य गैसों के भंडारण के लिए इस्तेमाल होने वाले जिन सिलेंडरों की विधिक हाइड्रो टेस्टिंग 31 मार्च को निर्धारित है, अब उनके लिए यह तिथि 30 जून मानी जाएगी।

इसी तरह ऑक्सीजन, एलपीजी और अन्य गैसों के भंडारण एवं परिवहन के लिए इस्तेमाल होने वाले जिन प्रेशर वेसेल्स की विधिक सेफ्टी वाल्व और हाइड्रो टेस्टिंग 15 मार्च से 30 जून निर्धारित थी, अब उनके लिए यह तिथि 30 जून मानी जाएगी।

चिकित्सा राहत के वैकल्पिक उपायों को अपनाएं : कोविंद

▸ राष्ट्रपति ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये ने सभी राज्यपालों व उपराज्यपालों की बैठक ली

▸ निजी चिकित्सकों और गैर-सरकारी संगठनों को भी इस मुहिम में शामिल करने का सुझाव

नई दिल्ली, एजेंसियां : कोरोना संकट के चलते राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने एक अप्रत्याशित कदम उठाते हुए देश के सभी राज्यपालों और उपराज्यपालों चिकित्सा राहत के वैकल्पिक उपायों के लिए सभी प्रयास करने को कहा है। उन्होंने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में खाद्यान्न वितरण के उपायों पर भी विचार करने को कहा है। उन्होंने इस प्रक्रिया में निजी चिकित्सकों और गैर सरकारी संगठनों को भी शामिल करने का सुझाव दिया है।

शुक्रवार को तीन घंटे चली वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए राष्ट्रपति कोविंद ने मेडिकल विश्वविद्यालयों, रेडक्रॉस सोसाइटी, राहत और चिकित्सा के क्षेत्र में काम करने वाले एनजीओ को भी इस मुहिम से जोड़ने की सलाह दी है। इस बैठक में कम से कम 15 राज्यपालों समेत उपराज्यपाल भी शामिल हुए। केरल के राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान ने बताया कि विभिन्न निजी संस्थानों से जुड़े 18,000 डॉक्टर से इस वैश्विक महामारी से निपटने में सरकार की मदद कर रहे हैं। कुछ सेवानिवृत्त डॉक्टर भी राज्य सरकारों की मदद कर रहे हैं। राज्यपाल खान ने इस जानलेवा संक्रमण से निपटने में शारीरिक दूरी की अहमियत पर बल देते हुए शायर बशीर बद्र का एक शेर पढ़ते हुए कहा, 'यूंही बेहिसाब न फिरा करो, कोई शाम घर में रहा करो।'

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गुरुवार को राज्यपालों, उपराज्यपालों और राज्यों के प्रशासनिक अधिकारियों से कोरोना वायरस के मुद्दे पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा की। एएनआइ

कोशियारी बोले, महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में शारीरिक दूरी में मुश्किल : बैठक में मध्य प्रदेश के राज्यपाल लालजी टंडन ने राष्ट्रपति को बताया कि मध्य प्रदेश में हालात सामान्य हैं। हालांकि इंदौर में जरूर थोड़ी समस्या है। लेकिन हालात को सामान्य बनाने के लिए सरकार पूरे प्रयास कर रही है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार कोरोना की समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित महाराष्ट्र को इस बैठक में सर्वोच्च वरीयता पर रखा गया।

महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोशियारी का कहना था कि शहरी क्षेत्रों में शारीरिक दूरी का पूरी तरह से पालन हो रह है। लेकिन ग्रामीण इलाकों में इसके लिए सरकारी अमले और विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ताओं को युद्धस्तर पर इसके लिए प्रयास करने पड़ रहे हैं। ग्रामीणों को समझाना पड़ रहा है कि वह दूर-दूर रहें।

बैजल ने कहा, नियमित बैठकों से रख रहे नजर : दिल्ली के उपराज्यपाल अनिज बैजल ने बताया कि वह प्रतिदिन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और वरिष्ठ राजनियकों के साथ हालात पर नजर रखने के लिए बैठक करते हैं। इन बैठकों में जिला कलेक्टरों के साथ ही पुलिस उपायुक्त समेत वरिष्ठ पुलिस अफसर मौजूद रहते हैं। एलजी ने आश्वासन दिया कि मेडिकल स्टोरों और राशन की दुकानों को सातों दिन चौबीसों घंटे खोले जाने की इजाजत दी गई है।

रेडक्रॉस के आठ हजार कार्यकर्ता करेंगे मदद : वेंकैया

बैठक में शामिल उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने सुझाव दिया कि शारीरिक दूरी पर सोशल मीडिया के जरिए जागरूकता अभियान चलाने के लिए कलाकारों, फिल्मी सितारों की मदद ली जा सकती है। अगले दो हफ्ते लॉकडाउन के दौरान निजी क्षेत्र की भी मदद ली जानी चाहिए। तीन घंटे की बैठक में फैसला लिया गया कि भारत में रेडक्रॉस सोसाइटी के आठ हजार प्रशिक्षित स्वयंसेवकों को राज्यों के स्वास्थ्य अधिकारियों की मदद में तैनात किया जाएगा ताकि संक्रमित लोगों को समुचित इलाज और देखभाल मिल सके। राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके मंत्रिमंडल के प्रयासों की भी सराहना की है।

न्यूज गैलरी

आठ राज्यों को आपदा राहत के लिए 5,751 करोड़ मंजूर

नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष बाढ़, भूस्खलन, तूफान और सूखे से प्रभावित रहे केरल, महाराष्ट्र, बिहार, नगालैंड, ओडिशा, राजस्थान, बंगाल और कर्नाटक के लिए 5,751.27 करोड़ रुपये की मंजूरी दी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय समिति ने शुक्रवार को अतिरिक्त केंद्रीय सहायता के रूप में मंजूरी दी। 2019 में बाढ़, भूस्खलन, बुलबुल तूफान और सूखे से प्रभावित राज्यों को यह मदद दी गई है। कर्नाटक को 2018-19 के दौरान सूखा (रबी) के लिए सहायता दी गई है। (प्रेट्र)

केंद्र ने मनरेगा मजदूरों के लिए जारी किए 4,431 करोड़

नई दिल्ली : केंद्र ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी कानून (मनरेगा) के अंतर्गत काम करने वाले मजदूरों के लिए 4,431 करोड़ रुपये की राशि जारी की है। साथ ही सरकार ने 10 अप्रैल तक मनरेगा के तहत लंबित सभी मजदूरी के भुगतान का फैसला किया है। ध्यान रहे सरकार को कुल 11,499 करोड़ का भुगतान करना है, जिनमें 4,431 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं। एक दिन पहले ही सरकार ने दैनिक मजदूरी 182 से बढ़ाकर 202 रुपये करने की घोषणा की है। अफसरों ने बताया कि भुगतान सीधे मजदूरों के बैंक खातों में जाएगा। (प्रेट्र)

ईरान में फंसे तीर्थयात्रियों के मामले में कोर्ट ने मांगा जवाब

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर ईरान के कोम में फंसे 850 तीर्थयात्रियों को तत्काल भारत लाने की मांग करने वाली याचिका पर जवाब मांगा है। मुस्तफा एमएच नामक व्यक्ति ने वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े के माध्यम से यह याचिका दायर की है। यह याचिका ऐसे समय दायर की गई है, जब कोरोना के प्रसार को रोकने के लिए लगाए गए लॉकडाउन के मद्देनजर 14 अप्रैल तक सभी अंतरराष्ट्रीय व घरेलू विमानों का परिचालन बंद है। (एएनआइ)

तीन माह की पेंशन एडवांस में देने में फैसला

नई दिल्ली : केंद्र सरकार करीब तीन करोड़ गरीब विधवाओं, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों को तीन महीने की पेंशन एडवांस में देगी। यह धनराशि अप्रैल के पहले सप्ताह में उनके खातों में पहुंच जाएगी। राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एनएसएपी) के तहत यह मासिक पेंशन प्रदान की जाती है। अधिकारियों ने बताया कि एनएसएपी केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत आता है। इस कार्यक्रम के देश में 2.98 लाभार्थी हैं और उनकी पेंशन सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जाती है।

कोरोना को हराने के लिए सेना का ऑपरेशन नमस्ते

बढ़ाया हौसला ▸ जवान सुरक्षित रहें, हम लोग वायरस से जंग जरूर जीतेंगे : सेना प्रमुख

जनरल नरवाने ने जवानों को उनके परिवार की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त भी किया

नई दिल्ली, एजेंसियां : कोरोना के खिलाफ जंग में सरकार को हरसंभव सहयोग देने और अपने जवानों की सुरक्षा के लिए थल सेना अध्यक्ष मनोज मुकुंद नरवाने ने आपरेशन ने ऑपरेशन नमस्ते की शुरुआत की। सीमा पर तैनात अपने अफसरों व जवानों को आश्वस्त करते हुए सेनाध्यक्ष ने कहा कि उनके परिवार वालों की सुरक्षा के लिए सेना विशेष ध्यान दे रही है। हम लोग यकीनन ऑपरेशन नमस्ते में विजय प्राप्त करेंगे।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा सबसे पहली बात तो यह कि हमारे जवानों को कोरोना वायरस से सुरक्षित रहना होगा। हम सुरक्षित रहेंगे तभी इस बीमारी के खिलाफ जंग में सरकार का साथ दे पाएंगे। जनरल ने कहा कि मैं सीमा पर तैनात हर जवान को भरोसा देता हूं कि उनके परिवारों की सुरक्षा के लिए विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। हम लोग अपने अभियान 'ऑपरेशन नमस्ते' में जरूर कामयाब होंगे।

मनोज मुकुंद नरवाने फाइल फोटो

जनरल नरवाने ने कहा कि कोरोना वायरस से उत्पन्न संकट से भारत ही नहीं सारी दुनिया जूझ रही है। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार ने कुछ विशेष कदम उठाये हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस जंग में सरकार व नागरिक प्रशासन का सहयोग करें।

उन्होंने कहा कि सेना का मुखिया होने के नाते मेरी जिम्मेदारी है मेरे जवान सुरक्षित रहें। इसके लिए हमें इस बीमारी से बचना होगा। जब हम सुरक्षित होंगे तभी हम अपने कर्तव्य का पालन कर पायेंगे। नियंत्रण रेखा व वास्तविक सीमा रेखा पर तैनात अपने जवानों व अफसरों के बारे में उन्होंने कहा कि सामरिक कारणों से उनका वहां एक साथ रहना जरूरी है। टैंक दस्ते का उदाहरण देते उन्होंने कहा कि उन्हें भी एक साथ रहना जरूरी है। ऐसे में हम लोगों को चाकचौबंद रहना और भी जरूरी हो जाता है। पिछले कुछ हफ्तों से इस वारे में बहुत सी एडवाइजरी जारी हो चुकी हैं। हमें इनका पालन करना जरूरी है।

जनरल नरवाने ने कहा कि सेना की ऐसी इकाइयां जो अभी किसी अभियान में शामिल नहीं हैं उन्हें सरकार के सभी निर्देश का पालन करना होगा। मैं अपने सभी जवानों, पूर्व सैनिकों व वीर नारियों से कहना चाहता हूं कि वे सब अपना खयाल रखें हैं। अगर किसी को मदद की जरूरत हो तो वे बेझिझक निकटवर्ती सैन्य छावनी में संपर्क कर सकते हैं। हमने इसके लिए हर कमांड में हेल्पलाइन भी स्थापित की हैं। अंत में मैं सबसे फिर कहूंगा कि वे अपना ख्याल रखें। आपकी सुरक्षा मेरी पहली जिम्मेदारी है।

छावनी बोर्ड ने आपात स्थिति से निपटने के लिए कदम उठाए

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोविड-19 संक्रमण पर काबू पाने के लिए लागू लॉकडाउन को ध्यान में रखकर देश भर के छावनी बोर्डों ने कई कदम उठाए हैं। ऐसे कदमों में किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए अस्पतालों में बेड, निर्बाध बिजली और निवासियों को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए टास्क फोर्स गठित करना आदि शामिल हैं। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। विज्ञप्ति में कहा गया है, 'सभी छावनी बोर्डों को निर्देश जारी किया जा चुका है। उनसे किसी भी आपात स्थिति के लिए अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों और गेस्ट हाउसों में बेड की पहचान करने को कहा गया है।' देश के 19 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 62 छावनी बोर्ड हैं। रक्षा मंत्रालय ने उल्लेख किया है कि छावनी बोर्डों के प्रेसिडेंट और सीईओ अपने क्षेत्र में नागरिक अधिकारियों से संपर्क बनाए हुए हैं।

सार्क देश मिलकर लड़ेंगे, भारत का ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का प्रस्ताव

▸ वायरस के प्रसार को रोकने के लिए अपनी विशेषज्ञता को साझा करना है मकसद

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत ने सभी दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) देशों को संयुक्त रूप से कोरोना वायरस के प्रसार से निपटने के लिए अपनी विशेषज्ञता और सर्वोत्तम कार्यो को साझा करने के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की स्थापना करने का प्रस्ताव दिया है।

उल्लेखनीय है कि भारत ने गत गुरुवार को सार्क के वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारियों की एक वीडियो कांफ्रेंस में प्रस्ताव रखा है। सार्क एक क्षेत्रीय समूह है जिसमें भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं। 15 मार्च को सार्क देशों के नेताओं के साथ वीडियो कांफ्रेंस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुझाव दिया कि सदस्य राष्ट्रों के स्वास्थ्य पेशेवर संयुक्त रूप से कोरोना के खिलाफ लड़ने के लिए एक साथ आ सकते हैं।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के प्रस्ताव की जानकारी देते हुए विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा, 'भारत ने सभी सार्क देशों को संयुक्त रूप से कोरोना की महामारी से निपटने के लिए सूचना, ज्ञान, विशेषज्ञता और सर्वोत्तम प्रैक्टिस को साझा करने और आदान-प्रदान करने के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बनाने का प्रस्ताव रखा है। यह बताया गया कि मंच के निर्माण में पहले ही काफी काम हो चुका है, जो आपातकालीन प्रतिक्रिया कर्मियों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों पर आगे चर्चा लिए एक बहुउद्देशीय वाहन के रूप में भी काम कर सकता है।'

बयान में कहा गया है कि भारतीय पक्ष ने इस बारे में एक प्रेजेंटेशन भी दिया जिसमें देश में इस रोग के प्रति सतर्कता, संक्रमित लोगों के संपर्क में आए लोगों की पहचान, यात्रा संबंधी प्रतिबंध, बचाव कार्य, खतरे का मूल्यांकन, मरीज का नैदानिक प्रबंधन, उपचार के विकल्प आदि शामिल हैं।

विदेश से आए एक-एक यात्री का पता लगाने का निर्देश

सख्ती शुरू

▸ कैबिनेट सचिव राजीव गौबा सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों को पत्र लिखा

▸ दो माह में देश में पहुंचे 15 लाख हवाई यात्री, लेकिन सबका नहीं लग रहा पता

नई दिल्ली, प्रेट्र : कैबिनेट सचिव राजीव गौबा ने राज्य सरकारों से विदेश से आने वाले सभी लोगों का पता लगाकर उनकी निगरानी करने को कहा है। उन्होंने बताया कि 18 जनवरी से 23 मार्च के बीच करीब 15 लाख लोग विदेश से भारत पहुंचे। लेकिन अभी तक जितने लोग निगरानी में हैं उनकी संख्या बहुत कम है।

सभी राज्यों के मुख्य सचिवों व केंद्र शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को लिखे पत्र में गौबा ने कहा कि विदेश से आने वाले लोगों की वास्तविक संख्या और जिनकी निगरानी हो रही उनकी संख्या में भारी अंतर है। यह अंतर हमारी चिंता बढ़ा रहा है। अभी तक जितने लोग कोरोना पाजिटिव पाए गए हैं उनमें ज्यादातर हाल ही में विदेश से लौटे हैं। अगर हम लोग विदेश से लौटे सभी लोगों को निगरानी दायरे में नहीं ले पाए तो कोरोना के खिलाफ हमारी लड़ाई संकट में पड़ जाएगी।

उन्होंने कहा कि जैसा कि आप जानते हैं हम लोग सभी एयरपोर्ट पर 18 जनवरी से विदेश से आने वाले यात्रियों की स्क्रीनिंग कर रहे हैं। 23 मार्च तक करीब 15 लाख यात्री अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से भारत पहुंचे। लेकिन अभी तक जितने लोगों की निगरानी होने की जानकारी मिली है उसकी संख्या व कुल आने वालों की संख्या में अंतर है।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने इनकी मॉनिटरिंग शुरू कर दी है। कोरोना से जंग जीतने के लिए जरूरी है कि इन सभी को कड़ी निगरानी में रखा जाए। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने सभी राज्यों से इस संबंध में तत्काल कदम उठाने को कहा है। कैबिनेट सचिव ने सभी मुख्य सचिवों से जिला स्तर के अधिकारियों के साथ सक्रिय होकर इनका पता लगाने को कहा है। उल्लेखनीय है कि कोरोना वायरस के प्रकोप को थामने के लिए केंद्र व राज्य सरकारों ने अभूतपूर्व कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में 21 दिन का लॉकडाउन कर दिया है।

बीमारी नियंत्रण में रहे इसके लिए एक-एक संक्रमित का पता चलना जरूरी है। विदेश से आए एक-एक आदमी को निगरानी में लेना जरूरी है। सूत्रों के अनुसार 15 लाख लोग तो हवाई मार्ग से देश में आए हैं जो जल मार्ग और सड़क के रास्ते देश में आये उनका आंकड़ा बहुत अधिक होगा।

नोटबंदी-आइपीएल फाइनल से भी ज्यादा देखा गया मोदी का लॉकडाउन भाषण

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 21 दिनों के लॉकडाउन के टेलीविजन संबोधन को वर्ष 2016 के नोटबंदी के संबोधन से भी ज्यादा देखा-सुना गया है। यह घोषणा बीएआरसी इंडिया रेटिंग्स ने की है।

टेलीविजन रेटिंग एजेंसी ब्राडकास्ट ऑडियंस रीसर्च काउंसिल्स (बीएआरसी) इंडिया रेटिंग्स के अनुसार, मंगलवार को पीएम के राष्ट्र के नाम टेलीविजन संबोधन को 1.7 करोड़ लोगों ने देखा। इसी संबोधन में उन्होंने कोरोना संक्रमण से मुकाबले के लिए देश भर में लॉकडाउन की घोषणा की थी। प्रसार भारती के सीईओ शशि शेखर ने ट्वीट करके बताया कि बीएआरसी के अनुसार पीएम के 24 मार्च के संबोधन की व्यूवरशिप आइपीएल के फाइनल मैच से भी ज्यादा थी। मोदी के भाषण को 201 चैनलों पर दिखाया गया था। आइपीएल के मैच को 13.3 करोड़ लोगों ने देखा था, जबकि पीएम के संबोधन को 19.7 करोड़ लोगों ने देखा है।

इससे पहले 19 मार्च को मोदी के 'जनता कर्फ्यू' के भाषण को 8.30 करोड़ लोगों ने देखा था। कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के आठ अगस्त के भाषण को 6.5 करोड़ लोगों ने देखा था। जबकि आठ नवंबर, 2016 के नोटबंदी की घोषणा को 114 टीवी चैनलों पर 5.7 करोड़ लोगों ने देखा था।

रविशंकर और राहुल गांधी देंगे सांसद विकास निधि का पैसा

नई दिल्ली, एजेंसियां : कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कोरोना के खिलाफ लड़ाई में सांसद विकास निधि से पैसा देने का एलान किया है। रविशंकर ने कहा कि वह अपनी सांसद विकास निधि से एक करोड़ रुपये जारी कर रहे हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा है कि उन्होंने कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में इस्तेमाल के लिए अपनी सांसद विकास निधि से एक करोड़ रुपये जारी करने का फैसला लिया है। पटना जिला प्रशासन जरूरत के हिसाब से खर्च कर सकता है। कानून मंत्री लोकसभा में पटना साहिब का प्रतिनिधित्व करते हैं।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कोरोना वायरस के खिलाफ संघर्ष में मदद के लिए अपना एक माह का वेतन प्रधानमंत्री राहत कोष को दान में दिया है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने कहा कि उन्होंने कोविड-19 के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष को एक महीने का वेतन दान में देने का फैसला लिया है। सभी लोगों से इस महामारी के खिलाफ संघर्ष में योगदान देने के लिए आगे आने की अपील है।

इस बीच, केरल से कांग्रेस के तीन सांसदों- राहुल गांधी, एके एंटनी और शशि थरूर ने सांसद विकास निधि का पैसा कोरोना से लड़ाई में लगाने का फैसला किया है। राहुल ने अपने संसदीय क्षेत्र वायनाड क्षेत्र के लिए 2.66 करोड़ देने का फैसला किया है। तिरुअनंतपुरम से सांसद शशि थरूर और राज्यसभा के सदस्य एके एंटनी अपने गृह जिले अलप्पुझा में इतनी ही राशि खर्च करेंगे।

स्पीकर के बाद मंत्रियों व हस्तियों ने पीएम राहत कोष में दिया योगदान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : केंद्रीय मंत्रियों ने कोरोना संकट से निपटने के लिए अपना एक महीने का वेतन प्रधानमंत्री राहत कोष में देने की मुहिम शुरू की है। इसकी शुरुआत लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने की थी। इसके उपरांत सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक और श्रम एवं रोजगार मंत्री संतोष गंगवार भी इस मुहिम में शामिल हो गए। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने भी अपनी सांसद निधि से पर्याप्त धन कोरोना पीड़ितों के इलाज में खर्च करने के लिए डीएम को पत्र लिखा है। निशंक ने राहत कोष में देने के साथ कहा है कि जरूरत पड़ी तो मैं व्यक्तिगत रूप से भी जनता की मदद के लिए जो भी बन पड़ेगा करूंगा।

रेलवे ने चार दिनों में एक लाख वैगन में आवश्यक वस्तुओं का किया लदान

नई दिल्ली, आइएएनएस : कोरोना के फैलाव को रोकने के लिए देशभर में लागू 21 दिनों के लॉकडाउन में जहां यात्री ट्रेनों का परिचालन रोक दिया गया है, वहीं आवश्यक वस्तुओं की ढुलाई का काम चौबीसों घंटे जारी है। पिछले चार दिनों में रेलवे ने एक लाख से ज्यादा वैगन (मालगाड़ी का डिब्बा) में आवश्यक वस्तुओं का लदान किया है।

रेल मंत्रालय ने ट्वीट किया, 'पिछले चार दिनों में लगातार चौबीसों घंटे काम करते हुए हमने एक लाख वैगन में जरूरी वस्तुओं का लदान किया है। इनमें अनाज, कोयला, पेट्रोलियम उत्पाद, खाने वाला तेल, प्याज, फल-सब्जियां, चीनी, नमक व दूध आदि शामिल हैं।'

मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि जरूरी सेवाओं से जुड़े स्टाफ- लोको पायलट, स्टेशन मास्टर, कंट्रोलर, माल लिपिक और मेंटेनेंस स्टाफ को विभिन्न स्टेशनों, नियंत्रण कक्ष और माल यार्ड में तैनात किया गया है। आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति की हरसंभव कोशिश की जा रही है। दिल्ली के डीआरएम एससी जैन ने कहा, कर्मचारियों को सामाजिक दूरी बनाए रखने को कहा गया है। स्टेशनों, लोकोमोटिव समेत सभी कार्यस्थलों को सैनिटाइज किया जा रहा है।

चुनौती

अदालतों में बढ़ेगा मुकदमों का ढेर, तीन करोड़ से ज्यादा मुकदमे पहले से ही देश की विभिन्न अदालतों में लंबित हैं

देश की न्याय प्रक्रिया पर भी पड़ रहा वायरस का असर

माला दीक्षित, नई दिल्ली

देश भर की अदालतों में तीन करोड़ से ज्यादा मुकदमे लंबित हैं। बार-बार यह मुद्दा बनता है लेकिन हर तरफ लाचारी है। ऐसे में कोरोना ने भी कहर ढा दिया है। न्याय में देरी और बढ़ेगी।

आंकड़ों के मुताबिक अदालतों में लगे मुकदमों के ढेर को खत्म करने के लिए ढांचागत संसाधन के साथ न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने की जरूरत बताई गई थी। देश भर की अदालतों में आज की तारीख में तीन करोड़ से ज्यादा मुकदमे लंबित हैं। जिला अदालत का एक जज औसतन एक साल में 746 मुकदमे निपटाता है।

अगर कुछ पीछे जाकर आंकड़ों पर निगाह डालें तो मुकदमों के ढेर और उसे निपटाने का गणित समझ आएगा। दिसंबर 2017 में देश की अधीनस्थ अदालतों में कुल 2.87 करोड़ मुकदमे लंबित थे। इसके बाद जनवरी 2018 से लेकर दिसंबर 2018 तक जिला अदालतों में 1.5 करोड़ नये मुकदमे दाखिल हुए। अगर दोनों को मिला दिया जाए तो दिसंबर 2018 में जिला अदालतों में कुल मुकदमों की संख्या 4.37 करोड़ हो जाती है। जनवरी 2018 से लेकर दिसंबर 2018 तक यानी एक साल में कुल 1.33 करोड़ मुकदमे निपटाए गए। परिणाम स्वरूप दिसंबर 2018 में कुल बचे लंबित मुकदमों की संख्या 3.04 करोड़ थी। जिला अदालतों में कुल 22750 जजों के मंजूर पद हैं लेकिन इस दौरान काम सिर्फ 17891 जजों ने किया बाकी पद खाली थे। आंकड़े बताते हैं कि एक जज ने वर्ष भर में औसतन 746 मुकदमे निपटाए। मुकदमे निपटाने की ये दर 89 फीसद थी और इस दर को सौ फीसद करने के लिए 2279 जजों की और आवश्यकता थी। यानी अगर अधीनस्थ अदालतों में जजों के सभी पद भर दिये जाएं तो मुकदमों की निस्तारण की सौ फीसद दर प्राप्त की जा सकती है। लेकिन बाकी लंबित 3.04 करोड़ मुकदमे अगले पांच साल मे निपटाने के लिए जिला अदालतों में 8152 और जजों की जरूरत है।

प्रतीकात्मक फोटो

कहां कितने मुकदमे

सुप्रीम कोर्ट में : 60,469
उच्च न्यायालयों में : 46,43,373
जिला अदालतों में : 3,21,82,309
जिला अदालतों में कुल लंबित मुकदमों में 10166396 मामले एक साल से लंबित और 81343 मुकदमे 30 साल से लंबित हैं

मोटे तौर की गई इस गणना से साफ है कि अगर मंजूर पदों पर पूरी क्षमता से काम किया जाए तो हर साल दाखिल होने वाले मुकदमों को निपटाने की सौ फीसद दर तो हासिल हो सकती है लेकिन लंबित मुकदमों का ढेर इससे नहीं खत्म होगा। उसके लिए आठ हजार से ज्यादा अतिरिक्त जज चाहिए होंगे तब भी सारे मुकदमे खत्म होने में पांच साल लगेंगे। इस स्थिति की अगर आज की स्थिति से तुलना की जाए तो पूरे देश में मुकदमों की सुनवाई पूर्ण बंदी से पहले से ही लगभग रुकी हुई थी। अदालतें सिर्फ अर्जेंट मामले सुन रही थीं। लेकिन उस समय भी मुकदमे दाखिल होने बंद नहीं हुए थे।

फिजिकल तौर पर मुकदमे दाखिल होना लॉकडाउन के बाद प्रभावित हुआ है। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट सहित बहुत सी अदालतों में ई-फाइलिंग की सुविधा है यानी बंदी के दौरान भी लगातार मुकदमे दाखिल हो रहे हैं जबकि निपटाए नहीं जा रहे जिसका नतीजा होगा कि अदालतों में मुकदमों का ढेर और बढ़ जाएगा जिसे निपटाना बड़ी चुनौती होगा। कोरोना का असर जहां आर्थिक और अन्य पहुलुओं पर पड़ेगा वहीं न्याय की रफ्तार पर भी पड़ेगा।

कह के रहेंगे माधव जोशी

कोरोना असर

पहली बार सुप्रीम कोर्ट में पूरी तरह वर्चुअल सुनवाई

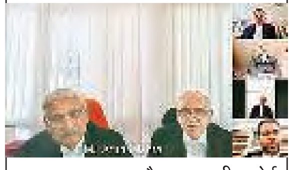

सौजन्य ● सुप्रीम कोर्ट

28 जनवरी 1950 को जब न्यायपालिका की पहली कार्यवाही सुबह 9 .45 पर शुरू हुई तो पहले मुख्य न्यायाधीश एच जे कनिया ने कभी भारत की न्यायपालिका के ऐसे सवेरे की कल्पना नहीं की होगी। नहीं सोचा होगा कि सभी घर पर रहेंगे और पूरी तरह से वर्चुअल सुनवाई होगी। कोरोना से निपटने के लिए जब हर तरफ क्वारंटाइन का तरीका ही अपनाया जा रहा है तो सुप्रीम कोर्ट भी इससे अछूता नहीं रहा। इतिहास में पहली बार सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई घरों पर रहकर वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के जरिए हुई। वकील से लेकर जज वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए शामिल हुए। तीन बेंच बनाई गईं। एक बेंच में जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस सूर्यकांत, दूसरी बेंच में जस्टिस एल नागेश्वर राव और जस्टिस अनिरुद्ध बोस और तीसरी बेंच में जस्टिस अरुण मिश्रा और जस्टिस दीपक गुप्ता ने सुनवाई की।

कैसे लगी कोर्ट :

अलग-अलग समय पर दो जजों की बेंच ने सुनवाई की। दोनों पक्षों के वकील ने भी अपने-अपने घरों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अपना पक्ष रखा। इस दौरान कोर्ट परिसर में किसी भी तरह का आवागमन नहीं हुआ। कार्यवाही मे शामिल सभी लोग वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए ही शामिल हुए।

क्या होती है प्रक्रिया :

वर्चुअल कोर्ट में सुनवाई के लिए वकील के द्वारा याचिका की ई-फाइलिंग की जाती है। इसके बाद वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मेंशनिंग रजिस्ट्रार से बात करनी होती है। फिर वकील अपने घर या दफ्तर से ही जजों के सामने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सुनवाई के लिए बहस कर सकते हैं।

जहां हैं, वहीं होगी प्रवासी मजदूरों की देखभाल

ताकि रुके पलायन ▶ मजदूरों, छात्रों व अकेली कामकाजी महिलाओं के लिए खाने-पीने, रहने का तत्काल इंतजाम करने का निर्देश

वापस घर भेजने की व्यवस्था से लॉकडाउन का उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन की वजह से विभिन्न स्थानों पर फंसे प्रवासी मजदूरों की समस्याओं को केंद्र सरकार ने गंभीरता से लिया है। केंद्र ने सभी राज्यों को इन मजदूरों के लिए तत्काल ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था करने का निर्देश दिया है। दिल्ली समेत देश के विभिन्न भागों से प्रवासी मजदूरों के सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित अपने घर की ओर पैदल जाने की खबरें आ रही हैं। गृह मंत्रालय ने साफ कर दिया कि कोरोना वायरस के संक्रमण का प्रसार रोकने के लिए लगाए प्रतिबंध के कारण उन्हें वापस घर भेजने की व्यवस्था नहीं की जा सकती है। इसके बजाय उन्हें जहां वे हैं, वहीं पर रहने का पूरा इंतजाम किया जाना जरूरी है।

पीएम मोदी के 21 दिनों के लिए देश में 'टोटल लॉकडाउन' के भगीरथ प्रयास को सफल बनाने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कुछ राज्यों के मुख्यमंत्रियों से भी बात की है। उनसे कहा गया है कि बड़ी तादाद में अपने गांवों की ओर बड़ी तादाद में पलायन कर रहे प्रवासी मजदूरों और अन्य लोगों को बीच रास्ते में ही रोक कर उन्हें समझाया जाए और उनकी देखरेख की जाए। इसके अलावा, गृह मंत्रालय ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कहा है कि वह होटलों, किराए के मकानों और हॉस्टलों में रह रहे लोगों का प्रवास सुनिश्चित करें। ताकि लोग जहां कहीं भी हैं, उनका वहीं सुरक्षित रहना सुनिश्चित हो सके।

सभी राज्य सरकारों, केंद्र शासित प्रदेशों को केंद्रीय गृहसचिव अजय भल्ला ने पत्र लिखकर 14 अप्रैल तक लॉकडाउन के दौरान सभी प्रवासी कृषि, औद्योगिक व असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों के लिए खाने-पीने और ठहरने की उचित व्यवस्था करें। विद्यार्थियों और कामकाजी महिलाओं को भी अपने मौजूदा जगह पर ही सारी सुविधाएं मुहैया करानी चाहिए। ताकि उन्हें किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़े। केंद्र ने मजदूरों, छात्रों और अकेले रहने वाली कामकाजी महिलाओं के लिए साफ पानी के साथ खाने-पीने का सामान पहुंचाने के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद लेनी की सलाह दी है। एक सवाल के जवाब में गृहमंत्रालय में संयुक्त सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने कहा कि अगर उन्हें घर भेजा जाने लगा तो इससे लॉकडाउन का उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा। लॉकडाउन का अर्थ है कि जो जहां है वहीं ठहर जाए। प्रसार को रोकने का यही मंत्र है।

दिहाड़ी मजदूर सैकड़ों किलोमीटर दूर घर के लिए पैदल ही निकल पड़े

जेएनएन, नई दिल्ली

देश भर में जारी लॉकडाउन के चलते बेरोजगार हुए दिहाड़ी मजदूर पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने घरों की ओर लौट पड़े हैं। दिल्ली में मजदूरी करने वाले 60 वर्षीय रामअवतार उनमें से एक हैं। परिवार को ठेले पर बैठाकर चल दिए हैं। यह तस्वीर दिल्ली-यूपी बॉर्डर के पास एनएच-24 की है। प्रेट्र

कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए देश में तीन हफ्ते के पूर्ण लॉकडाउन की घोषणा की गई है। इस दौरान जो जहां है, उसे वहीं रहना है। लोगों से बार-बार अपने घरों से बाहर नहीं निकलने का आग्रह किया जा रहा है। लेकिन दिल्ली-एनसीआर और गुजरात में रहने वाले प्रवासी मजदूरों यानी रोज कमाकर खाने वाले लोगों का एक तबका ऐसा भी है, जिसमें अपने घर लौटने की बेचैनी है। रेल सेवा से लेकर सड़क परिवहन तक सबकुछ बंद है, लिहाजा ये लोग सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने घरों के लिए पैदल ही निकल पड़े हैं। हाल यह हो गया है कि माल ढुलाई में इस्तेमाल किए जाने वाले ट्रक और कंटेनरों में भर-भरकर भी मजदूर अपने घरों को लौटने को मजबूर हो रहे हैं।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र यानी एनसीआर से बड़ी संख्या में मजदूरों को पैदल ही सड़कों पर अपने घर की तरफ जाते हुए देखा जा रहा है। छोटे-छोटे बच्चों और महिलाओं के साथ पैदल जा रहे इन मजदूरों का कहना है कि उनके सामने इसके अलावा कोई चारा भी नहीं है। रोज कमाकर अपना और अपने परिवार के सदस्यों का पेट भरने वाले लोगों के पास लॉकडाउन के चलते काम नहीं है। उनके पास ऐसी कोई जमापूंजी भी नहीं है, जिससे कुछ खाने-पीने का इंतजाम कर सकें। इसके अलावा बंदी के चलते आवश्यक वस्तुओं की कीमतें भी आसमान छूने लगी हैं। सरकार ने मजदूरों की मदद के लिए घोषणाएं जरूर की हैं, लेकिन इन लोगों तक कोई मदद नहीं पहुंची है। केरल और कर्नाटक जैसे राज्यों में फंसे प्रवासी मजदूरों के सामने तो अपने घरों को लौटने का विकल्प भी नहीं हैं और उन्होंने अपने आपको किस्मत के सहारे छोड़ दिया है।

राजस्थान में भी गुजरात से बड़ी संख्या में मजदूर लौट रहे हैं। नेशनल और स्टेट हाईवे पर ऐसे मजदूरों का तांता लगा है। ऐसे में अशोक गहलोत सरकार सीमा पर इन मजदूरों की जांच कराकर उन्हें उनके घर भेजने का इंतजाम कर रही है। गुजरात के कई शहरों में बड़ी संख्या में राजस्थान के दिहाड़ी मजदूर काम करते हैं।

अहमदाबाद से राजस्थान के अपने घर को लौट रहे एक मजदूर ने कहा कि उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। होटल बंद होने से बाहर भी वह कुछ नहीं खा सकते थे। कहीं-कहीं छोटे होटल खुले भी हैं तो वहां एक रोटी 50 रुपये में मिल रही है, जिसे खरीदना उनके वश में नहीं है। काम नहीं होने के चलते उनके लिए घर का किराया देना भी मुश्किल था, इसलिए उन्होंने अपने गांव ही लौटना बेहतर समझा। हालांकि, गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपानी ने भी मजदूरों से घर नहीं लौटने का आग्रह किया है। उन्होंने सभी के रहने और खाने का इंतजाम करने का भरोसा भी दिलाया है।

महाराष्ट्र के यवतमाल जिले की सीमा पर पुलिस ने दो कंटेनर को पकड़ा। कंटेनर में लदे सामान के बारे में ड्राइवरों के जवाब से शक होने पर होने पर पुलिस ने जब उन्हें खोलकर देखा तो दंग रह गई। दोनों कंटेनरों में मजदूरों को बोरे की तरह ठूंस-ठूंसकर भरा गया था। दोनों कंटेनरों से तीन से दिहाड़ी मजदूर निकले। ये सभी तेलंगाना में काम करने गए थे, लेकिन लॉकडाउन के चलते काम बंद होने के बाद वापस अपने घर राजस्थान लौट रहे थे। रेल और बस सेवा बंद होने के कारण उन्होंने कंटेनरों से ही लौटने का फैसला किया था। अधिकारियों ने कहा कि कंटेनर के ड्राइवरों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। लेकिन मजदूरों के बारे में उनके पास कहने को कुछ नहीं था। हालांकि, अधिकारियों ने कहा कि सभी मजदूर अपने घर लौटना चाहते हैं और इसके बारे में जल्द ही कोई फैसला किया जाएगा।

दिल्ली और नोएडा व गाजियाबाद में रहने वाले अलीगढ़, कासगंज, एटा और आस-पास के मजदूर भी अपने घरों को लौटने लगे हैं। इनका कहना है कि ये लोग जहां काम करते थे, वहां साफ बोल दिया गया है कि अब कोई काम नहीं है। हालांकि, कई जगहों पर उन्हें रहने की जगह तो दी जा रही है, लेकिन किसी तरह की आर्थिक मदद नहीं मिली।

प्रदीप नामक व्यक्ति ने बताया कि वह नोएडा में एक कंपनी में टेलर का काम करता था। लॉकडाउन के बाद उसकी कंपनी बंद हो गई और उससे जल्द से जल्द अपने घर चले जाने के लिए कहा गया। वह डेढ़ दिन पहले पैदल ही कासगंज में पुलिस में तैनात अपने भाई के घर जाने के लिए निकल पड़ा। ये सिर्फ अकेले प्रदीप की कहानी नहीं है, इसकी तरह सैकड़ों-हजारों लोग सड़कों पर हैं।

महाराष्ट्र से ट्रक से उत्तर प्रदेश भाग रहे 40 मजदूर पकड़े गए, केस दर्ज

ठाणे, प्रेट्र : महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों, खासकर मुंबई से प्रवासी मजदूरों का अपने घरों की तरफ पलायन तेज हो गया है। ठाणे में पुलिस ने एक ट्रक से ऐसे ही 40 मजदूरों को पकड़ा, जो उत्तर प्रदेश में अपने घर भाग रहे थे। अब सभी के खिलाफ लॉकडाउन का उल्लंघन करने का केस दर्ज किया गया है। पुलिस के रोके जाने पर ट्रक ड्राइवर ने बताया कि था कि वो सब्जियां ले जा रहा है। कोपरी थाने के इंस्पेक्टर डी. गावड़े ने बताया कि मुंबई में काम करने वाले 40 मजदूर ट्रक से उत्तर प्रदेश में अपने घर लौट रहे थे। नासिक में पुलिस ने सभी को पकड़ा और उसी ट्रक से सभी को वापस मुंबई भेज दिया। गावड़े के मुताबिक मजदूरों ने बताया कि मुंबई में फैले कोरोना वायरस से उन्हें संक्रमित होने का डर हो गया था, इसलिए वो अपने गांव लौट रहे थे।

दिव्यांगों की सुरक्षा के लिए गाइडलाइंस जारी

- इन्हें वायरस से है ज्यादा खतरा, उनकी जरूरतों को समझने पर जोर
- दिव्यांग जन सशक्तीकरण विभाग ने जारी किए हैं दिशा-निर्देश

नई दिल्ली, आइएएनएस : कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के मद्देनजर सरकार ने दिव्यांगों की सुरक्षा के लिए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को व्यापक दिव्यांगता समावेशी गाइडलाइंस जारी की हैं। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के तहत आने वाले दिव्यांग जन सशक्तीकरण विभाग ने ये गाइडलाइंस जारी की हैं क्योंकि दिव्यांगों को कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा ज्यादा है।

गाइडलाइंस में दिव्यांगता से जुड़ी जरूरतों, दैनिक जीवन की गतिविधियों को समझने और खतरे की स्थिति में दिव्यांगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया है। ताजा आदेश केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा 24 मार्च को जारी आदेश की कड़ी में जारी किया गया है। इसमें सलाह दी गई थी कि कोविड-19 के बारे में सभी सूचनाओं, सेवाओं और एहतियातों की जानकारी आसान और स्थानीय भाषा में सभी प्रारूपों में उपलब्ध होनी चाहिए। दृष्टि बाधित लोगों के लिए ये ब्रेल और सुनने योग्य टेप में, सुनने में अशक्त लोगों के लिए वीडियो ग्राफिक सामग्री सब-टाइटल और संकेत भाषा में व्याख्या के साथ उपलब्ध होनी चाहिए। इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि आपातकालीन केंद्रों और स्वास्थ्य केंद्रों पर काम करने वाले संकेत भाषा दुभाषिए को भी वही स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए जो कोरोना वायरस के संक्रमण के मामलों से निपटने वाले स्वास्थ्यकर्मियों को प्रदान की जाती है।

गाइडलाइंस के मुताबिक, इमरजेंसी रिस्पांस सर्विसेज के सभी लोगों को दिव्यांग जनों के अधिकारों और उनके साथ जुड़ी अतिरिक्त समस्याओं के खतरे के बारे में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इसके अलावा दिव्यांगों को सहायता के बारे में आवश्यक जानकारियां भी सभी जागरूकता अभियानों का हिस्सा होनी चाहिए।

क्वारंटाइन के दौरान दृष्टिहीन और मानसिक दिव्यांग व्यक्तियों को आवश्यक सहायता सेवाएं, व्यक्तिगत सहायता और शारीरिक व संचार पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए। लॉकडाउन के दौरान दिव्यांगों की देखभाल करने वाले व्यक्ति को प्रतिबंधों से छूट दी जानी चाहिए अथवा प्राथमिकता के आधार पर उन्हें पास जारी किए जाने चाहिए। रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों को भी दिव्यांगों की जरूरतों के बारे में बताया जाना चाहिए ताकि वे पूरी सैनिटाइजिंग प्रक्रिया के बाद घरेलू सहायिकाओं, देखभाल करने वालों और अन्य सहायकों का उनके आवास में प्रवेश सुनिश्चित कर सकें। ऐसा नहीं करने पर कार्रवाई भी हो।

मोदी ने कुछ रेडियो जॉकी से मांगा सहयोग

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी रेडियो जॉकी (आरजे) से अपील की है कि वह सरकार को बताएं कि कोरोना संक्रमण के चलते लोगों को कैसी-कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ताकि सरकार उन कठिनाइयों का समाधान निकाल सके।

वीडियो के जरिये पीएम मोदी ने शुक्रवार को कुछ आरजे से संपर्क साधा और उनसे आग्रह किया कि वह कोरोना पर विशेषज्ञों की राय का प्रचार-प्रसार करे। साथ ही इन हालात से निपटने के लिए सरकार के उठाए कदमों को भी लोगों तक पहुंचाने की अपील की है। प्रधानमंत्री ने रेडियो जॉकियों से कहा कि वह लोगों को बताएं कि किस तरह से डॉक्टरों, स्वास्थ्य कर्मियों और एयरलाइनों के कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है। लोगों को भय है कि उनके कारण उन्हें कोरोना संक्रमण हो जाएगा, इसलिए वह दुर्व्यवहार करते हैं।

उत्तर प्रदेश में मिले आठ लोग संक्रमित, कुल संख्या 51 हुई

जेएनएन, नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश में में शुक्रवार को कोरोना वायरस से संक्रमित आठ और मरीज पाए गए। इनमें नोएडा के चार, गाजियाबाद के दो और आगरा व मेरठ का एक-एक मरीज शामिल है। राज्य में संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़कर 51 हो गई है। इसमें सर्वाधिक 18 मरीज नोएडा के हैं। इसके अलावा आगरा के दस, लखनऊ के आठ ,गाजियाबाद के पांच, पीलीभीत के दो मरीज हैं और लखीमपुर खीरी, बागपत, मुरादाबाद, वाराणसी, कानपुर ,जौनपुर, शामली व मेरठ के एक-एक मरीज शामिल हैं। शुक्रवार को 137 संदिग्ध मरीजों को विभिन्न अस्पतालों में भर्ती करवाया गया। मेरठ में पॉजिटिव मिला मरीज बुलंदशहर का रहने वाला है। जम्मू-कश्मीर में भी चार नए मामले सामने आने के बाद यहां संक्रमितों की संख्या 18 पहुंच गई है। इनमें 14 कश्मीर और 4 जम्मू के हैं। राज्य में संक्रमण से अब तक एक ही मौत हुई है और एक मरीज स्वस्थ हो चुका है। मप्र में भी चार नए मामले सामने आए, अब यह संख्या 30 हो गई है। राजस्थान में भी 7 नए मामले सामने आने के बाद कोरोना संक्रमितों की संख्या 50 हो गई है। दो-दो भीलवाड़ा, डूंगरपुर व चुरू के और एक जोधपुर का रहने वाला है। पंजाब में भी पांच नए मामले सामने आने के साथ ही राज्य में कोरोना संक्रमितों की संख्या 38 हो गई है। बंगाल में एक बार में ही शुक्रवार को कोरोना संक्रमितों की संख्या 15 पहुंच गई। जिन पांच लोगों के शरीर में कोरोना वायरस होने की पुष्टि हुई है उसमें नौ माह का एक शिशु भी शामिल हैं।

कनिका की चौथी रिपोर्ट भी पॉजिटिव : लखनऊ पीजीआइ में भर्ती बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर के शरीर में कोरोना वायरस बरकरार है। 8वें दिन भी उन्हें बीमारी से छुटकारा नहीं मिला है। उनमें वायरस का लोड बना हुआ है। हालांकि शुक्रवार को लखनऊ में कोई नया मरीज नहीं मिला है। कनिका के संपर्क में आए मंत्री, सांसद अभी भी होम क्वारंटाइन में हैं।

लखनऊ में संक्रामक रोग विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. विकास इंदु अग्रवाल ने बताया कि इस वायरस से संक्रमित अब तक कुल 14 मरीजों को स्वस्थ घोषित कर अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है।

राज्यवार नए केस

राज्य	नए मामले	अब तक
राजस्थान	07	50
उप्र	08	51
दिल्ली	01	40
पंजाब	05	38
मप्र	04	30
जम्मू-कश्मीर	04	18
बिहार	02	09
बंगाल	05	15

जम्मू-कश्मीर : दो विदेश से और दो अन्य राज्यों से लौटे थे

कश्मीर में मिले चारों संक्रमितों में से दो विदेश से लौटे थे, जबकि दो अन्य राज्यों में किसी धार्मिक समारोह में भाग लेकर आए थे। एक मरीज ठीक भी हुआ है, उसे होम क्वारंटाइन में रखा है। सरकार के प्रवक्ता रोहित कंसल के अनुसार, कश्मीर में जिन चार लोगों में शुक्रवार को कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है, वे सभी श्रीनगर के रहने वाले हैं। चारों को अब आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। गुरुवार को श्रीनगर में सात साल और आठ माह के दो बच्चों की रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई थी। जम्मू-कश्मीर में अब तक 5763 लोगों को स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग ने अपनी निगरानी में रखा है।

लॉकडाउन में फंसे लोगों को मदद पहुंचाने का नड्डा का निर्देश

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : एक तरफ जब देश के कई हिस्सों से प्रवासी मजदूरों के लॉकडाउन की चिंता किए बगैर पैदल ही घरों की ओर रवाना होने की खबरें तेज हैं, तो भाजपा अध्यक्ष ने अपने सभी कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया है कि वे मदद के लिए उतरें। शुक्रवार को उन्होंने 10 लोगों के लिए खाने का पैकेट भेजकर रोजाना पांच करोड़ लोगों के लिए खाने का इंतजाम करने की पार्टी की योजना भी शुरू कर दी। यह लॉकडाउन के पूरे वक्त तक चलनी है।

जेपी नड्डा। फाइल

पिछले कुछ दिनों से नड्डा लगातार वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये पार्टी कार्यकर्ताओं से संवाद कर रहे हैं। शुक्रवार को उन्होंने दिल्ली और मुंबई के सांसदों से बातचीत की और प्रवासी मजदूरों को मदद पहुंचाने को कहा। ध्यान रहे कि इन दोनों शहरों में बड़ी संख्या में प्रवासी रहते हैं। यह फैसला पहले ही हुआ था कि पार्टी के एक करोड़ कार्यकर्ता हर रोज पांच-पांच लोगों के खाने का इंतजाम करेंगे। उनकी सूची तैयार हो गई थी। उसका शुभारंभ शुक्रवार से हो गया।

कोरोनाजानकारी. इन हिंदी वेबसाइट दे रही काम की जानकारी

राजीव बाजपेयी , लखनऊ

स्वस्थ समाज

कई ऐसे चेहरे भी हैं, जो अपनी ड्यूटी के साथ कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में पर्दे के पीछे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे ही एक युवा आइएएस अधिकारी प्रशांत शर्मा (2012 बैच) ने कोरोना वायरस के प्रति लोगों को जागरूक करने और उनको सही और प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए कोरोनाजानकारी.इन नामक हिंदी वेबसाइट तैयार की है।

अंग्रेजी में कोरोनाजानकारी.इन टाइप करने पर यह उपलब्ध हो जाती है। कोरोना वायरस से जुड़ी तमाम अहम जानकारियां हिंदी में उपलब्ध हैं। इस वेबसाइट की खासियत यह है कि एक तो हिंदी में है और इसमें जो भी जानकारियां हैं, वह डब्ल्यूएचओ और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की ओर से उपलब्ध कराई गई हैं। इसमें कोरोना के बारे में जानकारी के लिए तमाम हेल्पलाइन नंबर दिए गए हैं।

वहीं, कोरोना वायरस क्या है, कैसे फैलता है, इसके लक्षण क्या हैं, किन लोगों को अधिक खतरा है, कैसे बचें और इसकी पहचान कैसे करें जैसे तमाम बातें हिंदी में उपलब्ध हैं। साथ ही अब तक जितने भी शासकीय आदेश और भारत सरकार की ओर से गाइडलाइन व सुझाव जारी हुए हैं, उनका भी सिलसिलेवार ब्योरा है।

आइएएस प्रशांत शर्मा। जागरण

2012 बैच के युवा आइएएस अफसर प्रशांत का सराहनीय प्रयास, हिंदी में दे रहे हैं सारी जानकारियां

- कोरोना के बारे डब्ल्यूएचओ और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से उपलब्ध कराई गई हर जानकारी है इस पर उपलब्ध
- कैसे करें बचाव, कैसे हो जांच जैसी बातें भी हैं मौजूद

यदि आपको लगता है कि आप सुनिश्चित हो जाएं कि कहीं आपके लक्षण कोरोना के तो नहीं है, तो इसमें अपने लक्षण दर्ज करा सकते हैं, विश्लेषण के बाद आपको रिजल्ट मिल जाएगा।

प्रशांत ने कहा, मेरा एक छोटा सा प्रयास है। मैं कोरोना के खिलाफ जंग में लोगों के लिए कुछ कर सकूं। इसी के चलते एक ऐसी वेबसाइट बनाई है, जिसमें अधिक से अधिक जानकारी लोगों को मिल सके। दरअसल कोरोना को लेकर सोशल मीडिया से लेकर हर जगह पर इतना कुछ चल रहा है कि उस पर यकीन करना मुश्किल है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस पर कुछ काम करने का संकल्प लिया। आगे भी इसको लगातार अपडेट करता रहूंगा ताकि लोगों को सही और स्पष्ट जानकारी मिल सके।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

कृषि क्षेत्र को लॉकडाउन से छूट

राहत

- सरकार ने किसानों को रबी फसलों को लेकर हो रही परेशानी से उबारा
- उर्वरक की दुकानें, मशीनरी भाड़ा केंद्र और मंडियां खुली रहेंगी

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र सरकार ने कृषि क्षेत्र को लॉकडाउन नियमों से छूट देने की घोषणा की है। खेतों में तैयार खड़ी रबी की फसलों को लेकर किसानों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो इसका ध्यान रखते हुए केंद्र सरकार ने शुक्रवार को मंडी, खरीद एजेंसियों, खेती से जुड़े कामकाज, भाड़े पर कृषि मशीन देने वाले केंद्रों के साथ ही कृषि से संबंधित सामान का राज्य के भीतर और अंतर-राज्यीय परिवहन को लॉकडाउन से छूट दे दी। केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जारी ताजा निर्देश के मुताबिक, केंद्र सरकार ने कृषि मजदूरों को काम पर जाने के साथ ही उर्वरक, कीटनाशक और बीज उत्पादन एवं पैकेजिंग इकाई को भी लॉकडाउन आदेश से छूट दी गई है।

निर्देश में कहा गया है कि लॉकडाउन की अवधि में उर्वरक की दुकानें और कृषि मशीनरी भाड़ा केंद्र संचालन में रहेंगे। बयान में कहा गया है, 'न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) संचालन समेत कृषि उत्पादों की खरीदारी करने वाली एजेंसियां, एपीएमसी द्वारा संचालित या राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित मंडियों को छूट दी गई है।'

यह निर्देश रबी की खेती में किसानों को हो रही परेशानी को देखते हुए जारी की गई है। इसके साथ ही इसका उद्देश्य कोरोना वायरस के फैलने पर अंकुश पाने के लिए घोषित देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान किसानों मंडियों तक पहुंचने की छूट देना है। सर्दियों के समय में होने वाली रबी की फसलें गेहूं, सरसों, मक्का, एवं दालों की फसल पक कर तैयार हो गई हैं और आने वाले महीने में ये फसलें मंडियों तक पहुंचने लगेंगी। सरकार चाहती है कि इसमें किसी तरह की परेशानी न हो।

योगी ने 12 राज्यों के लिए तैनात किए नोडल अफसर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि अन्य प्रदेशों में रह रहे उत्तर प्रदेश के लोगों को लॉकडाउन के कारण चिंता करने की जरूरत नहीं है। शुक्रवार को उन्होंने देश के 12 अन्य राज्यों में रह रहे उप्र के लोगों को सभी तरह की सुविधाएं दिलाने के लिए इन राज्यों के लिए एक-एक नोडल प्रशासनिक अफसर तैनात करने का निर्देश दिया। इन राज्यों में महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश-तेलंगाना, कर्नाटक, पंजाब, बंगाल, राजस्थान, हरियाणा, बिहार, गुजरात, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश और दिल्ली भी शामिल हैं। इन 12 राज्यों के लिए जो नोडल प्रशासनिक अफसर तैनात किए गए हैं, वे संबंधित राज्य के अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर वहां रह रहे यूपी के नागरिकों को हर तरह की सुविधाएं मुहैया कराने का काम करेंगे। प्रत्येक नोडल अफसर के साथ एक आइपीएस अधिकारी को भी तैनात किया गया है।

नोडल प्रशासनिक अफसर

- महाराष्ट्र – नितिन रमेश गोकर्ण, प्रमुख सचिव लोक निर्माण
- आंध्र प्रदेश और तेलंगाना – टी.वेंकटेश, प्रमुख सचिव सिंचाई
- कर्नाटक – विजय किरन आनंद, महानिदेशक स्कूल शिक्षा
- पंजाब – अरविंद कुमार, प्रमुख सचिव ऊर्जा
- बंगाल – कुमार कमलेश, अपर मुख्य सचिव नियोजन
- राजस्थान – बाबूलाल मीणा, प्रमुख सचिव उद्यान
- हरियाणा – आलोक कुमार, प्रमुख सचिव औद्योगिक विकास
- बिहार – मनोज सिंह, प्रमुख सचिव समाज कल्याण
- मध्य प्रदेश – समीर वर्मा, सचिव लोक निर्माण
- दिल्ली – पीके सारंगी, स्थानिक आयुक्त

नोडल पुलिस अफसर

- महाराष्ट्र– एसबी शिरोड़कर, एडीजी अभिसूचना
- कर्नाटक – संजय सिंघल, एडीजी रेलवे
- पंजाब – विजय प्रकाश, आइजी फायर सर्विसेज
- पश्चिम बंगाल – नवनीत सिकेरा, आइजी मुख्यालय लखनऊ
- राजस्थान – च्योति नारायण, आइजी कानून व्यवस्था
- हरियाणा –रामकुमार, एडीजी पीएसी
- बिहार – अशोक कुमार सिंह, एडीजी यातायात
- गुजरात – डीके ठाकुर, एडीजी एटीएस
- उत्तराखंड – प्रवीण कुमार, आइजी मेरठ परिक्षेत्र
- मध्य प्रदेश – दीपक रतन, आइजी यातायात

मजदूर पति ने दिल्ली में लगाई गुहार, टीकमगढ़ में पत्नी को मिली सहायता

नईदुनिया, टीकमगढ़

मजदूरी करने के लिए पति दिल्ली में था, इसी बीच कोरोना संकट के चलते टीकमगढ़ में रह रही उसकी गर्भवती पत्नी परेशान हो गई। दिल्ली में युवक ने वहां के प्रशासनिक अधिकारियों से संपर्क साधा और पत्नी की हालत के बारे में बताया। दिल्ली से सूचना मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ कलेक्टर हर्षिका सिंह तक पहुंची तो उन्होंने तत्काल मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को इस संबंध में दिशा-निर्देश कर गर्भवती का स्वास्थ्य परीक्षण करने को कहा। शुक्रवार दोपहर को स्वास्थ्य विभाग की टीम ने महिला के घर पर पहुंचकर स्वास्थ्य परीक्षण किया।

टीकमगढ़ में नरसिंह कॉलोनी निवासी प्रदीप सेन की पत्नी सपना सेन गर्भवती हैं। कुछ समय पूर्व ही उनका पति प्रदीप सेन दिल्ली गया था, लेकिन लॉकडाउन के चलते वह दिल्ली से निकल नहीं पाया। प्रदीप सेन ने दिल्ली में संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों से गुहार लगाई कि या तो उसके वहां जाने की व्यवस्था कराई जाए या पत्नी की सहायता हो जाए। टीकमगढ़ कलेक्टर तक जानकारी पहुंचने पर स्वास्थ्य विभाग की टीम प्रदीप सेन के घर पहुंची और गर्भवती का स्वास्थ्य परीक्षण किया।

उधर, नगरपालिका की ओर से सपना को भोजन उपलब्ध कराया गया है। स्थानीय रहवासियों ने भी प्रदीप के परिवार के लिए आटा, दाल, चावल, नमक आदि की व्यवस्था की है।

कोरोना से जुड़े सवाल और विशेषज्ञ जवाब

कोरोना वायरस आज दुनिया में महामारी का कारण बना है। इस वायरस को लेकर, इसकी प्रकृति, इसके संक्रमण से बचाव, उपचार तक कई तरह के दावे किए जा रहे हैं। कुछ वैज्ञानिक तर्कों के साथ तो कुछ अनुभवों पर। सोशल मीडिया में तमाम ऐसे दावे भी हैं तो भ्रामक हैं। आइए आज हम कुछ दावों के बारे में जानते हैं कि उनकी हकीकत क्या है और जान लेते हैं कि कोरोना संक्रमण से किस तरह बच सकते हैं, किसे संक्रमण का ज्यादा खतरा है? संक्रमण के बाद क्या करना चाहिए?

दावा: कुछ ही महीनों में इसका टीका तैयार हो जाएगा

हकीकत: चीनी शोधकर्ताओं द्वारा वायरस के अनुवांशिक अनुक्रम जारी करने से वैज्ञानिकों को नए कोरोना वायरस का टीका तैयार करने के काम में मदद मिली है। यह सही है कि वैज्ञानिक इस दिशा में काफी तेजी से काम कर रहे हैं। कुछ टीमों ने तो जानवरों पर इसका परीक्षण भी किया है। हालांकि बाजार में टीका उतारना अब भी एक लंबी प्रक्रिया है। वैज्ञानिक पूरी तरह संतुष्ट हो जाएं कि इसका टीका बगैर साइड इफेक्ट के हो। ऐसे में कहा जा सकता है कि अगर एक वर्ष में भी टीका तैयार हो जाए तो उसे जल्दी ही कहेंगे।

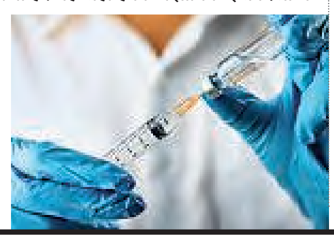

स्रोत : द गार्जियन

दावा: मास्क पहनना प्रभावकारी नहीं है

हकीकत: यह गारंटी नहीं है कि मास्क पहनभर लेने से कोरोना वायरस अटैक नहीं कर सकते हैं। वायरस आंखों के जरिए भी शरीर के अंदर प्रवेश कर सकता है। इतने ही बहुत छोटे कण जिन्हें एरोसोल कहा जाता है, वे मास्क को भेदने में सक्षम होते हैं। हां, इतना जरूर है कि मास्क ड्रापलेट्स को रोकने में सक्षम है जो कि वायरस संक्रमण का मुख्य माध्यम है। एक अध्ययन के मुताबिक मास्क पहनने वाले लोग न पहनने वाले से पांच गुना ज्यादा सुरक्षित रहते हैं।
अगर आपके किसी संक्रमित के संपर्क में आने की गुंजाइश बनती है तो मास्क संक्रमण की आशंका को कम करता है। अगर किसी को कोरोना है या उसके संक्रमित होने की आशंका है तो वह मास्क पहनकर दूसरों के लिए खतरा कम करता है। स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए मास्क जरूरी है। इसी तरह घर में अगर कोई मरीज है तो उसकी देखभाल करने वाले को भी मास्क पहनना चाहिए। आदर्श स्थिति तो यही है कि मरीज और देखभाल करने वाले दोनों को मास्क पहनना चाहिए। हां, बेवजह लोगों को पहनने की जरूरत नहीं हैं।

दावा: कम उम्र वाले निश्चिंत रहें।

हकीकत: अधिकांश ऐसे लोग जो बुजुर्ग नहीं है और उन्हें कोई बीमारी नहीं है, वे कोरोना की वजह से गंभीर रूप से पीड़ित नहीं होते हैं। लेकिन अगर व्यक्ति बीमार है तो उसे सामान्य फ्लू की तुलना में श्वसन संबंधी गंभीर दिक्कत हो सकती है। वे लोग जो वायरस की रोकथाम में जुटे हैं जैसे स्वास्थ्यकर्मी, सामाजिक कार्यकर्ता, पुलिस-प्रशासन के लोग उनके लिए संक्रमण की आशंका बनी रहती है। स्वस्थ युवा अगर क्वारंटाइन के निर्देशों का सही ढंग से पालन करें तो वे स्वयं तो सुरक्षित रहेंगे ही इसके संक्रमण को रोकने में मददगार होंगे।

दावा: यह सर्दी के फ्लू से ज्यादा खतरनाक है

हकीकत: अगर कोई कोरोना का मरीज होता है तो उसकी स्थिति सर्दी के फ्लू से ज्यादा बदतर नहीं होगी लेकिन कोरोना की मृत्यु दर और इसकी समग्र रूपरेखा इसको ज्यादा घातक बनाती है। जब यह संक्रमण तेजी से फैले और उस समय संक्रमण के हल्के-फुल्के मामलों पर अगर ध्यान नहीं दिया जाए तो मृत्यु दर काफी ज्यादा प्रतीत होती है। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के विशेषज्ञ ब्रूश एलवर्ड का कहना है कि कोविड-19 के साथ ऐसा नहीं है। एलवर्ड ने ही चीन में एक अंतरराष्ट्रीय मिशन का नेतृत्व किया था जो कि वायरस की भयावहता और उससे निपटने में चीन के कदमों का अध्ययन करने गए थे। उन्होंने यह भी कहा कि अगर जांचों का दायरा और बढ़ाया जाता है तो इसकी मृत्यु दर घटकर 1 फीसद के आसपास होगी। यह भी सामान्य फ्लू की तुलना में 10 गुना ज्यादा मृत्युकारक होगी। इस तरह अनुमान के मुताबिक प्रति वर्ष दुनियाभर में 2.9 लाख से 6.5 लाख लोगों की मौत का कारण बन सकता है।

दावा: यह अधिक घातक तनाव में बदल रहा है

हकीकत: समय के साथ सभी वायरस म्यूटेट करते हैं, कोविड-19 का वायरस भी इनसे जुदा नहीं है। एक वायरस कितना घातक हो सकता है और उसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह मानव शरीर में पहुंचकर कितनी तेजी से फैलता है और बार-बार प्रभावी ढंग से इस प्रक्रिया को दोहराता है। यह जरूरी नहीं कि जो वायरस तीव्र गति से लोगों की मृत्यु का कारण बनता है या उन्हें बीमार करता है, वे सबसे खतरनाक होते हैं। कई बार ऐसे वायरस अक्षम हो जाते हैं और उनके संक्रमण की संभावना कम होती है।
चीनी वैज्ञानिकों ने वायरस के अनुवांशिक विश्लेषण के लिए वुहान और अन्य शहरों के 103 मरीजों से नमूना लिया तो दो शाखाएं मिलीं जिसे क्रमश: एल और एस नाम दिया गया। हालांकि इनमें एल हिस्सा ज्यादा प्रचलन में था। नमूनों का करीब 70 फीसद। जबकि वायरस की एस शाखा वायरस के पैतृक संस्करण में पायी गई। इस शोध से साबित होता है कि वायरस की एल शाखा ज्यादा आक्रामक थी।

दावा: संक्रमित के साथ 10 मिनट रहने पर ही आप भी चपेट में आएंगे

हकीकत: फ्लू के लिए कुछ स्वास्थ्य संस्थानों ने गाइडलाइंस दी है जिसके तहत एक्सपोजर को इस तरह से परिभाषित किया गया है कि अगर कोई व्यक्ति 10 मिनट से छींक या खांस रहा है और आप उससे छह फीट से कम दूरी पर हैं तो आप संक्रमित हो सकते हैं। हालांकि ऐसा भी हो सकता है कम समय के संपर्क या संक्रमित सतह से आप वायरस की चपेट में आ जाएं।

बिना अनुमति बरात, हवालात में कटी रात

जागरण संवाददाता, ऊधमसिंह नगर : लॉकडाउन में बिना अनुमति बरात में भीड़ जुटाने पर पुलिस ने काजी, दूल्हे और दूल्हे के पिता समेत आठ लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। पूरी रात हवालात में काटने के बाद शुक्रवार सुबह सभी को जमानत तो मिल गई, लेकिन, बरात को बिना दुल्हन के ही लौटना पड़ा। बाजार चौकी प्रभारी अनिल चौहान ने बताया कि सिरौलीकला से लड़के के परिवार वाले बरात लेकर गुरुवार रात को इस्लामनगर मोहल्ले में पहुंचे। इस बीच वह लॉकडाउन व निषेधाज्ञा का अनुपालन कराने के लिए पुलिसकर्मी इस्लामनगर क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। समारोह की सूचना पर पुलिस टीम इस्लामनगर में शादी वाले घर में पहुंची। उस वक्त वहां लोगों की भीड़ एकत्र थी और निकाह की तैयारी चल रही थी। इस पर पुलिस टीम ने बिना अनुमति आयोजन को गलत बताकर दूल्हे, उसके पिता, चालक, रिश्तेदार, वधू के पिता और भाइयों को हिरासत में ले लिया।

बांग्लादेश में फंसे छात्रों के लिए हाई कोर्ट में याचिका

जासं, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के खतरे के बीच बांग्लादेश में फंसे 580 भारतीय मेडिकल छात्रों को वापस लाने की मांग को लेकर दायर याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। कोर्ट ने पूछा कि छात्रों को वापस लाने के लिए क्या कदम उठाए गए? अगली सुनवाई 30 मार्च को होगी। न्यायमूर्ति सिद्धार्थ एवं न्यायमूर्ति तलवंत सिंह की पीठ ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मामले की सुनवाई कर गृह और विदेश मंत्रालय को नोटिस जारी किया। अधिवक्ता गौरव कुमार बंसल ने याचिका में कहा कि बांग्लादेश में फंसे अधिकांश छात्र जम्मू एवं कश्मीर के हैं। वे हॉस्टल में बगैर मास्क, सैनिटाइजर के फंसे हुए हैं। मेस बंद हो चुका है। लॉकडाउन के कारण जरूरी सामान भी नहीं मिल रहा है और भारत द्वारा उड़ानें रद होने के कारण वे यहां भी नहीं आ सकते।

तृणमूल ने अपने विधायक और मंत्रियों को एक माह का वेतन देने को कहा

राब्यू, कोलकाता : तृणमूल ने पार्टी के सभी विधायक-मंत्रियों को कोरोना संकट से निपटने के लिए स्टेट इमरजेंसी रिलीफ फंड में अपना एक महीने का वेतन जमा कराने का निर्देश दिया है। पार्टी महासचिव पार्थ चटर्जी की ओर से जारी किए गए इस निर्देश में विधायक-मंत्रियों से वेतन के साथ ही उन्हें मिलने वाले विभिन्न भत्तों को भी जमा करने को कहा गया है। उन्हें इस बाबत विधानसभा स्थित एसबीआइ की बैंक शाखा को लिखित तौर पर जानकारी देने को भी कहा गया है। ये रुपये पहले विधानसभा में तृणमूल संसदीय दल के फंड में जमा होंगे और वहां से स्टेट इमरजेंसी रिलीफ फंड में ट्रांसफर कर दिए जाएंगे। विस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक मासिक वेतन और विभिन्न भत्ते मिलाकर एक विधायक को करीब 80 हजार रुपये मिलते हैं।

जरूरी चीजों की आपूर्ति के लिए बनी अंतर मंत्रालयी टास्क फोर्स

कवायद ▶ ट्रेन, ट्रक और कारगो सेवाओं से पहुंचाया जा रहा आवश्यक सामान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोविड-19 संकट के दौरान आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने भेषज सचिव (फार्मा सेक्रेटरी) की अध्यक्षता में अंतरमंत्रालयी लॉजिस्टिक्स टास्क फोर्स का गठन किया है। इसके अलावा औद्योगिक संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग ने भी आवश्यक वस्तुओं की समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए एक कंट्रोल रूम स्थापित किया है। यहां से देश भर में सामान की डिलीवरी की स्थिति की रियल टाइम मानीटरिंग के साथ इस मुहिम में शामिल सभी स्टेकहोल्डर्स की शिकायतों का समाधान किया जा रहा है।

रेलवे, सड़क मार्ग से सामान पहुंचाने वाले ट्रकर और ट्रांसपोर्टर तथा एयरलाइनें सभी इसी टास्क फोर्स के दिशा निर्देशों के अनुसार देश के विभिन्न इलाकों में आवश्यक वस्तुएं पहुंचाने का काम कर रही हैं। इससे एक ओर जहां जनता को जरूरी चीजें उपलब्ध हो पा रही हैं, वहीं दूसरी ओर परिवहन क्षेत्र को भी बड़ा संबल मिला है। उन्हें लगता है कि कोरोना लॉकडाउन के दौरान देश भर में लोगों के लिए खाने-पीने के जरूरी सामान, फल-सब्जियों, दवाओं तथा कोरोना रोधी साज-सामान की आपूर्ति करके वे कुछ हद तक अपने घाटे की भरपाई कर सकती हैं।

पिछले चार दिनों में रेलवे ने डेढ़ लाख से ज्यादा वैगनो के जरिए आपूर्ति शृंखला को बनाए रखने में योगदान किया है। इनमें से एक लाख वैगनों में अनाज, फल, सब्जी, अंडा, नमक, खाद्य तेल, कोयला, उर्वरक और पेट्रोलियम उत्पादों जैसी जरूरी चीजों की ढुलाई की गई। दूसरी ओर राज्यों के सहयोग से ट्रकों के जरिए सड़क मार्ग से भी आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई बरकरार रखने के उपाय भी केंद्र द्वारा किए गए है। इसके लिए जहां राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल वसूली रोकने का फैसला किया गया है, वहीं गृह मंत्रालय द्वारा राज्य सरकारों को आवश्यक वस्तुओं से लदे ट्रकों का आवागमन बेरोकटोक रखने एवं ट्रक ड्राइवरों की मदद का निर्देश दिए जाने के बाद विभिन्न हाईवे पर शुरू में लगी ट्रकों की लंबी लाइनें अब खत्म हो गई हैं और जरूरी सामान लोगों तक पहुंचने लगा है। इस बीच एयरलाइनें भी व्यवसाय को स्थिरता प्रदान करने के लिए इमरजेंसी कारगो सेवाएं प्रदान करने में कर रही हैं। एयर इंडिया ने पहले ही इसका एलान कर दिया था। वो अपने यात्री विमानों के निचले हिस्से (अंडरबेली) में कोरोना से जुड़ी जरूरी वस्तुओं जैसे मास्क, सेनेटाइजर, वेंटीलेटर आदि से संबंधित कारगो की ढुलाई कर रही हैं।

एयर इंडिया के कार्यकारी निदेशक (कारगो) निर्भीक नारंग के अनुसार एयर इंडिया दो चार्टर्ड कारगो विमानों का इस्तेमाल मास्क, सेनेटाइजर तथा अन्य उपकरणों की आपूर्ति के लिए किया जा रहा है। शुक्रवार को इन विमानों ने दिल्ली से आइजवाल, आइजवाल से कोलकाता, कोलकाता से अहमदाबाद और अहमदाबाद से दिल्ली के बीच उड़ाने भरीं।

शुक्रवार को स्पाइसजेट ने भी अपने पांच विमानों को कारगो सेवाओं में लगाने का फैसला किया। स्पाइसजेट के सीएमडी अजय सिंह ने कहा कि हम जितना हो सकेगा उतनी सरकार की मदद करेंगे। स्पाइसजेट की कारगो शाखा स्पाइस एक्सप्रेस दवाओं मेडिकल उपकरणों के अलावा फल-सब्जियों की खेप बंगलूर, पटना, चेन्नई, अहमदाबाद, रायपुर, हैदराबाद, जयपुर, विशाखापत्तनम, श्रीनगर, त्रिवेंद्रम, वडोदरा कोच्चि, गुवाहाटी, जम्मू, लखनऊ जैसे देश के विभिन्न शहरों के अलावा पड़ोसी तथा खाड़ी देशों में पहुंचाने का काम कर रही है।

कोरोना संकट के कारण सरकार ने सभी अंतरराष्ट्रीय और घरेलू यात्री उड़ानों पर 14 अप्रैल तक प्रतिबंध लागू कर दिया है। केवल अत्यावश्यक चार्टर्ड उड़ानें ही डीजीसीए की विशेष अनुमति से आ-जा रही हैं।

घर में रहने के बजाय मस्जिद में जुटने की तृणमूल नेता कर रहे अपील

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : कोरोना के चलते लोगों को घरों में रहने के लिए देशभर में 21 दिनों का लॉकडाउन किया गया है। यहां तक कि बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी खुद लोगों को सोशल डिस्टेंसिंग (एक-दूसरे से दूरी) समझाने के लिए सड़क पर उतर रही हैं और दुकानों के सामने गोल घेरा बनाकर जागरूक कर रही हैं। लेकिन, उन्हीं की पार्टी के नेता लोगों से कोरोना को मारने के लिए अजान (प्रार्थना) में जुटने की अपील कर रहे हैं। कोलकाता के नाखुदा और टीपू सुल्तान मस्जिद समेत सभी प्रमुख मस्जिदों में सामूहिक नमाज पर रोक लग चुकी है, पर नेता जी हैं कि मानने को तैयार ही नहीं हैं।

केंद्र और राज्य सरकार के लॉकडाउन के आदेश की खिल्ली उड़ाते हुए तृणमूल नेता अख्तर हुसैन ने कहा कि अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ताली बजाकर कोरोना को रोक सकते हैं तो क्यों न हमें इसे हराने के लिए अजान (प्रार्थना) में जुटना चाहिए। पीएम मोदी ने 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दौरान शाम पांच बजे मीडियाकर्मियों, स्वास्थ्यकर्मियों और पुलिस का हौसला बढ़ाने के लिए लोगों से पांच मिनट तक ताली, घंटी या थाली बजाने की अपील की थी। जब अख्तर हुसैन से उनकी इस अपील के बारे में पूछा तो उन्होंने ढिठाई के साथ सवाल किया, 'क्या अब तक कोरोना बीमारी का कोई इलाज पता चला है? अगर हम प्रार्थना के जरिये इससे लड़ना चाहते हैं तो उसमें बुराई क्या है? मैंने कहा है कि कोरोना को अजान से रोका जा सकता है।

मध्य प्रदेश में भी मदद को बढ़े हाथ

राज्य ब्यूरो, भोपाल

कोरोना को लेकर जारी इस संकट की घड़ी में मध्य प्रदेश में भी लोगों ने मदद का हाथ आगे बढ़ाया है। भोपाल की बरकतउल्ला विवि, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विवि समेत प्रदेश के कई सरकारी कॉलेजों के प्रोफेसरों ने एक दिन का वेतन मुख्यमंत्री राहत कोष में देने की घोषणा की है। 70 हजार अतिथि शिक्षक भी एक दिन का मानदेय मुख्यमंत्री राहत कोष में देंगे।

इंदौर से मध्य प्रदेश सहित देश के कई हिस्सों में दवाइयां व अन्य सामग्री लेकर रोजाना 10 से ज्यादा ट्रक जाएंगे। इसके लिए कलेक्टर लोकेश जाटव ने आरटीओ जितेंद्र रघुवंशी को रोजाना वाहनों की व्यवस्था करने के लिए कहा है।

इस्तीफा लिया वापस : कोरोना वायरस संक्रमण के चलते श्योपुर जिला अस्पताल के डॉ. संजय जैन ने इस्तीफा वापस ले लिया है। जिला क्षय केंद्र में पदस्थ डॉ. जैन ने 28 फरवरी को सिविल सर्जन डॉ. आरबी गोयल को इस्तीफा दे दिया था। इस्तीफे में एक महीने पहले पूर्व की सूचना थी, जिसके तहत 28 मार्च को डॉ. जैन अपनी सेवाएं बंद कर देते, लेकिन इसी बीच कोरोना संक्रमण का खतरा बढ़ा। अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ती देख डॉ. जैन ने शुक्रवार को इस्तीफा वापस ले लिया है।

नेता भी आए आगे

कोरोना से निपटने के लिए केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 50 लाख, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने 25 लाख और सांसद विवेक तन्खा ने सांसद निधि से 60 लाख रुपये दिए हैं। लोकतंत्र सेनानी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैलाश सोनी ने भी मुख्यमंत्री सहायता कोष में एक लाख रुपये देने की घोषणा की है। केंद्रीय संस्कृति व पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रहलाद पटेल ने दमोह संसदीय क्षेत्र के सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के लिए 75 लाख रुपये की राशि सांसद निधि से दी है। यह राशि कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते बीमारी की रोकथाम के लिए आवश्यक चिकित्सीय सामग्री खरीदने के लिए प्रदान की है।

शांतिकुंज ने सीएम राहत कोष में दिए एक करोड़

जागरण संवाददाता, हरिद्वार : गायत्री तीर्थ शांतिकुंज ने कोरोना संक्रमण से बचाव और राहत अभियान के लिए राज्य सरकार को आर्थिक सहायता के तौर पर मुख्यमंत्री राहत कोष में एक करोड़ रुपये दिए हैं। शुक्रवार को शांतिकुंज प्रमुख डॉ. प्रणव पंड्या ने शहरी विकास मंत्री मदन कौशिक को शांतिकुंज में धनराशि का चेक भेंट किया। इस मौके पर गायत्री परिवार प्रमुख ने कहा कि गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्यश्री ने कहा कि मानवता की सेवा ही सच्चा धर्म है। इस वाक्य को आदर्श वाक्य मानते हुए पूर्व की भांति इस विषम परिस्थिति में गायत्री परिवार खड़ा है। बताया कि शांतिकुंज आपदा प्रबंधन दल द्वारा गरीब व असहाय लोगों के लिए भोजन की भी व्यवस्था बनाई जा रही है।

गुजरात में मेडिकल कॉलेज के डीन की पत्नी संक्रमित

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

गुजरात में मेडिकल कॉलेज के डीन की पत्नी की जांच रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई है। इसके बाद डीन और डॉक्टर समेत 100 से ज्यादा लोगों को क्वारंटाइन किया गया है। राज्य में संक्रमितों की संख्या 44 हो गई है। इनमें से 18 लोग लोकल ट्रांसमिशन के शिकार हुए हैं। इनमें से 16 विदेश से लौटे लोगों के संपर्क में आए थे, जबकि दो व्यक्ति जयपुर और दिल्ली से लौटे थे। हालांकि, राज्य में पिछले चौबीस घंटे के दौरान कोई नया मामला सामने नहीं आया है।

अंडमान-निकोबार पहुंचा वायरस : इसके अलावा राजस्थान में सात नए मामले मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 50 हो गई है। आठ नए मामलों के साथ उत्तर प्रदेश में 51, एक नए केस के साथ दिल्ली में 40 और पांच नए मामलों के साथ पंजाब में संक्रमितों की संख्या 38 हो गई है। मध्य प्रदेश में पिछले चौबीस घंटे में चार नए केस सामने आए हैं और यह संख्या 30 हो गई है। जबकि, जम्मू-कश्मीर में चार नए मामले सामने आए हैं और पीड़ितों का आंकड़ा 18 हो गया है और दो नए केस के साथ बिहार में नौ संक्रमित हो गए हैं। यह खतरनाक वायरस अंडमान निकोबार द्वीप समूह तक फैल गया है और वहां छह पॉजिटिव केस पाए गए हैं।

कोरोना का प्रसार	
केरल	164
महाराष्ट्र	153
कर्नाटक	62
तेलंगाना	59
गुजरात	44
उत्तर प्रदेश	51
राजस्थान	50
दिल्ली	40
पंजाब	38
तमिलनाडु	35
मध्य प्रदेश	30
लद्दाख	13
जम्मू-कश्मीर	18
आंध्र प्रदेश	10
बंगाल	10
चंडीगढ़	7
बिहार	9
छत्तीसगढ़	6
अंडमान-निकोबार	6
उत्तराखंड	5
हिमाचल प्रदेश	3
ओडिशा	2
पुडुचेरी	1
मणिपुर	1
मिजोरम	1

सुरक्षा के लिए निवेदन...

आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में शुक्रवार को राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के दौरान पुलिस ने लोगों से मास्क पहनने और घर में ही रहने के लिए हाथ जोड़कर निवेदन किया। देशभर में लगातार लोगों से घरों पर रहने की अपील की जा रही है। रायटर

मप्र के भाजपा विधायक सीताराम की सेहत बिगड़ी, घर में आइसोलेट

नईदुनिया, विजयपुर : मध्य प्रदेश के विजयपुर से भाजपा विधायक सीताराम आदिवासी की सेहत बिगड़ गई है। कोरोना वायरस के लक्षणों के चलते जिला अस्पताल ने उनके सैंपल ग्वालियर भेजे हैं। जांच रिपोर्ट आने तक उनको उनके घर में ही आइसोलेट कर दिया गया है।

गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस सरकार के अल्पमत में आने के बाद भाजपा के अन्य विधायकों के साथ सीताराम आदिवासी भी छह-सात दिन तक हरियाणा के होटलों में रहे थे। इसके बाद तीन दिन सीहोर और एक दिन भोपाल में भी रुके थे। दो दिन पहले ही वह गांव आए और कलेक्टर प्रतिभा पाल को बताया कि प्रशासन चाहे तो उनकी जांच करा सकता है, क्योंकि वह कई शहरों में रहकर आए हैं। शुक्रवार सुबह वह जिला अस्पताल पहुंचे और बुखार, सर्दी, सूखी खांसी और सांस लेने में तकलीफ बताई। जांच रिपोर्ट न आने तक जिला अस्पताल के आइसोलेट वार्ड में विधायक को भर्ती करने की सलाह दी गई, लेकिन विधायक सीताराम अस्पताल में रहने को राजी नहीं हुए और डॉक्टरों को भरोसा दिलाया कि वह अपने घर के एक कमरे में सबसे अलग रहेंगे।

असर

चिड़ियाघरों में स्वच्छंद महसूस कर रहे, बाड़े में रहने वाले अब चढ़ रहे पेड़ों पर, बेसहारा श्वान बिन भोजन हो रहे हैं उग्र

लॉकडाउन से पशुओं के व्यवहार में आया बदलाव

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

संपूर्ण देश में लॉकडाउन के बाद बदले हालात में पशुओं के व्यवहार में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। भीड़भाड़ नहीं होने से चिड़ियाघरों में पशु-पक्षी खुद को प्राकृतिक वातावरण में स्वच्छंद महसूस कर रहे हैं। यही वजह है कि चिड़ियाघरों में अमूनन बाड़ों में रहने वाले पशु अब खुले आसमान में विचरण कर रहे हैं। उधर, बेसहारा श्वान (कुत्ते) भोजन को तरस जाने से उग्र हो रहे हैं।

कोरोना के डर के बीच लॉकडाउन वन्य जीवों के लिए सौगात लेकर आया है। अब नैनीताल चिड़ियाघर में बाघ धूप सेंकने के लिए पेड़ पर चढ़ जाता है। आराम करने के लिए अब उसे छिपना नहीं पड़ रहा। भालू भी गुफा के ऊपर ही बैठ रहा है। इनके भोजन सहित अन्य जिम्मेदारी निभा रहे चिड़ियाघर कर्मी भी व्यवहार में आए बदलाव से हैरान हैं। नैनीताल स्थित गोविंद बल्लभ पंत प्राणी उद्यान में 233 वन्य जीव हैं। इनमें चार बाघ,

उत्तराखंड के नैनीताल स्थित चिड़ियाघर में भालू। लॉकडाउन के कारण भीड़ न होने के कारण यहां जीव स्वच्छंद चलहकदमी कर रहे हैं। जागरण

सात लेपर्ड, दो तिब्बती भेड़, चार हिमालयन भालू, तिब्बती बिज्जू, रेड पांडा, काली चील के दीदार के लिए बड़ी संख्या में सैलानी पहुंचते थे। बायोलॉजिस्ट डॉ. रेखा पलड़िया के अनुसार अभी लॉकडाउन से चिड़ियाघर में सन्नाटा है। इससे सभी वन्य जीव मस्ती कर रहे हैं। यहां उन्हें जंगल जैसा वातावरण मिल रहा है। आम दिनों में जब पर्यटक आते थे तो गुलदार, बाघ, भालू छिप जाते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। वन्य जीव व्यवहार में बेहद शर्मीले होते हैं और प्रकृति के करीब होते हैं। लिहाजा लॉकडाउन में सभी मस्ती कर रहे हैं।

डॉक्टर बोले- बढ़ सकती है स्पर्धा : कोलकाता के पशु चिकित्सक डॉक्टर शशांक त्रिपाठी ने बताया कि हालात अगर ऐसे ही बने रहे तो भोजन नहीं मिलने पर कुत्तों में आपसी प्रतिस्पर्धा की भावना काफी बढ़ जाएगी। उन्हें जहां भी थोड़ा सा भी भोजन दिखेगा, वे उसपर टूट पड़ेंगे। हालांकि, भोजन के लिए उनके इंसानों पर हमला करने की आशंका कम है, क्योंकि आम तौर पर कुत्तों की प्रवृत्ति ऐसी होती है कि भोजन नहीं मिलने पर वे एक जगह पड़े-पड़े दम तोड़ देते हैं। जो लोग नियमित रूप से कुत्तों को भोजन कराते हैं, कुत्ते हर रोज उसी समय उनकी बाट जोहते हैं। उन लोगों के नहीं आने से उनमें बेचैनी बढ़ सकती है।

इसलिए नहीं मिल पा रहा भोजन

उधर, जानलेवा कोरोना के कारण इंसान ही नहीं, जानवरों की जान पर भी आफत आ गई है। दरअसल, लॉकडाउन के कारण लोगों के घरों से नहीं निकलने से श्वान को भोजन की भारी किल्लत हो गई है। यह स्थिति कई ज्यादातर राज्यों में है। भोजन न मुहैया करा पाने के कारण कोलकाता के कई डॉग शेल्टर से काफी संख्या में कुत्तों को छोड़ दिया गया है, जिससे सड़कों पर उनकी तादाद और बढ़ गई है।

बारिश से घटा तापमान, बढ़ी चिंता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

यह अटकल है कि मौसम में गरमाहट के साथ ही कोरोना का दंश भी कम होगा। और यही कारण है कि शायद पहली बार लोग वसंत के जाने और मौसम के गरमाने का इंतजार कर रहे थे। यूं तो चैत की शुरुआत हो गई है, लेकिन अब भी आए दिन हो रही बारिश से तापमान क्या घटा, लोगों की धुकधुकी और तेज हो गई है। हर साल के मुकाबले इस बार फागुन माह में तेज पतझड़ और गरम हवाएं अभी तक नहीं चलीं। उत्तर भारत में तापमान 20 से 27 डिग्री सेल्यिस के बीच झूल रहा है।

वैसे तो भारत में गरमी का पहला झोंका दक्षिणी क्षेत्र से आता है, लेकिन इस बार चेन्नई में भी 27 मार्च को पारा 34 डिग्री सेल्सियस पर अटका हुआ है। भारत में कोरोना वायरस के मद्धिम पड़कर निष्क्रिय हो जाने की संभावना अप्रैल के पहले सप्ताह तक है। दरअसल, उस समय तक उत्तर से लेकर दक्षिणी राज्यों तक में लू चलने की शुरुआत हो जाती है, जो इस बार नहीं हो पा रही है।

भारतीय मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि अगले सप्ताह भी पश्चिमी विक्षोभ (वेस्टर्न डिस्टरबेंस) के चलते पहाड़ी राज्यों के साथ उत्तरी क्षेत्र में तेज हवाओं के साथ बारिश हो सकती है। देश के सभी राज्यों में तापमान सामान्य से कम दर्ज किया गया है। पिछले एक सप्ताह से देश के किसी हिस्से में अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्यिस से ऊपर नहीं पहुंचा। जबकि मार्च के आखिरी सप्ताह से लेकर अप्रैल के पहले सप्ताह तक तापमान 40 डिग्री के आसपास ही रहता रहा है। लेकिन सेंट्रल और दक्षिणी भारत में अप्रैल के दूसरे सप्ताह तक गरमी रफ्तार पकड़ सकती है।

कोरोना वायरस के प्रकोप को लेकर आए एक विश्लेषण में यह ट्रेंड देखा गया कि जिन क्षेत्रों में गरमी और ऊमस ज्यादा है, वहां इसकी रफ्तार थोड़ी थमी है। चीन के एक विश्वविद्यालय में एक अध्ययन किया गया। वहां के 100 शहरों में तापमान बढ़ने पर संक्रमित लोगों की संख्या में थोड़ी कमी आई। आशा की इन्हीं किरणों के मद्देनजर लोग गरमी का स्वागत करने को उत्सुक हैं।

फिलहाल मास टेस्टिंग की जरूरत नहीं : आइसीएमआर

सतर्कता ▶ कोरोना मरीज मिलने पर इलाके की हो रही कड़ी निगरानी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

तेजी से बढ़ रहे आंकड़ों के बावजूद कोरोना के प्रसार पर कुछ हद तक नियंत्रण के दावों के बीच यह भी सवाल उठ रहा है कि क्या भारत में पर्याप्त संख्या में कोरोना टेस्टिंग की जा रही है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) का साफ मानना है कि जितने जरूरी हैं उतने टेस्ट किए जा रहे हैं। अभी मास टेस्टिंग की जरूरत नही है। आइसीएमआर ने फिलहाल वैक्सीन के ट्रायल से भी इन्कार किया है। हालांकि डब्लूएचओ के सॉलिडेरिटी ट्रायल में भारत शामिल होगा।

आइसीएमआर के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर ने कहा कि भारत कोरोना वायरस के वैश्विक फैलाव पर नजर रखे हुए है और भारत में उसके खतरे के मद्देनजर सारी तैयारियां की जा रही हैं। उन्होंने देश में लैब टेस्ट के लिए किट की कमी होने के कारण बड़े पैमाने पर जांच शुरू नहीं करने के आरोपों का खंडन किया। डॉक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि देश में जांच किट की कोई कमी नहीं है और चीन समेत दुनिया के सभी देशों में किट निर्माताओं के साथ संपर्क में हैं। उन्होंने कहा कि कम्युनिटी ट्रांसमिशन के फेज में नहीं पहुंचने के कारण अभी मास लेवल पर टेस्ट की जरूरत नहीं है।

उन्होंने कहा कि भारत में बड़ी संख्या में कोरोना वायरस के केस नहीं होने के कारण अभी भारतीय वैक्सीन का परीक्षण संभव नहीं है। लेकिन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी पुणे कोरोना की जांच के लिए सस्ती किट तैयार करने पर काम कर रहा है।

कोरोना वायरस के कम्युनिटी ट्रांसमिशन फेज में नहीं पहुंचने का दावा करते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि जिस भी इलाके में इसके मामले मिल रहे हैं, उन पर खास नजर रखी जा रही है। जिन इलाकों में एक-दो केस भी मिले हैं, वहां स्थानीय जिला व राज्य प्रशासन की मदद से विशेष टीमें तैयार कर निगरानी की जा रही है। अधिक केस मिलने की स्थिति में केंद्रीय टीम को वहां भेजा जा रहा है। निगरानी के दौरान केस मिलने वाली जगह के एक बड़े इलाके की पहचान कर वहां सांस की गंभीर बीमारियों से पीड़ित होने वाले मरीजों पर विशेष नजर रखी जाती है ताकि यह देखा जा सके कि कहीं उस इलाके में कोरोना वायरस कम्युनिटी के स्तर पर तो नहीं पहुंच गया है। लेकिन भारत में अभी तक इसका कोई सुबूत नहीं मिला है।

देश में वेंटिलेटर, एन-95 मास्क और पीपीई की कमी के बारे में पूछे जाने पर लव अग्रवाल ने कहा कि देश के भीतर इनके बनाने में शुरुआती दिक्कतों को दूर कर दिया गया है।

भारत में पीपीई और एन-95 मास्क का निर्माण शुरू हो गया है। एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम को 10 हजार वेंटिलेटर का ऑर्डर दिया जा चुका है और बीईएल के साथ 30 हजार वेंटिलेटर की आपूर्ति के लिए बातचीत चल रही है। साथ ही भविष्य की रणनीति तय करने के लिए टास्क फोर्स की लगातार बैठक हो रही है।

जांच प्रणाली के फुलप्रूफ नहीं होने की बात नकारी

राज्यों को लिखे कैबिनेट सचिव के पत्र में विदेश से आए लोगों की निगरानी की प्रणाली के फुलप्रूफ नहीं होने की बात स्वीकार किए जाने के बारे में पूछे जाने पर लव अग्रवाल ने कहा कि कैबिनेट सचिव के पत्र का आशय ऐसा नहीं है। कैबिनेट सचिव ने राज्यों की अभी तक बहुत बढ़िया काम की तारीफ करते हुए आगे भी विदेश से आए लोगों पर कड़ी निगरानी बनाए रखने को कहा है। लव अग्रवाल ने कहा कि शुक्रवार को स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने सभी राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये कोरोना की तैयारियों की समीक्षा की। साथ ही हर्षवर्धन ने राज्यों को लॉकडाउन के दौरान डॉक्टरों व नर्सों के आने-जाने की समुचित व्यवस्था करने का निर्देश दिया।

चौथा नवरात्र

घर में ही करें मां दुर्गा का पाठ

- श्रद्धालु घर बैठे ही ऑनलाइन कर सकते हैं मां बज्रेश्वरी देवी के दर्शन
- पुजारी ने कहा- सरकार के दिशानिर्देश को बंधन न समझें, इसका पालन करें

जागरण संवाददाता, कांगड़ा : यह पहला अवसर है जब चैत्र नवरात्र के दौरान श्री बज्रेश्वरी देवी मंदिर के दरवाजे बंद रख पूजा-अर्चना की गई है। मंदिर के पुजारी राम प्रसाद शर्मा ने कहा कि हालांकि श्रद्धालुओं के लिए यूट्यूब पर मां की आरती का लाइव प्रसारण किया जाएगा। श्रद्धालु घर बैठे ही मां के मंदिर का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। बताया कि कोरोना वायरस से निपटने के लिए प्रशासन ने मंदिर के कपाट बंद कर दिए हैं। मंदिर में सिर्फ दो समय ही आरती की जा रही है। इस बार मंदिर में शतचंडी महायज्ञ का भी आयोजन नहीं होगा। उन्होंने सभी भक्तों से अपील की है कि वे घर में बैठकर ही मां की पूजा अर्चना करें। हम सब को अपने साथ-साथ दूसरों की सेहत का भी ध्यान रखना है। देश के हर नागरिक का दायित्व है कि सरकार के दिशानिर्देश को बंधन न समझें बल्कि इसका पूरी तरह पालन करें। संकट की घड़ी में सजग रहकर ही स्वस्थ रहा जा सकता है।

देवी पूजा घर में

राम प्रसाद शर्मा, मंदिर के पुजारी

आस्था का केंद्र : बज्रेश्वरी देवी मंदिर हिंदू, मुस्लिम और सिख धर्मों की आस्था का केंद्र है। यहां तीन ही गुंबद हैं और मां की पिंडियां भी तीन ही हैं। मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित मुख्य पिंडी मां बज्रेश्वरी, दूसरी मां भद्रकाली और तीसरी मां एकादशी की है। मां के इस शक्तिपीठ में ही उनके परम भक्त ध्यानु ने शीश अर्पित किया था। इसलिए मां के भक्त, जो ध्यानु के अनुयायी भी हैं, पीले रंग के वस्त्र धारण कर मंदिर में आते हैं। इनमें से अधिकतर उत्तर प्रदेश से संबंधित हैं।

आइसोलेशन वार्ड में तब्दील किए जाएंगे ट्रेन के कोच

संतोष कुमार सिंह, नई दिल्ली

कोरोना से जंग में रेल प्रशासन भी पूरी ताकत से जुटा हुआ है। किसी भी आपातस्थिति से निपटने के लिए ट्रेन के कोच को आइसोलेशन वार्ड में बदलने की तैयारी है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की देखरेख में उत्तर रेलवे इसका मॉडल तैयार करेगा।

कोरोना वायरस का संक्रमण रोकने के लिए 22 मार्च से ही पूरे देश में ट्रेनों की आवाजाही बंद है। सभी रैक यार्ड या रेलवे स्टेशनों पर खड़े हैं। पिछले कई दिनों से ट्रेन के कोच को आइसोलेशन वार्ड में बदलने की संभावनाओं पर चर्चा हो रही थी। अब महाप्रबंधकों को इस दिशा में काम करने को कहा गया है। इसके लिए कोच में कुछ बदलाव भी करना होगा, जिससे कि मरीजों को बगैर किसी परेशानी के उसमें रखा जा सके। रेल अधिकारियों का कहना है कि यदि वातानुकूलित तृतीय (थर्ड एसी) श्रेणी या स्लीपर कोच को आइसोलेशन वार्ड में बदलने का निर्णय लिया जाता है तो इसके बीच वाली सीट (मिडिल बर्थ) को हटाना होगा। साथ ही, मिडिल और अपर बर्थ पर चढ़ने के लिए लगाई गई सीढ़ी भी हटानी होगी।

स्नान की होगी व्यवस्था : शौचालय में भी बदलाव करना होगा। प्रत्येक कोच में दोनों तरफ भारतीय व पश्चिमी शैली के एक-एक शौचालय होते हैं। भारतीय शैली वाले शौचालय को स्नानघर के रूप में बदला जा सकता है। इसके लिए शौचालय में लकड़ी का प्लेटफॉर्म तैयार करके रखा जा सकता है। यह ध्यान देना होगा कि पानी आसानी से निकल जाए। इसके साथ ही उसमें हैंड शावर, साबुनदानी, बाल्टी, मग आदि की व्यवस्था करनी होगी। प्रत्येक सीट के पास अतिरिक्त बोतल होल्डर लगाने के साथ ही चिकित्सा उपकरणों के रखने की व्यवस्था जरूरी है।

> जरूरत के अनुसार, यार्ड में रखे गए कोच का सुदपयोग किया जाना चाहिए। एक कोच में आठ से दस मरीज रखे जा सकते हैं। कर्मचारियों की सुरक्षा का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। उन्हें अभी से प्रशिक्षित किए जाने की जरूरत है ताकि वे संक्रमण की चपेट में नहीं आ सकें।
>
> **-एसएन मलिक (अध्यक्ष, उत्तरी रेलवे मजदूर यूनियन)**

> खाली रैक का इस्तेमाल स्वास्थ्य सेवा के लिए किया जा सकता है। रेलवे, स्वास्थ्य विभाग और सेना की संयुक्त टीम बननी चाहिए। एक सौ ट्रेन रेक आइसोलेशन वार्ड में तब्दील किए जाएं जिससे कि जरूरत के अनुसार संक्रमित व संदिग्ध मरीजों को अलग रखकर इलाज किया जा सके।
>
> **-इंद्रजीत सिंह (प्रांत मंत्री, भारतीय मजदूर संघ)**

दिल्ली, मुंबई से पटना उड़ान भरने को तैयार है स्पाइसजेट

नई दिल्ली, प्रेट्र : स्पाइसजेट ने सरकार से पेशकश की है कि वह 21 दिनों के लॉकडाउन के दौरान जरूरत पड़ने पर फंसे हुए प्रवासी कामगारों की मदद के लिए मानवीय आधार पर दिल्ली और मुंबई से पटना उड़ान भरने के लिए तैयार है। उल्लेखनीय है कि 14 अप्रैल की मध्यरात्रि तक घरेलू और अंतरराष्ट्रीय यात्री उड़ानों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इस बीच, इंडिगो और गोएयर ने भी कोरोना वायरस के खिलाफ सरकार के सामने जरूरत पड़ने पर उड़ान के लिए तैयार रहने का प्रस्ताव रखा है।

स्पाइसजेट के मुख्य प्रबंध निदेशक अजय सिंह ने बताया कि हमने प्रस्ताव दिया है कि सरकार को यदि हमारी जरूरत पड़े, तो हम मानवीय मिशन के लिए तैयार हैं। हम पहले ही खाद्य पदार्थ, दवा और चिकित्सा सामग्री मालवाहक विमानों से एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा रहे हैं। हम प्रवासी श्रमिकों खासकर बिहार के लोगों की मुसीबतें कम करने के लिए उड़ान भरने को तैयार हैं।

वायरस के खिलाफ उत्पाद विकसित करने में जुटा डीआरडीओ

नई दिल्ली, एएनआइ: डीआरडीओ के चेयरमैन जी सतीश रेड्डी ने कहा है कि उनका संगठन सैनिटाइजरों और कोरोना वायरस से लड़ने के लिए अन्य वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने की खातिर अथक परिश्रम कर रहा है। रेड्डी ने शुक्रवार को बताया डीआरडीओ ने पिछले 15-20 दिनों में दिल्ली पुलिस, सशस्त्र बलों और अन्य सरकारी एजेंसियों को स्वनिर्मित 20,000 बोतल सैनिटाइजर दिया है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री की ओर से आदेश मिलने के बाद डीआरडीओ के वैज्ञानिक कोरोना वायरस के खिलाफ कई तरह के उत्पाद विकसित करने में जुटे हैं। हमारा अगला लक्ष्य प्रतिदिन 10,000 लीटर सैनिटाइजर का उत्पादन करना है। उन्होंने कहा कि हमारे वैज्ञानिक संबंधित उद्योगों के साथ मिलकर दिन-रात काम कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के मुताबिक देश में कोरोना वायरस संकमितों की संख्या में प्रतिदिन बढ़ोतरी हो रही है।

अखबार से नहीं होता कोरोना का संक्रमण

अखबार सुरक्षित है

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- केंद्रीय चिकित्सा आयोग के सदस्य डॉ. हरीश गुप्ता ने कहा, मौजूदा संकट में अखबारों की भूमिका अहम
- यूरोलॉजिस्ट डॉ. अनिल गोयल का परिवार रोज पढ़ रहा अखबार, संक्रमण की आशंका को नकारा

डॉ. अनिल गोयल फाइल

डॉ. हरीश गुप्ता फाइल

वैश्विक स्तर पर महामारी घोषित हो चुकी कोरोना के खिलाफ लड़ाई में मजबूती के साथ खड़े अखबारों को लेकर अफवाह से विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ चिंतित हैं। केंद्रीय चिकित्सा आयोग के सदस्य एवं वरिष्ठ सर्जन डॉ. हरीश गुप्ता का कहना है कि अखबारों से संक्रमण फैलने की आशंका बिल्कुल निराधार है। अभी तक कहीं से ऐसी कोई जानकारी सामने नहीं आई है कि अखबारों से संक्रमण बढ़ा हो। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अखबारों के योगदान की तारीफ कर चुके हैं।

दरअसल, कुछ दिनों से यह अफवाह उड़ रही थी कि अखबारों से कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा है, जबकि विशेषज्ञ मानते हैं कि वास्तव में ऐसा नहीं है। अखबार की प्रिंटिंग से लेकर वितरण तक कार्य बहुत ही सुरक्षित तरीके से किया जाता है। ऐसे में इससे संक्रमण का कोई खतरा नहीं है। डॉ. हरीश गुप्ता ने कहा कि बहुत पहले अखबार में सारा काम हाथों से होता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। लोगों का स्थान मशीनों ने ले लिया है। छपाई के दौरान भी अखबारों को सैनिटाइज किया जा रहा है। ऐसे में इससे कोई खतरा नहीं है। सुबह जो कर्मयोगी आपके पास अखबार लेकर आते हैं वे भी पूरी सावधानी बरत रहे हैं। उन्होंने कहा कि अखबार सूचना का सबसे प्रामाणिक माध्यम हैं। मौजूदा संकट में इनकी भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई है और ये अपनी भूमिका का निर्वाह भी कर रहे हैं। अखबार न केवल जागरूक कर रहे हैं, बल्कि अफवाहों का शिकार होने से भी बचा रहे हैं।

नियमित रूप से पढ़ रहे अखबार : प्रसिद्ध यूरोलॉजिस्ट डॉ. अनिल गोयल का भी मानना है कि अखबारों से संक्रमण फैलने की बात गलत है। उन्होंने बताया कि हम लोग नियमित तौर पर अखबार पढ़ रहे हैं। जब घर या कार्यालय में अखबार सीधे पहुंच रहा है तो कोई खतरा नहीं हो सकता। आज अधिकांश देशों में कोरोना की स्थिति गंभीर हो चुकी है, लेकिन कहीं पर भी अखबार पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया। यह साबित करता है कि अखबारों से संक्रमण नहीं होता है।

कोविड-19 को हराएंगे, बच्चे घर में कार्टून बनाएंगे

अंबुज मिश्र, शाहजहांपुर

- शाहजहांपुर में काटूनिस्ट सैफ ने बच्चों की बोरियत दूर करने का रास्ता ढूंढ़ा
- फेसबुक पर बनाया पेज, कोरोना को लेकर बच्चों के बनाए कार्टून होंगे पोस्ट
- लॉकडाउन खुलने के बाद कार्टूनों की लगेगी प्रदर्शनी, बच्चे होंगे पुरस्कृत

कोरोना वायरस (कोविड19) के संक्रमण के कारण घूमने-फिरने का प्लान तो पहले ही रद हो गया था। लॉकडाउन से बच्चे घरों में ही कैद हो गए हैं। न दोस्तों के साथ खेल सकते हैं और न ही पार्क में जा सकते हैं। टीवी व मोबाइल से भी ऊब चुके कुछ बच्चे गली में निकल जाते हैं, जो सही नहीं है। उप्र के शाहजहांपुर में बच्चों की बोरियत को दूर करने के लिए कार्टूनिस्ट सैफ असलम खां ने क्रिएटिव लॉकडाउन शुरू किया है। इसके लिए फेसबुक व वाट्सएप का सहारा लिया है।

सैफ अब तक घर में मौजूद रिश्तेदारों के बच्चों को कार्टून बनाना सिखा रहे थे। लॉकडाउन की वजह से बच्चों तक नहीं पहुंच सकते, इसलिए उन्होंने कुछ दिन पहले शुरू किए अपने फेसबुक पेज पर अपना वाट्सएप नंबर जारी किया है। बच्चे घर में ड्राइंग बनाएंगे।

जिन्हें अपने नाम पते के साथ उन्हें वाट्सएप करेंगे। ड्राइंग कोरोना के प्रति जागरूक करती होगी, जिसमें मॉस्क लगाना, अच्छे से हाथ धोना या सैनेटाइज करना, हाथ न मिलाना, साफ-सफाई आदि विषय होंगे। इनके आइडिया बच्चे अखबार से भी ले सकेंगे। इन ड्राइंग को सैफ पेज पर पोस्ट करेंगे।

बच्चे भी ले रहे हैं रुचि

लॉकडाउन खत्म होने के बाद बच्चों को पुरस्कृत करेंगे। शहर निवासी सैफ असलम खां दिल्ली में रहकर किताबों के इलस्ट्रेशन के अलावा एनसीआर के स्कूलों में बच्चों के कार्टून व डूडल की वर्कशॉप करते हैं। इस दिनों शाहजहांपुर में ही रह रहे हैं। सैफ असलम खां कहते हैं कि लॉकडाउन के बाद घर में ही रहना कोरोना से बचने का सर्वोत्तम उपाय है। बड़े खुद को किसी न किसी काम में व्यस्त कर लेंगे, लेकिन दिक्कत बच्चों की है। इसलिए सोचा कुछ क्रिएटिव किया जाए। इस कार्य में बच्चे रुचि भी ले रहे हैं।

केंद्रीय विद्यालय और छात्रावास बनेंगे क्वारंटाइन सेंटर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना से लड़ने के लिए सरकार ने मुस्तैदी और बढ़ा दी है। सभी जिलों को स्थानीय स्तर पर मौजूद केंद्रीय विद्यालयों, वृद्धाश्रमों और छात्रावासों को क्वारंटाइन सेंटर के रूप में तैयार करने को कहा है। ताकि जरूरत पड़ने पर कोरोना से संक्रमित लोगों को वहां अलग-अलग रखा जा सके। इससे पहले देश के लगभग हर एक जिले में मौजूदा नवोदय विद्यालयों के छात्रावासों को इसके लिए इस्तेमाल में लेने के निर्देश दिए थे।

सरकार ने यह कदम देश भर में कोरोना से संक्रमित लोगों की बढ़ती संख्या और उनसे और काफी लोगों के संक्रमित होने की आशंका के आधार पर बढ़ते मामलों को देखते हुए लिया है।

दुनिया के दूसरे देशों में जिस तरह से इसके संक्रमण के विस्फोटक तरीके से बढ़ने के मामले सामने आये हैं। उसे देखते हुए और सतर्कता बरती जा रही है। इस बीच मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने केंद्रीय विद्यालयों का भी इसके लिए इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इससे पहले नवोदय विद्यालयों और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने वृद्धाश्रमों को अपने परिसर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए है।

मौजूदा समय में देशभर के करीब 230 जिलों में चार सौ से ज्यादा वृद्धाश्रम है। वहीं देश में करीब 12 सौ केंद्रीय विद्यालय है। इसी तरह लगभग सभी जिलों में शैक्षणिक संस्थानों के पास छात्रावास भी हैं। इनमें एससी-एसटी छात्रावास शामिल हैं। कोरोना के चलते शैक्षणिक संस्थानों के बंद होने से इनमें से ज्यादा छात्रावास मौजूदा समय में खाली है।

फल-सब्जियों के साथ मसालों से बढ़ाएं प्रतिरोधक क्षमता

न्यूट्रीशियन की सलाह

- एम्स में प्रतिदिन करीब 10,000 मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं।
- अभी लाभ पहले से इलाज करा रहे मरीजों को मिलेगा

रितिका समादार, रीजनल हेड, क्लीनिकल न्यूट्रिशन एंड डाइट्स, मैक्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, साकेत, दिल्ली

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जरूरी है कि रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर हो। इसके लिए जरूरी है कि सही समय पर सही चीज का सेवन किया जाए। फल, सब्जी के साथ घर में प्रयोग होने वाले मसाले भी इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। इम्यून सिस्टम को बेहतर करने के साथ इसे बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सभी प्रकार के भोजन का सेवन किया जाए। जिससे शरीर में किसी भी प्रकार के पोषक तत्व की कमी न रहे।

दिल्ली में साकेत स्थित मैक्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल की क्लीनिकल न्यूट्रिशन एंड डाइट्स की रीजनल हेड रितिका समादार बताती हैं कि विटामिन ए, सी और ई, वे एंटी ऑक्सीडेंट हैं जो प्रतिरक्षा को बढ़ाने और आपके वॉरियर सेल्स को बनाने में मदद करते हैं। इसके लिए गाजर, टमाटर, आंवला, संतरे और माल्टा, जामुन और चेरी का भरपूर सेवन करें। शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली का 40 फीसद गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सिस्टम में है। प्रोबायोटिक्स अच्छे बैक्टीरिया होते हैं, जो आंत में रहकर इम्यूनिटी को बढ़ाते हैं। इसलिए इडली और ढोकला, दही या प्रोबायोटिक ड्रिंक्स (याकुल्ट) का एक शॉट रोजाना लें। नींबू विटामिन सी का सबसे अच्छा स्रोत है। यह सीधे तौर पर इम्यूनिटी को बढ़ाता है। खांसी और सर्दी को रोकने में मदद करता है। पानी में निचोड़ा हुआ नींबू का रस पीयें या सूप, दाल और सलाद में मिलाएं।

यह भी आवश्यक

सूक्ष्म मात्रा में जिंक भी शरीर के लिए आवश्यक है। यह इम्यून सिस्टम को बेहतर करके हमलावर बैक्टीरिया और वायरस से लड़ने में मदद करता है। जिंक की मात्रा शरीर में बनाए रखने के लिए बीज और नट्स हैं।

घर की रसोई में जो मसाले होते हैं, वे भी शरीर के लिए जरूरी हैं। हल्दी, अदरक, दालचीनी और काली मिर्च न केवल भोजन का स्वाद बदलते हैं बल्कि इम्यूनिटी लेवल को भी बढ़ाते हैं और वायरस, संक्रमण और सूजन से लड़ते हैं।

जरूरी है इनका सेवन

- विटामिन ए, सी और ई। जैसे गाजर, टमाटर, आंवला, संतरे, जामुन और चेरी।
- प्रोबायोटिक्स ड्रिंक्स। जैसे इडली और ढोकला, दही।
- सूप, दाल और सलाद में नींबू का रस।

डेरा सच्चा सौदा ने की मदद की पेशकश

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

कोरोना वायरस से लड़ाई में मदद करने के लिए सिरसा स्थित डेरा सच्चा सौदा भी आगे आया है। डेरा प्रबंधन ने मदद की पेशकश करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल और पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को पत्र लिखा है। पत्र में कहा गया है कि यदि सरकारें चाहें तो डेरा प्रेमी सैनिटाइजेशन व अन्य कार्यों में सहयोग दे सकते हैं।

डेरा प्रमुख गुरमीत राम रोहतक की सुनारियां जेल में बंद हैं। डेरा सच्चा सौदा की चेयरपर्सन ने केंद्रीय गृह मंत्री और दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों को अलग-अलग पत्र लिखे हैं। चेयरपर्सन विपासना हैं, लेकिन इन पत्रों पर नाम न होकर सिर्फ हस्ताक्षर हैं। इन पत्रों में कहा गया है कि शाह सतनाम जी ग्रीन एस वेलफेयर फोर्स विंग के सेवादार मौजूदा परिस्थितियों में जन जागरण व सैनिटाइजेशन करने के लिए तैयार हैं। जहां भी जरूरत होगी, सेवादार वहीं पर सेवा करने के लिए पहुंच जाएंगे। डेरा सच्चा सौदा सिरसा के सेवादार वैसे तो पूरे देश में हैं, लेकिन उत्तर भारत में इसके अनुयायी सबसे ज्यादा हैं।

डॉक्टर का कहना है

राजेंद्र मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के डॉ. प्रदीप दास की सलाह, कोरोना की चेन तोड़ने में न करें कोई लापरवाही

घर में लॉकडाउन रहें, गली-मोहल्ले में भी न निकलें

जागरण संवाददाता, पटना

देश के जाने-माने वैज्ञानिकों में शुमार पटना स्थित राजेंद्र मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरएमआरआइ) के निदेशक डॉ. प्रदीप दास का कहना है कि कोरोना की चेन को तोड़ने के लिए घर में लॉकडाउन हैं तो भी सावधानी बरतें। गली-मोहल्ले में भी नहीं निकलें। इसके लिए पुलिस या किसी के टोकने का इंतजार न करें। आपकी जवाबदेही अपने साथ परिवार और समाज के लोगों की जिंदगी बचाने की भी है।

टॉयलेट की सफाई रखें : घर के टॉयलेट का एक व्यक्ति के इस्तेमाल करने के बाद फिनाइल, डिटॉल या ब्लीचिंग पाउडर के साथ गरम पानी डालने के बाद ही दूसरा व्यक्ति इस्तेमाल करे।

आरएमआरआइ के निदेशक डॉ. प्रदीप दास। जागरण अर्काइव

एक साथ न धोएं कपड़े

घर के सभी सदस्यों के कपड़ों को एक साथ मिलाकर न धोएं।

खाते समय भी दूर रहें

खाने के बरतन शेयर न करें। खाना खाते समय भी एक-दूसरे से दूरी बनाए रखें।

नाक में अंगुली न डालें

कुछ लोगों की आदत होती है कि नाक में अंगुली डालते रहते हैं। ऐसा हरगिज न करें। ध्यान रहे कोरोना वायरस के संक्रमण की एक बड़ी वजह यह भी है।

पैकेट को सैनिटाइज करें

बाहर से पैकेट में आने वाले दूध व अन्य खाने-पीने की चीजों को निकालने से पहले पैकेट को सैनिटाइज करें। फिर साफ हाथ से सामान निकालें।

खुशफहमी न पालें

इस खुशफहमी में न रहें कि बाहर निकल नहीं रहा हूं। कोरोना संक्रमित या संभावित व्यक्ति के संपर्क से दूर हूं। घर में बंद हूं तो पूरी तरह सुरक्षित हूं। थोड़ी भी लापरवाही या गलती भारी पड़ सकती है।

इनका पालन जरूर करें

- घर में एक साथ कई लोग बैठकर टीवी न देखें।
- एक ही सोफे पर तीन-चार लोग नहीं बैठें।
- एक साथ कई लोग एक बिस्तर पर न सोएं।
- घर का हर सदस्य अलग-अलग तौलिया इस्तेमाल करे।
- घर में भी परिवार के सदस्यों की भीड़ न जमा होने दें।
- हर एक या दो घंटे पर हाथों को साबुन से धोएं।
- कुछ-कुछ घंटों पर आंखों को पानी से धोते रहें।
- घर के बच्चे और बुजुर्ग की तबीयत पर नजर रखें।
- छींक या खांसी आने पर नाक-मुंह पर साफ रूमाल रखें।

बंगाल सरकार ने गठित की 12 सदस्यीय समिति

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

बंगाल के स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना वायरस का मुकाबला करने के लिए 12 सदस्यीय विशेष समिति का गठन किया है। इसमें दो स्वास्थ्य कार्यकर्ता, पांच सरकारी विशेषज्ञ चिकित्सक और पांच गैर- सरकारी विशेषज्ञ चिकित्सक शामिल हैं।

कोरोना से लड़ने के लिए इस समिति को विशेष अधिकार दिए गए हैं। समिति सरकार को सलाह देगी कि कोरोना के साथ वैश्विक युद्ध की सूरत में उसे क्या करना है। गौरतलब कि राज्य में स्थिति नियंत्रण में है। पिछले 24 घंटों में एक कोरोना वायरस से संक्रमण की एक पॉजिटिव रिपोर्ट आई है। वर्तमान में, राज्य में 25 हजार 96 लोग घरों आइसोलेशन में हैं। पिछले 24 घंटे में, स्वास्थ्य विभाग ने 24 नए लोगों को घर आइसोलेशन में रहने का निर्देश दिया है। 73 लोगों को अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कराया गया है। कोविड-19 के लक्षणों के कारण पिछले 24 घंटे में 53 लोगों के शरीर से नमूने एकत्र किए गए थे। उनमें से 27 की रिपोर्ट आई थी, जिसमें 26 की रिपोर्ट नकारात्मक आई। एकमात्र नयाबाद के 66 वर्षीय निवासी की रिपोर्ट पॉजिटिव पाई गई । अब तक राज्य में कुल 269 नमूने एकत्र किए गए हैं और उनका परीक्षण किया गया है। इनमें से 10 में कोरोना वायरस का संक्रमण मिला है।

हारेगा कोरोना ! अपना डीएनए ही नहीं आरएनए भी बेजोड़

जागरण विशेष ▶ भारतीयों में वायरस से लड़ने की ताकत ज्यादा, शरीर में मिला यूनीक माइक्रो आरएनए

इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायो टेक्नोलॉजी ने किया है अध्ययन

संदीप पांडेय, लखनऊ

कोरोना ने दुनिया में हाहाकार मचा रखा है। कई देशों में लॉकडाउन चल रहा है। दुनिया घरों में दुबकी है। इस सबके बीच भारतीयों का शरीर कोरोना वायरस से दो-दो हाथ करने के लिए तैयार है। यह बात हम नहीं कह रहे, बल्कि राहत पहुंचाने वाला यह तथ्य वैज्ञानिकों के ताजा शोध में उजागर हुआ है।

शोधकर्ताओं का दावा है कि भारतीयों में एक विशिष्ट और विरला माइक्रो आरएनए मौजूद है। यह वंशानुगत आरएनए (राइबो न्यूक्लिक अमल) अन्य देशों के लोगों में नहीं पाया जाता है। इसमें कोरोना वायरस की तीव्रता को मंद करने की ताकत है। दिलचस्प बात यह कि मौजूदा कोरोना वायरस भी आरएनए वायरस है।

इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायो टेक्नोलॉजी दिल्ली की टीम की ओर से कोरोना सार्स-टू पर यह शोध किया गया। इसमें डॉ. दिनेश गुप्ता के नेतृत्व में चार एक्सपर्ट ने पांच देशों के कोरोना मरीजों पर स्टडी की। 21 मार्च को ऑनलाइन जनरल में प्रकाशित रिसर्च पेपर संकट की इस घड़ी में भारतीयों के लिए उम्मीद जगा रहा है। केजीएमयू लखनऊ की माइक्रोबायोलॉजिस्ट डॉ. शीतल वर्मा के मुताबिक, टीम ने भारत, इटली, यूएसए, नेपाल व चीन के वुहान शहर के मरीजों पर केस स्टडी की। इसमें वुहान के दो मरीज की हिस्ट्री ली गई। सबकी जीन सीक्वेंसिंग की गई। इंटीग्रेटेड सीक्वेंसिंग बेस्ड जीनोम की पड़ताल में भारतीयों में एक माइक्रो आरएनए (एचएसए-एमआइआर-27-बी) मिला। यह माइक्रो आरएनए अन्य देशों के मरीजों में नहीं मिला।

शोध में सिस्टमेटिक जीन लेवल म्यूटेशन एनॉलिसिस, कंप्यूटेशन एप्रोच व बायो इंफॉरमेटिक टूल्स का प्रयोग किया गया। नतीजे देखकर कई एक्सपर्ट पर अब आगे अध्ययन की जरूरत बता रहे हैं। शोध को विस्तार दे दिया गया है।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

सार्स-टू को म्यूटेट कर देता है आरएनए

वहीं, भारतीयों में कोरोना के सार्स-टू में एक म्यूटेशन भी देखा गया। इसमें वायरस की सतह पर एक विशेष प्रोटीन मिला। शोध में अनुमान लगाया गया कि भारतीयों में मौजूद विशेष माइक्रो आरएनए सार्स-टू को म्यूटेट कर देता है। इससे वायरस की क्षमता अन्य देशों की अपेक्षा यहां कम हो रही है। यह आरएनए भारतीयों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में इजाफा कर रहा है।

एचएसए-एमआइआर-27-बी नामक यह माइक्रो आरएनए अन्य देशों के मरीजों में नहीं मिला। इस शोध ने एक उम्मीद जगाई है। शोध को विस्तार दिया गया है। अब ऑनलाइन सभी देशों के मरीजों का डाटा जुटाया जा रहा है। डब्लूएचओ भी डाटा शेयर कर रहा है। लिहाजा, जल्द कुछ बड़ी उपलब्धि सामने होगी।

-डॉ. शीतल वर्मा, केजीएमयू लखनऊ

क्या होता है आरएनए

किसी भी जीवित प्राणी के शरीर में डीएनए की तरह राइबो न्यूलिक अम्ल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आरएनए शरीर में डीएनए के जीन्स को नकल कर के व्यापक तौर पर प्रवाहित करने का काम करता है। इसके साथ ही यह कोशिकाओं में अन्य आनुवांशिक सामग्री पहुंचाने में भी सहायक होता है। जीन को सुचारू बनाना और उनकी प्रतियां तैयार करना, विभिन्न प्रकार के प्रोटीनों को जोड़ने का काम करना भी इसकी अहम जिम्मेदारी है। आरएनए का स्वरूप एक सहस्राब्दी यानी एक हजार वर्षों में बहुत कम बदलता है। अतएव इसका प्रयोग विभिन्न प्राणियों के संयुक्त पूर्वजों की खोज करने में भी किया जाता है।

डॉ. शीतल वर्मा, माइक्रो बायोलॉजिस्ट, केजीएमयू, लखनऊ। जागरण

अब योगासन से पहले अपडेट लेते हैं नीतीश

ऐसे बिताया दिन

भुवनेश्वर वात्स्यायन, पटना

▶ बिहार के मुख्यमंत्री ने कोरोना वायरस से लड़ाई में बदली दिनचर्या

▶ सीएम आवास में 'शारीरिक दूरी', खांटी बिहारी खान-पान के बीच एक्शन में है 'कोरोना वार रूम'

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सुबह पांच बजे उठ जाते हैं। उनकी यह पुरानी आदत है। नित्यक्रिया के बाद पहले योगासन करते थे, लेकिन इन दिनों कोरोना वायरस ने चिंता बढ़ा दी है, इसलिए अब उठते ही इस महामारी को लेकर अधिकारियों से अपडेट लेते हैं। पूछताछ पूरी होने के बाद ही योगासन की चटाई बिछती है।

योगनिद्रा उनका पसंदीदा आसन है। जानकार कहते हैं कि सौम्य, शांत और समझदार बनाती है योगनिद्रा। नीतीश अन्य कई तरह के योगासन भी करते हैं। उसके बाद आती है स्नान-ध्यान और खानपान की बारी। खानपान में नीतीश खांटी बिहारी हैं। जिन बिहारी व्यंजनों को देश की हर थाली में पहुंचाने का उनका प्रयास है, वही उन्हें पसंद भी हैं। पटना में मुख्यमंत्री के सरकारी आवास का नाम एक अणे मार्ग भी है। वह भी यहां कोरोना लॉकडाउन के समय कड़ाई से 'शारीरिक दूरी' का पालन कर रहे हैं।

नीतीश की सुबह की सैर और योगासन से लेकर नाश्ते तक इस हरे-भरे आवासीय परिसर में घर-आंगन जैसा माहौल रहता है। अपनी गाय है। गाय का दूध भोजन का अभिन्न हिस्सा है। नाश्ते के बाद अखबार के पन्ने पलटना पुरानी आदत है। दैनिक जागरण के एक कार्यक्रम में नीतीश ने कहा भी था कि 'अखबार नहीं पढ़ता, तो लगता है कि कुछ भुला (खो) गया है।' नीतीश अक्सर सोशल मीडिया की 'खबर' लेते रहते हैं। लोगों को सतर्क करते रहते हैं कि सोशल मीडिया पर आंख मूंदकर विश्वास न करें। उन्हें तो कागज पर छपी हुई खबरें ही 'खबर' लगती हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार। जागरण आर्काइव

अब देर तक जाग रहे

तय समय पर सो जाने वाले नीतीश इन दिनों देर तक जगते हैं। दरअसल, अब बहुत काम है। 21 दिन का लॉकडाउन घोषित हुआ है। बिहार में कुछ संक्रमितों का भी पता चला है। कई रिपोर्ट पेंडिंग हैं। नगर के अस्पतालों से लेकर गांव के पंचायत भवनों तक कोरोना से लड़ने के लिए युद्धस्तर पर तैयारी चल रही। कोरोना से जीतने के लिए जो संघर्ष कर रहे, उनकी चिंता है। तभी तो अगली सुबह वह योगासन के पहले ही इंटरकॉम पर फिर फोन के नंबर दबाने लगते हैं, पूछने के लिए कि क्या अपडेट है...।

वार रूम के हॉल में दूर-दूर रखी गई हैं कुर्सियां

सीएम आवास में बैठकों के लिए खास व्यवस्था की गई है। बैठक वाले हॉल में कुर्सियां दूर-दूर कर दी गई हैं। नीतीश जैसे ही नहा-धोकर तैयार होते हैं, इस हिस्से में हलचल शुरू हो जाती है, क्योंकि बिहार में कोरोना की लड़ाई का केंद्रीय 'वार रूम' यहां कभी लॉन में एक्शन में रहता है, तो कभी हॉल में।राज्य भर से लगातार रिपोर्ट आती रहीं। दिन में कई बार बैठकें चलती हैं। मुख्य सचिव दो-तीन बार आते हैं। इलाज और जांच की स्थिति समझने के लिए स्वास्थ्य विभाग के दो अधिकारी 24 घंटे यहां रह रहे हैं। एक-एक सूचना से सीएम को अवगत कराया जा रहा। उस हिसाब से सीएम संबंधित विभाग के अधिकारी को तुरंत निर्देश देते हैं। अधिसंख्य डीएम से खुद बात करते हैं। केंद्रीय मंत्री और सचिवों से लंबी वार्ता चलती है। हां, इन वार्ताओं, बैठकों के दौरान भी नीतीश अधिकारियों को 'शारीरिक दूरी' को लेकर समझाते रहते हैं। अपने अनुभव सुनाते हैं।

महाराष्ट्र में भी मदद को योगी सरकार ने बढ़ाया हाथ

ओमप्रकाश तिवारी, मुंबई

▶ मुंबई में नियुक्त उप निदेशक पर्यटन को उप्र के लोगों की मदद के निर्देश

▶ लॉकडाउन के कारण लाखों कामगार कर रहे परेशानियों का सामना

कोरोना संकट के दौर में मुंबई में रह रहे उत्तर प्रदेश मूल के प्रवासियों के लिए भी योगी सरकार ने मदद को हाथ बढ़ाया है। सरकार ने यहां नियुक्त उप निदेशक पर्यटन को स्थानीय आयुक्त के रूप में काम करते हुए प्रवासी लोगों की मदद करने के निर्देश दिए हैं।

महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में उत्तर प्रदेश मूल के लोग रहते हैं। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने कोरोना संकट से निपटने के लिए केंद्र सरकार द्वारा किए गए लॉकडाउन के दौरान इन प्रवासियों की दिक्कतों को समझते हुए मुंबई में कार्यरत पर्यटन विभाग के उप निदेशक बिमलेश कुमार औदीच्य को उनकी समस्याएं सुलझाने के निर्देश दिए हैं। इस विशेष समय में औदीच्य को स्थानीय आयुक्त के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाने के निर्देश भी दिए गए हैं। औदीच्य के अनुसार, दिल्ली में रह रहे उत्तर प्रदेश के लोगों की समस्याएं दूर करने के लिए भी ऐसी ही व्यवस्था उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से की गई है। औदीच्य को कुछ माह पहले ही मुंबई और दिल्ली में रहनेवाले उत्तर प्रदेश मूल के लोगों के गांव-घर की समस्याएं सुलझाने के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया था। इस संबंध में आदेश पत्र में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग के कार्यालयाध्यक्ष अविनाश चंद्र मिश्र को भी प्रवासी लोगों की समस्याओं का समाधान तत्काल प्रभाव से करने के निर्देश दिए गए हैं। मुंबई, ठाणे, पालघर एवं रायगढ़ परिसर में उत्तर प्रदेश मूल के लोगों की आबादी 40 लाख से अधिक है। इनमें ज्यादा संख्या दैनिक कामगारों की है। देश में 21 दिनों का लॉकडाउन शुरू होने के ठीक पहले ऐसे प्रवासियों ने अपने घर का रुख करना शुरू कर दिया था, जिनका कोई स्थायी ठिकाना मुंबई में नहीं है। उनके लिए मध्य रेलवे ने कुछ विशेष ट्रेनों की व्यवस्था भी की थी, लेकिन 25 मार्च से ट्रेनों की देशव्यापी बंदी के कारण ये प्रवासी यहीं अटक गए हैं।

मुंबई के प्रमुख उत्तर भारतीय नेता कृपाशंकर सिंह कहते हैं कि 21 दिनों के लॉकडाउन के बाद इन दैनिक कामगारों का रोजगार दोबारा कब शुरू होगा, यह निश्चित नहीं है, इसलिए लोग अपने गांव जाकर शांति से रहना चाहते हैं। उन्होंने इस संबंध में राज्य के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार से बात कर ठाणे, पालघर एवं रायगढ़ में खाली पड़ी नवनिर्मित इमारतों में ऐसे प्रवासियों को रखकर उनके भोजन इत्यादि का इंतजाम करने की सलाह दी है।

देखा जा रहा है कि दिल्ली में रह रहे उत्तर प्रदेश व बिहार के प्रवासी मजदूर यातायात साधनों के अभाव में पैदल ही अपने गांव के लिए निकल पड़े हैं, लेकिन मुंबई की दूरी अधिक होने के कारण यहां के प्रवासियों के पास यह विकल्प भी मौजूद नहीं है।

देश भर में जारी लॉकडाउन के तीसरे दिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राजधानी लखनऊ के जियामऊ क्षेत्र में चल रही कम्युनिटी किचन का जायजा लिया। कम्युनिटी किचन के जरिये बेघर और बेसहारा लोगों को भोजन मुहैया कराया जा रहा है। प्रेट्र

कोविड19 की जंग में उप्र सरकार को मिला कांग्रेस का 'हाथ'

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोरोना वायरस (कोविड19) के खिलाफ लड़ी जा रही जंग में प्रदेश सरकार को कांग्रेस ने समर्थन दिया है। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव और यूपी प्रभारी प्रियंका वाड्रा ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर कोरोना की लड़ाई में प्रदेश सरकार का साथ देने का भरोसा दिया है। प्रियंका ने कहा कि यह वक्त आपसी मतभेदों को भुलाकर देश के लिए एकजुट होकर लड़ने का है। उन्होंने पत्र में लिखा कि जो लोग विभिन्न जगहों से वापस लौट रहे हैं उनको सरकारी स्कूल व कॉलेज खोलकर शरण दी जाए। जब लॉकडाउन खत्म हो जाए, तब ही इन्हें घरों की ओर रवाना किया जाए। उन्होंने सरकार से दिहाड़ी मजदूरों के लिए रोटी की व्यवस्था करने और किसानों की तैयार फसल की और भी ध्यान देने को कहा है। प्रियंका ने कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ता सभी नियमों का पालन करते हुए इस संकट की घड़ी में अपनी सेवाएं देने को समर्पित हैं। उन्होंने लिखा कि कांग्रेस ने हर जिले में वालंटियर टीम व हेल्पलाइन तैयार की है। यह टीम जनता की मदद के लिए तैयार है।

तीसरे दिन भी सड़क पर उतरीं ममता बनर्जी

राज्य ब्यूरो, कोलकाता: बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने लगातार तीसरे दिन भी लॉकडाउन के दौरान सड़क पर उतर कर स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान जरूरतमंद लोगों को राहत सामग्री वितरित करवाई। मुख्यमंत्री ने कहा है कि आपात राहत कोष में दान देने वालों को आयकर में छूट दी जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कोरोना को लेकर अफवाह फैलाने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।

शुक्रवार शाम करीब 4.30 बजे मेयर फिरहाद हकीम और कोलकात पुलिस आयुक्त अनुज शर्मा के साथ ममता बनर्जी अलीपुर के वार्ड नंबर 74 में पहुंची। वहां उन्होंने करीब 300 गरीब लोगों व रिक्शा चालकों में राहत सामग्रियों का वितरण कराया। इसके बाद वह कालीघाट पहुंचीं। वहां भी गरीबों को चावल, आलू समेत अन्य खाद्य सामग्री के पैकेट बांटे।

इस दौरान उन्होंने लोगों से शारीरिक दूरी का भी पूरा ख्याल रखा। साथ ही लोगों को जागरूक भी किया। बताते चलें कि बंगला की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को प्रमुख अस्पतालों को दौरा किया था। इसके बाद गुरुवार को भी थोक मार्केट पोस्ता बाजार समेत चार बाजारों का दौरा कर लोगों को एक-दूसरे से शारीरिक तौर पर दूर रहने का संदेश देते हुए कहा कि यह बहुत जरूरी है।

इस समय जो घर पर है वही सुपरस्टार : अक्षय कुमार

मुंबई, आइएएनएस : बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार ने शुक्रवार को कहा कि वर्तमान हालात में सुपरस्टार वही लोग हैं जो घर पर रहकर अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं।

▶ अभिनेता ने इससे पहले भी की थी लोगों से घर पर रहने की अपील

दरअसल, व्यापार विश्लेषक जोगिंदर सिंह ने एक वीडियो ट्वीट किया था जिसमें वह बताते हैं कि किस तरह अपनी आगामी फिल्म- रैंबो, हीरोपंती-2 और बागी-4 के जरिये टाइगर श्राफ सुपरस्टार बनने जा रहे हैं। इस ट्वीट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अक्षय कुमार ने लिखा, 'जोगिंदर सिंह इस बात से पूरी तरह आपसे सहमत हूं कि टाइगर श्राफ महान अभिनेता बनने जा रहे हैं, लेकिन इस समय सिर्फ और सिर्फ वही सुपरस्टार है जो घर पर रहेगा और अपनी व अपने परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।'

बता दें कि हाल ही में अक्षय कुमार ने एक वीडियो जारी कर कहा था, 'क्या कुछ लोगों का दिमाग खराब हो गया है? ये सब लोग कौन हैं जो लॉकडाउन का मतलब नहीं समझ रहे हैं? लॉकडाउन का मतलब है कि आपको अपने परिवार के साथ घर पर रहना है और सड़कों पर नहीं घूमना है। घर से बाहर निकलकर क्या आप यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि आप कितने बहादुर हैं? इससे कोई फायदा नहीं होने जा रहा। आखिरकार आपको अस्पताल जाना पड़ेगा और आपके परिवार को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। अगर आप लापरवाही करेंगे तो कोई भी सुरक्षित नहीं रहेगा।'

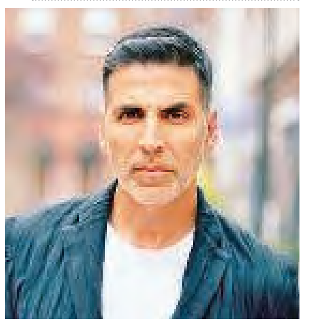

अक्षय कुमार। फाइल

शिरडी और कोल्हापुर के मंदिरों ने 53 करोड़ रुपये दिए दान

मुंबई, आइएएनएस : चीन के वुहान शहर से पूरी दुनिया में फैल चुके कोरोना वायरस से निपटने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बीच शुक्रवार को महाराष्ट्र के दो प्रमुख मंदिर ट्रस्टों ने क्रमशः 51 व दो करोड़ रुपये दान देने की घोषणा की है।

श्री साईबाबा संस्थान ट्रस्ट, शिरडी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अरुण डोंगरे ने बताया कि ट्रस्ट की तरफ से 51 करोड़ रुपये मुख्यमंत्री राहत कोष में देने का फैसला किया गया है। इसके अलावा ट्रस्ट की तरफ से श्री साईनाथ अस्पताल में भर्ती सभी मरीजों और उनके परिजनों, शिरडी अनाथालय, वृद्धाश्रम आदि में मुफ्त खाने का वितरण किया जा रहा है।

मुश्किल की इस घड़ी में हर कोई हाथ बढ़ा रहा है। कई मंदिरों का प्रबंधन करने वाली देवस्थान प्रबंधन समिति, कोल्हापुर ने महालक्ष्मी मंदिर के माध्यम से दो करोड़ रुपये दान देने की घोषणा की है। इसमें से 1.50 करोड़ रुपये तो मुख्यमंत्री राहत कोष को दिए जाएंगे, जबकि 50 लाख रुपये जिलाधिकारी को दिए जाएंगे। इनके अलावा भी कई कारपोरेट और निजी संस्थानों ने मुख्यमंत्री राहत कोष को दान दिया हैं।

अब हाथों में डंडा-रायफल नहीं, खाने की थाली

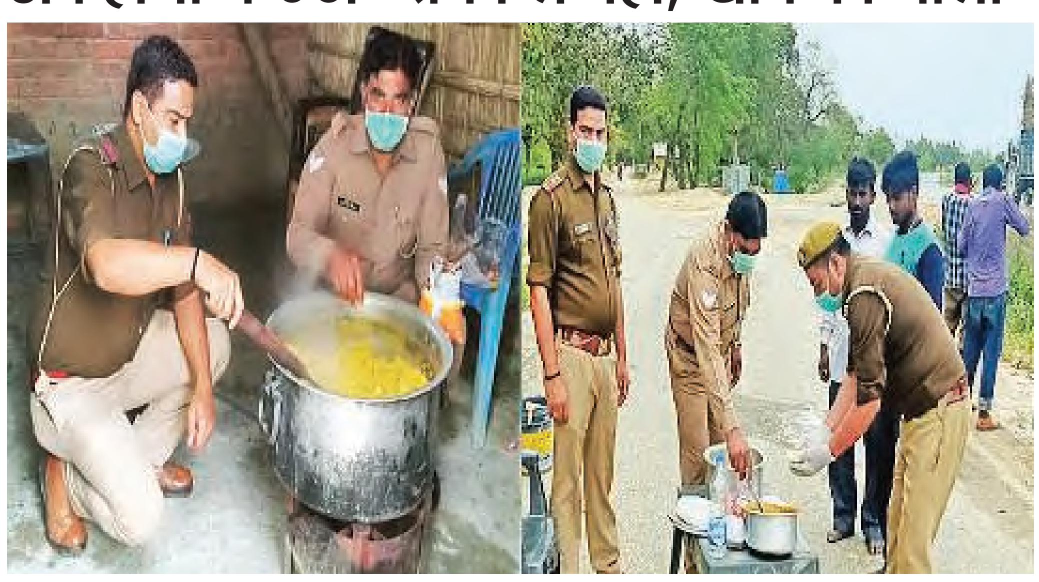

शाहजहांपुर में लखनऊ-दिल्ली हाईवे पर तिलहर की नगरिया मोड़ पुलिसचौकी पर पुलिसकर्मियों ने बाहर से आने वालों को भोजन वितरित किया। जागरण

जागरण संवाददाता, शाहजहांपुर

कानून के पालन के लिए पुलिस के हाथों में डंडा व रायफल लिए तो हर किसी ने देखा, लेकिन इन दिनों पुलिस वाले हाथ में दूसरों के लिए खाने की थाली थामे अनुकरणीय मिसाल पेश कर रहे है। कोरोना से बचाव में देश के लॉकडाउन होने के बाद भूखे प्यासे लोगों के लिए पुलिसकर्मी घर-घर जाकर भोजन की व्यवस्था करा रहे है। उप्र के शाहजहांपुर स्थित तिलहर थाना क्षेत्र में पुलिस चौकी पर तो पुलिसकर्मी खुद ही खाना बनाकर खिला रहे हैं।

लॉकडाउन के बाद से रेल व बस संचालन बंद कर दिया गया है। ऐसे में दिल्ली समेत बड़े शहरों में रह रहे लोगों को घर तक पहुंचना मुश्किल हो रहा है। लोग पैदल ही चल पड़े हैं। रास्ते में कहीं भोजन की व्यवस्था न होने की वजह से राष्ट्रीय राजमार्ग पर तिलहर थाना क्षेत्र की नगरिया मोड़ पुलिस चौकी प्रभारी पवन पांडेय ने कांस्टेबल धर्मेंद्र, अतेंद्र चौहान, विपुल मलिक व संजू के साथ मिलकर स्वयं ही चौकी में खाना बनाना शुरू कर दिया। चौकी के बाहर राहगीरों को यह खाना खिलाया जा रहा है। इससे पहले उन्हें पूरी तरह सैनिटाइज किया जाता है। पुलिस का यह रूप देख हर कोई उन्हें सराह रहा है। पुलिसकर्मी लोगों को कोरोना से बचाव के बारे में भी जागरूक कर रहे हैं।

मौका

नशा छोड़ने का सबसे अच्छा अवसर

नशीले पदार्थ न मिलने पर होने वाली घबराहट को बर्दाश्त कर छोड़ी जा सकती है लत

प्रियम, नई दिल्ली

कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए लॉकडाउन के चलते चाहे-अनचाहे लोगों को नशे की सामग्री नहीं मिल रही है। ये एक तरफ उम्मीद की घड़ी है तो दूसरी तरफ इच्छाशक्ति की परीक्षा भी। डॉक्टरों की मानें तो कुछ सावधानियां नशा करने वालों को रखनी होंगी। उन्हें नशा छोड़ने के अवसर के तौर पर वैकल्पिक तरीके अपनाने होंगे।

बीआरडी मेडिकल कॉलेज (गोरखपुर) के नशामुक्ति केंद्र के डॉ. आमिल हसन खान कहते हैं कि यदि किसी नशा करने वाले को नशीले पदार्थ उपलब्ध नहीं होते हैं तो विदड्रॉल पीरियड (नशा न मिलने पर होने वाली घबराहट) खत्म होने तक उसे धैर्य रखना होगा। घबराहट को बर्दाश्त करना होगा।

नशा, असर और कदम

तंबाकू : इसका विदड्रॉल पीरियड कम होता है। दो से तीन दिन में यह शुरू हो जाता है। बेचैनी और तनाव होता है। एक हफ्ते तक यदि इसे बर्दाश्त कर लिया तो यह आदत छूट सकती है।

शराब : इस नशे में भी विदड्रॉल पीरियड कम से कम तीन दिन बाद शुरू हो जाता है। अधिक सेवन करने वालों को बदन दर्द होता है या नींद न आने की समस्या हो जाती है। ऐसी स्थिति में दवाओं का सहारा लिया जा सकता है और दस दिन बाद खुद पर नियंत्रण करके यह आदत छुड़ाई जा सकती है।

अफीम : इस नशे का सेवन करने वालों के साथ परेशानी ज्यादा होती है। दो दिन बाद असर दिखने लगता है। डायरिया और कंपकंपाहट होती है, शरीर टूटने लगता है। ऐसी स्थिति में सामान्य दर्दनिवारक दवाएं ली जा सकती हैं। दिमाग दूसरे कामों में लगा सकते है। दस दिन तक यदि स्थिति पर काबू पा लिया तो इस नशे को छोड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

इसे कोल्ड टर्की ही समझें

नशामुक्ति केंद्र में ज्यादातर जगह कोल्ड टर्की तरीके से इलाज में सफलता मिली है। रोहतक में पीजीआइ के इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ के डायरेक्टर राजीव गुप्ता इस समय को स्वप्रेरणा का दौर कहते हैं। उन्होंने कहा कि जब मरीज कोल्ड टर्की से सही हो सकते हैं तो यह दौर उनके लिए बेहद उपयुक्त है। कोल्ड टर्की में नशा छुड़ाने के लिए उन्हें विकल्प के तौर पर कुछ नहीं दिया जाता। इस समय परिजन उन्हें कुछ टास्क देकर उनका ध्यान बंटा सकते हैं।

ये विकल्प आजमाएं

अल्कोहल के आदी सुबह उठकर नींबू पानी पी सकते हैं। सूखा नशा करने वाले प्रोटीन डाइट बढ़ा सकते हैं। ज्यादा दर्द की स्थिति में लोग कुछ दवाओं का सहारा भी ले सकते हैं।

खास बातें

स्थिति बर्दाश्त के बाहर हो तो नशामुक्ति केंद्र व ओट (आउट पेशेंट ओपिऑयड असिस्टेड ट्रीटमेंट) क्लीनिक जा सकते हैं।

विदड्रॉल पीरियड में दिखने वाले लक्षणों में बदन दर्द और नींद न आना आम है। इसके लिए दवाएं उपलब्ध हैं।

तंबाकू का सेवन करने वाले मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध च्यूइंगम या टॉफी को विकल्प के तौर पर आजमा सकते हैं।

टेलीमेडिसिन के जरिए काउंसिलिंग और दवाएं ले सकते हैं।

पूरी तरह से लॉकडाउन के बाद अभी तक कुल तीन केस आए हैं। ये सभी बुरी तरह नशे के आदी थे। इलाज के बाद इन्हें राहत मिली।

- डॉ. आमिल हसन खान, नशामुक्ति केंद्र, बीआरडी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर

जो नशे के आदी हैं, उन्हें हफ्ते भर या दस दिन की दवाएं दे दी जाएं। क्योंकि अब परिजन घर पर उनकी निगरानी कर सकते हैं।

-डॉ. अमन सूद, नोडल ऑफिसर, मॉडल ड्रग्स डेडिकेशन सेंटर, जालंधर

यह नशामुक्ति के लिए उपयुक्त समय है। लोग इस समय ध्यान, खेल या पढ़ाई जैसे आसान उपाय करके अपनी नशे की लत पर काबू पा सकते हैं।

- सुरेश सिंह धपोला, संस्थापक, निर्वाण रीहैब सेंटर, लखनऊ

राजस्थान में पिलाया जा रहा काढ़ा

जागरण संवाददाता, जयपुर

कोरोना से बचाव के लिए राजस्थान सरकार के आयुर्वेद विभाग और सामाजिक संगठनों की ओर से लोगों को काढ़ा पिलाया जा रहा है। प्रदेश के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर तीन दिन से आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया जा रहा है। सरकार की तरफ से जारी आदेश में कहा गया है कि लोगों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सभी को काढ़ा पिलाया जाए।

जयपुर स्थित केंद्र सरकार के आयुर्वेद संस्थान में भी यह काढ़ा पिलाया जा रहा है। काढ़ा पिलाने वाले आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने बताया कि लोंग, काली मिर्च, ज्वर हरण, गिलोय चूर्ण, त्रिकूट चूर्ण, हरा बाशा, तुलसी पत्र, पीपल, सौंठ, हरी अदरक, नीम की छाल एवं मुनक्का को करीब डेढ़ घंटे तक धीमी आंच पर उबाल कर यह काढ़ा बनाया जाता है।

दे रहे लौंग और काली मिर्च का पानी : राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष महेश चंद्र शर्मा आयोग कार्यालय एवं घर पर आगंतुकों एवं कर्मचारियों को लौंग और काली मिर्च का पानी पिला रहे हैं। उन्होंने इस काम के लिए दो कर्मचारियों को तैनात किया है।

काढ़े के साथ दवा भी पिला रही विहिप : विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की ओर से जोधपुर में आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक दवा का वितरण किया जा रहा है। यहां दो दिन से आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाने के साथ ही होम्योपैथिक दवा पिलाई जा रही है। प्रदेश के विभिन्न शहरों में कई सामाजिक संगठनों अपने-अपने तरीके से लोगों को कोरोना से बचाव को लेकर जागरूक कर रहे हैं।

गुजरात और महाराष्ट्र की सरकारों पर चिकित्सा मंत्री का आरोप : राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि पड़ोसी राज्यों महाराष्ट्र एवं गुजरात से प्रदेश के बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, जालौर, प्रतापगढ़ जैसे जिलों के लोग पैदल आ रहे हैं। वहां की सरकारों ने इन्हें ना तो रोक रहीं और ना ही स्क्रीनिंग कर रहीं।

दैनिक जागरण

दुर्भाग्य की ओर वैसे ही देखें, जैसे आप सफलता को देखते हैं

राहत-रियायत का सिलसिला

कोरोना वायरस के संकट से निपटने के लिए केंद्र सरकार की ओर से एक लाख 70 हजार करोड़ रुपये के राहत पैकेज की घोषणा के अगले ही दिन भारतीय रिजर्व बैंक ने जिस तरह उद्योग-व्यापार जगत के साथ आम जनता को रियायत देने वाली कई घोषणाएं कीं उनका एक तरह से इंतजार ही किया जा रहा था। रिजर्व बैंक की इन घोषणाओं से एक ओर जहां ब्याज दरों के सस्ते होने का मार्ग प्रशस्त हुआ वहीं दूसरी ओर नौकरी पेशा वर्ग को अपने कर्ज की मासिक किस्तें प्रदान करने में राहत मिलेगी। रिजर्व बैंक की ओर से उठाए गए कदमों से अर्थव्यवस्था में 3.74 लाख करोड़ रुपये की नकदी बढ़ने का अनुमान लगाया जा रहा है। चूंकि कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण से उपजे खतरे ने आर्थिक गतिविधियां करीब-करीब ठप कर दी हैं इसलिए रिजर्व बैंक की मुद्रा नीति समिति ने एक ओर जहां अपनी समीक्षा बैठक समय से पहले की वहीं दूसरी ओर आर्थिक वृद्धि दर एवं मुद्रास्फीति के बारे में अनुमान लगाने से बचा गया। ऐसा करके बिल्कुल सही किया गया, क्योंकि आज के दिन कोई नहीं जानता कि भविष्य में क्या हालात बनेंगे?

वास्तव में फिलहाल कोई भी इसका ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगा सकता कि कोरोना वायरस का संक्रमण देश और दुनिया में क्या हालात पैदा करेगा और उसके चलते अर्थव्यवस्था पर कितना और क्या असर पड़ेगा? बावजूद इसके तथ्य यह भी है कि देश ही नहीं दुनिया में कोरोना वायरस के दुष्प्रभाव का अपनी-अपनी तरह से आकलन किया जा रहा है। कुछ आकलन इस पर केंद्रित हैं कि किन देशों की कितनी आबादी इस खतरनाक वायरस की चपेट में आएगी तो कुछ यह रेखांकित कर रहे हैं कि दुनिया की अर्थव्यवस्था का कितना बुरा हाल होगा? इस तरह के जो भी आकलन हो रहे हैं उनकी अनदेखी तो नहीं की जा सकती, लेकिन उन पर आंख मूंदकर भरोसा करने और उनके ही हिसाब से रणनीति बनाने का भी काम नहीं किया जा सकता। समझदारी इसी में है कि हर तरह के हालात का सामना करने के लिए तैयार रहा जाए और परिस्थितियों के हिसाब से फैसले लिए जाएं। इस पर हैरानी नहीं कि विगत दिवस वित्त मंत्री की ओर से राहत पैकेज की जो घोषणा की गई उसे कुछ लोग अपर्याप्त बता रहे हैं। हो सकता है कि ऐसे लोग रिजर्व बैंक की ओर से उठाए गए कदमों को लेकर भी भिन्न राय व्यक्त करें। इस भिन्न राय का महत्व हो सकता है, लेकिन कोई भी सरकार हो वह अपनी सामर्थ्य भर ही कदम उठा सकती है। फिलहाल जैसे हालात हैं उन्हें देखते हुए सरकार की ओर से उठाए गए कदम अपेक्षा के अनुकूल दिखते हैं।

गांव लौटते कामगार

कोरोना संकट कितना बड़ा और व्यापक असर वाला है, इसका पता इससे चल रहा है कि हर गुजरते दिन के साथ केंद्र और राज्य सरकारों के साथ उनकी एजेंसियों को नित-नए मोर्चों पर ध्यान देना पड़ रहा है। एक दिन के जनता कर्फ्यू के बाद देश की जनता का एक हिस्सा यह मानकर चल रहा था कि हालात जल्द सुधरेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और इसके चलते पहले देश के कुछ जिलों को लॉकडाउन किया गया और फिर पूरे देश को। निःसंदेह यह वक्त की जरूरत थी, लेकिन इसके कारण तमाम वे लोग रास्ते में फंस गए जो आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियां थम जाने से या फिर अंदेशे से घिर जाने के कारण अपने घरों को लौट रहे थे। इनमें ज्यादातर दिहाड़ी मजदूर अथवा कारखानों के श्रमिक हैं।

तमाम भूखे-प्यासे लोगों को पैदल ही अपने घर-गांव लौटते हुए देखना जितना दुखद है उतना ही यह जानना सुखद कि एक के बाद एक राज्य सरकारों ने ऐसे मजदूरों की सुध ली और फिर केंद्र सरकार ने भी। यह और भी अच्छी बात है कि राज्य सरकारें एक-दूसरे राज्यों के रोज कमाने-खाने वालों और साथ ही कारखानों के कामगारों की चिंता कर रही हैं। संकट के इस दौर में कोई किसी राज्य का हो उसमें अपने-पराये का भेद नहीं किया जाना चाहिए। इन गरीब और असहाय लोगों की वैसे ही परवाह की जानी चाहिए जैसी उनकी की गई जो विभिन्न देशों में फंसे हुए थे। अपने घर-गांव लौटते मजदूरों और कामगारों को राहत देने के लिए विभिन्न राज्य सरकारें अपने-अपने स्तर पर सक्रिय हैं। कोई राज्य सरकार उन्हें उनके घर-गांव पहुंचाने का काम कर रही है तो कोई उन्हें उन्हीं जगहों पर ठहराने की व्यवस्था में लगी हुई है जहां पर वे हैं। यह काम अत्यंत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए और यह अनिवार्य रूप से देखा जाना चाहिए कि उनके बीच संक्रमण न फैलने पाए। यदि शहरों से गांव लौटते लोगों के बीच कोरोना वायरस का संक्रमण फैला तो एक नई मुसीबत खड़ी हो जाएगी।

संकट के इस दौर में कोई किसी राज्य का हो उसमें अपने-पराये का भेद नहीं किया जाना चाहिए। सभी की परवाह की जानी चाहिए

खतरे का पर्याय बना चीन

दिव्य कुमार सोती

कोरोना संकट चीन पर निर्भरता की वैश्विक भूल का भी नतीजा है। अगर चीन की जवाबदेही नहीं तय की गई तो वह दुनिया के लिए ऐसे ही खतरे खड़े करता रहेगा

चीन भले ही कोरोना वायरस से उपजी आपदा पर काबू पाने का दावा करे, लेकिन दुनिया के तमाम देशों में इसका कहर लगातार बढ़ता जा रहा है। कई देशों में इस वायरस से संक्रमितों और मृतकों का आंकड़ा चीन से बहुत आगे जा चुका है। ईरान, यूरोप के बाद अब अमेरिका इसका सबसे बड़ा भुक्तभोगी बनता दिख रहा है जहां फिलहाल दुनिया में सबसे ज्यादा कोरोना संक्रमित हो गए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आक्रामकता में भी इसकी तपिश साफ तौर पर महसूस की जा सकती है। इस महामारी के चलते वैश्विक अर्थव्यवस्था की बुरी गत हो रही है। इस बीच सबसे बड़ी बहस इसी बात को लेकर छिड़ी है कि इतनी भयावह स्थिति बनी कैसे?

स्वाभाविक है कि अधिकांश अंगुलियां चीन की ओर उठ रही हैं। कुछ लोगों का तो यहां तक कहना है कि ये चीन की जैविक हथियारों के परीक्षण में हुई किसी गड़बड़ का नतीजा है। हालांकि इसकी पुष्टि करने का कोई जरिया नहीं है। फिर भी इस तथ्य को अनदेखा किया जाना मुश्किल है कि चीन के जिस वुहान शहर से यह जानलेवा वायरस फैला वहां चीन ने वायरस अनुसंधान के लिए दुनिया की सबसे बड़ी प्रयोगशाला बना रखी है। चीन का सरकारी मीडिया स्वयं इस लैब को लेकर शेखी बघारता रहा है। यह भी तय है कि अक्टूबर 2019 से चीन में कोरोना के मामले सामने आने शुरू हो गए थे, पर चीन सरकार ने दिसंबर तक दुनिया से इसे छुपाए रखा। जनवरी आते-आते चीन में इस महामारी ने भयावह रूप लेना शुरू कर दिया था, लेकिन तब भी चीन ने पीड़ितों और मृतकों की संख्या को छुपाने की कोशिश की। जनवरी में खुद चीन के सरकारी अखबारों में ये खबरें आ रही थीं कि चीनी पुलिस आम नागरिकों को किसी रहस्यमय न्यूमोनिया जैसी बीमारी के फैलने की अफवाहें फैलाने के आरोप में गिरफ्तार कर रही थी। द टाइम्स के अनुसार दिसंबर में चीनी पैथोलॉजिस्ट्स को सरकार ने मजबूर किया था कि वे कोरोना संक्रमण से जुड़े मामलों की जांच रिपोर्ट और सैंपल नष्ट कर दें। इसके चलते दूसरे देश चीन से आने वाले यात्रियों की सही समय से जांच पड़ताल शुरू नहीं कर पाए जिसके चलते कोरोना पूरे विश्व में फैल गया। कोरोना संकट के दौरान चीन का व्यवहार 1997 में हांगकांग से शुरू हुए एच5एन1 संक्रमण से बिल्कुल भिन्न रहा है। उस समय इस संक्रमण को न पहचान पाने की स्थिति में चीन ने सैंपल अमेरिका भेज दिए थे और जैसे ही पता चला कि वह संक्रमण पक्षियों से मनुष्यों में फैलता है तो चीन सरकार ने तुरंत अपने यहां 15 लाख मुर्गियों को मार दिया था। इस बार चीन ने एकदम उलट किया। उसने अपने व्यापारिक साझीदार देशों तक को इस महामारी की भनक तक नहीं लगने दी। इसकी सबसे बड़ी कीमत चुकाई उस इटली ने जो चीन की वन बेल्ट वन रोड परियोजना में शामिल होने वाला जी-7 समूह का इकलौता देश है। चीनी साम्राज्यवाद को बढ़ावा देने की आशंका वाली इस परियोजना से दुनिया के तमाम देशों द्वारा कन्नी काटने के बावजूद यूरोप की अहम कड़ी बनने वाले इटली को भी चीन ने इस खतरे के प्रति आगाह करना उचित नहीं समझा। वैसे भी उत्तरी इटली और चीन के कोरोना प्रभावित इलाकों के बीच चमड़े का व्यापार बड़े पैमाने पर होता है। इस सिलसिले में तमाम लोग चीन से इटली आते-जाते रहे जिससे वायरस फैलता गया। इसका नतीजा यही निकला कि आज पूरे इटली में मातम पसरा हुआ है। उसने नहीं सोचा होगा कि चीन के साथ जुगलबंदी की इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इटली से इस वायरस ने दूसरे यूरोपीय देशों को अपने शिकंजे में कसना शुरू कर दिया।

अवधेश राजपूत

चीन में कोरोना संक्रमण भले जिस कारण से फैला हो, लेकिन उसके बाद चीन सरकार ने हर वह कदम उठाया जिससे यह सुनिश्चित हो कि दुनिया इस संकट से बेखबर रहे और यह समूचे विश्व में फैल जाए। चीनी शासन तंत्र की सोच यही लगती है कि भले इससे उसकी अर्थव्यवस्था को झटका लगे, लेकिन विश्व के बाकी बड़े देशों को यह उससे भी तगड़ा झटका दे ताकि वह उभरती हुई महाशक्ति के तौर पर कहीं पिछड़ न जाए। चीन अपनी कोशिश में काफी हद तक सफल भी हुआ है। अमेरिका में आपातकाल लागू हो चुका है और ट्रंप के कार्यकाल में आई अमेरिकी अर्थव्यवस्था में तेजी मंद पड़ती दिख रही है। इसके चलते ट्रंप लॉकडाउन से हिचक रहे हैं, लेकिन इसका नतीजा यही है कि अमेरिका में हजारों कोरोना संक्रमण के मामले रोजाना सामने आ रहे हैं। इस सबको लेकर ट्रंप लगातार चीन पर हमलावर हैं और उन्होंने कोरोना को सीधे-सीधे 'चीनी वायरस' कहना शुरू कर दिया है।

इस बीच दुनिया भर में दवाओं और चिकित्सकीय उपकरणों की भारी मांग है। विडंबना यही है कि इस बाजार पर चीन का ही दबदबा है। नतीजतन जिस चीन के छल से यह बीमारी फैली, उपचार के लिए सामान खरीदने के लिए भी उसके अलावा दूसरा कोई चारा नहीं। कोरोना से भयंकर रूप से पीड़ित स्पेन चीन से 43.2 करोड़ यूरो का चिकित्सीय साजोसामान खरीद रहा है। चीन में सस्ते विनिर्माण का लाभ उठाने के लालच में तमाम देश अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला को चीन के हवाले कर चुके हैं। खुद भारत भी दवाओं में काम आने वाले सक्रिय फार्मा घटकों यानी एपीआइ के मामले में चीन पर निर्भर है। हम 70 प्रतिशत तक एपीआइ चीन से आयात करते हैं जिसकी सालाना कीमत लगभग 2.4 अरब डॉलर बैठती है। कुल मिलाकर वैश्विक बिरादरी उस चीन के ऊपर निर्भर हो चुकी है जहां लोकतंत्र नाम की कोई चीज नहीं है, जिसके सरकारी तंत्र में पारदर्शिता की कल्पना भी नहीं की जा सकती और जो परमाणु हथियारों और मिसाइल तकनीक की अंतरराष्ट्रीय तस्करी के जरिये समूचे विश्व के लिए पाकिस्तान और उत्तर कोरिया जैसे खतरे खड़े कर चुका है। कोरोना संकट इसी वैश्विक भूल का नतीजा है। अगर चीन का वर्चस्व तोड़ा नहीं गया और उसकी जवाबदेही नहीं तय की गई तो वह दुनिया के लिए ऐसे खतरे खड़े करता रहेगा। अगर लॉकडाउन जैसे रोकथाम के उपायों के चलते भारत कोरोना महामारी से बाकी दुनिया की अपेक्षा कम प्रभावित होकर निकल पाया तो हमारे पास चीनी व्यापारिक वर्चस्व के चक्रव्यूह को तोड़ने का सुनहरा मौका होगा।

(लेखक काउंसिल फॉर स्ट्रेटेजिक अफेयर्स से संबद्ध सामरिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

आपदा में जड़ों की ओर लौटते हम

क्षमा शर्मा

कोरोना संकट के चलते आज लोगों को पहले की तरह घरेलू कामकाज भी खुद ही करने पड़ रहे हैं

जब से कोरोना के कारण लोगों का कामकाज पर जाना बंद हुआ है तब से बड़े-बड़े लोग घर के कामों के फोटो पोस्ट कर रहे हैं। इसी सिलसिले में कैटरीना कैफ को बर्तन धोते और मलाइका अरोड़ा को खाना पकाते देखकर लगा कि क्या वाकई आपदा हमें अपनी जड़ों की ओर धकेलती है? बचना है, तो वह करो जो करते आए हो। जो दादी, नानियां करती थीं। अमीर से अमीर औरतें घर में खाना पकाती थीं। बहुत पहले नरगिस दत्त के बारे में पढ़ा था कि जब वह अमेरिका में रह रही थीं तो अपने घर में खाना पकाने से लेकर झाड़ू-पोंछा, बच्चों की देखभाल जैसे काम खुद करती थीं। ये बातें उनकी बेटी नम्रता दत्त ने ही बताई थीं। किसी ने फेसबुक पर लिखा-लॉकडाउन के दौरान सबसे बड़ी चुनौती उन निखट्टुओं के लिए है जिनकी मम्मी इठलाकर कहती थीं कि हमारा बेटा तो चाय तक नहीं बना पाता। इसमें मैं बेटियों को भी जोड़ना चाहती हूं, क्योंकि आजकल बहुत कम नौकरीपेशा लड़कियां ऐसी हैं जो खाना बनाना जानती हैं। एक लड़की का वीडियो देखा जिसमें वह एक बड़ी डिस्क मुंह के सामने लगाकर खाना पकाने की कोशिश कर रही है। अब तो अक्सर लड़कियों के माता-पिता विवाह से पहले ही लड़के वालों को बताते हैं कि उनकी बेटियां खाना बनाना नहीं जानतीं। बताया जाता है कि लड़की पढ़ने-लिखने में इतनी लगी रही कि खाना बनाना कब सीखती। खाना पकाना एक अरसे से पिछड़ा काम माना जाने लगा है।

अगर ध्यान से देखें तो भारत में व्यापारियों की नजर रसोई पर रही है। अगर घर में खाना न पके, बाजार से मंगाया जाए तो यह व्यवसाय अरबों-खरबों का हो सकता है। पश्चिमी देशों में ऐसा ही है। खाने की पकी-पकाई चीजें लाकर फ्रीजर में रख दी जाती हैं, जो समय-समय पर खाई जाती हैं। वहां रसोई खाना पकाने के लिए बहुत कम और खाना गर्म करने की जगह के रूप में अधिक काम आती है। अपने देश में अब भी चूंकि औरतों की बहुसंख्या घरों में रहती है इसलिए वे खाना बनाने की अपनी घरेलू जिम्मेदारी को भी निभाती हैं। अगले पचास सालों में अपने देश में हाउसवाइव्स नाम की प्रजाति ढूंढे नहीं मिलेगी, जिन्हें इन दिनों होममेकर कहा जाता है। हालांकि यह भी अजब किस्म की परिभाषा है जो कहीं छिपे हुए इस मनोभाव को बताती है कि नौकरी करने वाली औरतें होम-ब्रेकर होती हैं।

बहरहाल यह भी सच है कि घर के काम करने से कोई छोटा नहीं हो जाता। इन दिनों लोग सोशल मीडिया पर घर का काम करते तस्वीरें डाल रहे हैं। यूट्यूब से खाना बनाने की विधियां सीखकर तरह-तरह के व्यंजन बना रहे हैं। कुछ लोग कह रहे हैं कि जिम नहीं जा पा रहे, घूम नहीं पा रहे तो उन्हें भी लोग घरेलू काम करने की सलाह दे रहे हैं कि मशीन में कपड़े न धोकर हाथ से कपड़े धोएं इससे काम भी निपटेगा और कैलोरी भी बर्न होगी। चूंकि घरेलू सहायिकाएं नहीं आ रही हैं तो घर का झाड़ू-पोंछा, बर्तन आदि का काम भी खुद करना पड़ रहा है। कई लोग यह भी लिख रहे हैं कि पहली बार अपनी घरेलू सहायिकाओं की अहमियत पता चल रही है कि कैसे वे हमारे घर की साफ-सफाई, कपड़े धोने, खाने आदि की जिम्मेदारियां निभाती रही हैं।

यह बात भी है कि बहुत दिनों बाद अपने घर की साज-संभाल पर ध्यान गया है। हर कोना पुकार रहा है। इससे यह भी पता चलता है कि जिस घर में हम रहते हैं, उसकी कितनी कम चिंता करते हैं। इसके कारण भी हैं। युवा पीढ़ी मुंह अंधेरे काम पर निकलती है, देर से लौटती है। साथ में दफ्तर का काम ले आती है। ऐसे में घर देखने का समय वाकई बहुत कम है। जिनके बच्चे हैं उनकी जिम्मेदारियां और भी अधिक हैं। एकल परिवारों में बुजुर्ग भी नहीं जो बच्चों की देखभाल कर सकें। इन दिनों भी जब पूरा परिवार घर में है तो लोग पूछ रहे हैं कि बच्चों को कैसे समझाएं कि वे घर में क्यों हैं। उन्हें कैसे व्यस्त रखें।

पंद्रह साल पहले मैं ऐसे कई जोड़ों से मिली जो घर में खाना नहीं पकाते थे, सिर्फ चाय बनती थी। घर से सवेरे निकलते थे। दफ्तर की कैंटीन में ही नाश्ता और लंच करते थे। फिर वहीं से पैक कराके शाम के लिए ले जाते थे। कुक रखने और घर का राशन आदि लाने के सब कामों की छुट्टी। एक महिला ने सालों पहले मुझसे कहा था कि मैं क्या कोई खाना बनाने वाली हूं। मैं पत्रकार हूं। तब उसकी बात सुनकर लगा था कि क्या खाना बनाना इतना बुरा काम है। यदि खाना, खाना अच्छा लगता है तो बनाना क्यों नहीं? दरअसल इस तरह का सामंतवाद हमारे जैसे देश में ही संभव है जहां हर काम के लिए नौकर मिलते हैं और एक मध्यवर्ग का आदमी भी नौकरों की फौज रखकर खुद को धन्ना सेठ समझता है। सालों पहले उस महिला की कही बात आज जेनरेशन एक्स, वाई, जेड और अब मिलेनियल्स पर सही बैठती है। वर्षों पहले एक खबर पढ़ी थी कि चूंकि युवा वर्ग की रुचि अब खाना पकाने में नहीं रह गई है तो बहुत से बिल्डर्स अब घर में रसोई नहीं बनाते हैं। उन्हीं दिनों इस संदर्भ में एक लड़के का इंटरव्यू पढ़ा था, जिसने कहा था कि हम घर में किचन का झंझट नहीं पालना चाहते। आज नई पीढ़ी ही नहीं हमारी पीढ़ी भी इस तरह के संकट को पहली बार झेल रही है। जहां किसी को छूना, स्पर्श, हाथ मिलाना, मिलना-जुलना किसी उत्सव आदि में भाग लेना खतरे को निमंत्रण देना है। कोरोना नाम का एक अदृश्य शत्रु कब गिरफ्त में लेकर मौत की नींद सुला देगा, पता नहीं। इसीलिए डर भी है।

(लेखिका साहित्यकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

एकांतवास

पूरा विश्व आज एक अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा है। संकट एक अति सूक्ष्म विषाणु जनित है, जो महादैत्य की भांति पूरी मानवता को निगल जाने को आतुर जान पड़ता है। इसे फिलहाल मारा भी नहीं जा सकता तो फिर हम अपनी रक्षा कैसे करें? यहीं हमारे महान धर्मग्रंथ हमें राह दिखाते हैं। श्रीमद्भागवत में एक प्रसंग आया है कि मगध नरेश जरासंध ने 18वीं बार अपने साथ एक अजेय योद्धा कालयवन को लेकर मथुरा पर चढ़ाई कर दी। युद्ध के दौरान जब भगवान श्रीकृष्ण को यह अनुभव हुआ कि इस महायोद्धा कालयवन को अस्त्र-शस्त्र द्वारा मारा नहीं जा सकता तो श्रीकृष्ण ने अपनी रणनीति बदली और युद्ध का मैदान छोड़कर एक विशेष दिशा में भागे। कालयवन भी उनके पीछे दौड़ा। भागते हुए श्रीकृष्ण एक गुफा में घुस गए। गुफा में पहले से सोते हुए एक व्यक्ति पर उन्होंने अपना पितांबर डाल दिया और वहीं पर छुप गए। कालयवन उस सोते हुए व्यक्ति को श्रीकृष्ण समझ उस पर प्रहार कर दिया, जिससे उस व्यक्ति की निद्रा टूट गई। जागने पर उसकी दृष्टि सर्वप्रथम कालयवन पर गई। कालयवन वहीं भस्मीभूत हो गया। दरअसल वह व्यक्ति राजा मुचुकुंद थे, जिन्हें देवराज इंद्र से दीर्घनिद्रा का आशीर्वाद मिला हुआ था, साथ ही यह वरदान भी कि जो भी उनकी निद्रा भंग करेगा वह भस्म हो जाएगा।

उक्त कथा का यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनन करें तो पाएंगे कि कोरोना वायरस भी उस कालयवन की भांति ही है, जो इस समय अवध्य है, किंतु जिसे राजा मुचुकुंद की तरह एकांतवास (आइसोलेशन) द्वारा अथवा कृष्ण की तरह रणनीतिक रूप से छुपकर खत्म किया जा सकता है। अकस्मात प्रकट हुए इस दुश्मन का मुकाबला हम आमने-सामने के युद्ध में नहीं कर सकते। हमें भी अपनी-अपनी गुफाओं अर्थात घरों में छुप जाना होगा। धैर्य से काम लें और अपने पुरखों के बताए गूढ़ रहस्यों को समझें।

चंदन कर्ण

महामारी का अवसादी चेहरा

मनीषा सिंह

इतिहास में पहली बार इसे इंसानियत माना गया कि हम पर पहाड़ क्यों न टूटा पड़ा है, हमें एक दूसरे से पृथक होकर रहना है

एक समाज के रूप में हमारी संस्कृति सुख से ज्यादा दुख साझा करने की पक्षधर रही है। दुख बांटते हैं तो संताप से बोझिल हमारा मन हल्का होता है। इतिहास में शायद ही ऐसा कोई अवसर आया हो जब इसे इंसानियत माना गया कि हम पर पहाड़ क्यों न टूटा पड़ा है, हमें एक दूसरे से पृथक होकर रहना है। इसमें मुख्य सलाह यही है कि हम अपने घरों में कैद रहें और आस-पड़ोस में जाने से परहेज बरतें। यह एक अभूतपूर्व स्थिति तो है, पर इसने हमारा ध्यान इस विडंबना की ओर भी दिलाया है कि बीते एक-दो दशक में समाज के तौर पर हम एक दूसरे से छिन्न-भिन्न ही हो रहे थे। टेलीविजन के बाद इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हमें पहले ही एक दूजे से अलग कर दिया था।

अब जिस प्रकार पूरी दुनिया में ही कोरोना वायरस से बचाव के लिए खुद को घरों में बंद कर लेने का नया आह्वान किया गया है, उसमें इंटरनेट और सोशल मीडिया एक राहत ही लगता है। ऐसे वक्त में सोशल मीडिया को लेकर यह धारणा बनती है कि अगर यह सुविधा हमें हासिल नहीं होती तो 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के आह्वान को साकार करते हुए एक वायरस से जंग लड़ने और जीतने वाली जनता का जोश भरा संकल्प हम भला कैसे देख पाते। यही नहीं, अगले कुछ वक्त के लिए घरों में कैद लोगों को हर वक्त सक्रियता का एक अहसास सोशल मीडिया अवश्य दिला सकता है, लेकिन कुछ दिनों बाद क्या होगा। जब सोशल डिस्टेंसिंग से उकताए हजारों-लाखों लोग सोशल मीडिया पर भी एक जैसी प्रतिक्रियाएं, कॉपी-पेस्ट किए हुए विचार, वीडियो, प्रवचन देखकर उकता जाएंगे। पहले से ही एक वास्तविक महामारी के कारण घरों में कैद, मंदी की मार झेलता समाज जब अपने डिजिटल इगो को पिछड़ते हुए देखेगा तो इसका नकारात्मक असर लोगों की मानसिक अवस्थाओं पर पड़ सकता है। ऐसे में लोग लंबे समय तक अवसाद से घिर सकते हैं।

हमारे देश में ऐसे अनेक हादसे हो चुके हैं जब अवसादग्रस्त लोग खुद के हंता ही नहीं बने, बल्कि पिस्तौल या तलवार निकालकर दर्जनों अन्य लोगों की जान तक ले ली। अवसाद के ये कीटाणु किसी सूरत में कोरोना वायरस से कम संहारक नहीं हैं, लेकिन समस्या यही है कि इससे निपटने का कोई ठोस तंत्र हमारे यहां नहीं है। न तो इन्हें भगाने के लिए कोई थाली-ताली बजाता है और न अवसादी महामारी से पीड़ित लोगों को एक आम मरीज मानकर उनके इलाज और उन्हें जीवन में वापसी करने का मौका देने की व्यवस्था बनती है। ऐसे में कहना गलत नहीं होगा कि दुनिया कोरोना से बचने के रास्ते भले निकाल ले, पर यदि इसी बीच पैदा हो रहे अवसाद का निदान हाथोंहाथ नहीं सोचा गया तो दुनिया और पूरे समाज के लिए एक और बड़ी मुश्किल पैदा हो सकती है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

प्रकृति के विरुद्ध खानपान छोड़े चीन

तनातनी बढ़ाने वाली महामारी शीर्षक लेख के तहत विवेक काटजू ने एक बहुत अच्छा सुझाव दिया है कि भविष्य में कोरोना जैसी महामारी दुनिया में न फैले इसके लिए सारी दुनिया चीन को खबरदार करे कि वह अपनी प्रकृति के खिलाफ जीवनशैली और खानपान छोड़े। आज दुनिया का हर देश, हर धर्म-जाति, गरीब-अमीर कोरोना वायरस के कहर से डरा और सहमा हुआ है। जिन सड़कों-गलियों में रात को भी सरपट गाड़ियां दौड़ती रहती थीं, उन पर दिन में सन्नाटा पसरा हुआ है। इस महामारी के आगे विज्ञान भी बौना नजर आ रहा, क्योंकि फिलहाल कोरोना वायरस के कहर को रोकने के लिए न तो कोई टीका बना पाया है और न ही दवा। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्रकृति मानव जाति से बेहद नाराज है और शायद यह समझा रही है कि हे मानव! अभी भी मौका है, संभल जा, मेरे (प्रकृति) खिलाफ जाना छोड़ दे। अगर दुनिया को भविष्य में कोरोना जैसी महामारियों से बचना है तो सबसे पहले सभी देशों के नागरिकों को अपने खानपान और जीवनशैली पर ध्यान देना होगा। पशु-पक्षियों के संक्रमण से जो बीमारियां फैलती हैं, उसके लिए शत-प्रतिशत इंसान दोषी है।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

इंसानियत दिखाएं

लॉकडाउन के दौरान उन भारतीयों की तस्वीरें भी देखने को मिल रही हैं, जो असहाय, कमजोर हैं, जिनके हाथों को इस समय काम नहीं मिल रहा है, उनके खाने-पीने का इंतजाम पुलिसकर्मियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं व अन्य व्यक्तियों, संगठनों द्वारा किया जा रहा है। ऐसे दुख व संकट की घड़ी में इंसान से ऐसी ही इंसानियत और मानवता की उम्मीद की जाती है। अपने आसपास ऐसे खुले मैदान में रहने वाले मजदूरों को भी सक्षम घरों के लोगों को जो बने मदद करना चाहिए, ताकि संकट में मानवता का झंडा नीचे ना हो। यह घड़ी भी निकल जाएगी, लेकिन गुजरे हुए दिनों में जो इंसानियत की मिसाल पेश की जाएगी, वह पूरा हिंदुस्तान याद रखेगा।

hemahariupadhyay@gmail.com

असहायों की मदद जरूरी

शहर में भारी संख्या में पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार के दिहाड़ी मजदूर रहते हैं, जो कि काम बंद होने की स्थिति में भुखमरी के कगार पर आ गए हैं। यातायात के साधन बंद होने के कारण अपने घर जाने में भी भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। यहां तक कि बड़ी संख्या में लोग भूखे प्यासे पैदल ही पलायन को विवश हैं। सरकार को उनके लिए यातायात के साधन व खानपान की सुविधा भी मुहैया कराई जानी चाहिए, ताकि वे अपने गृह स्थान सुरक्षित पहुंच सकें।

धर्मेंद्र भाटी, चूहडपुर, ग्रेटर नोएडा

खतरनाक वायरस

एक छोटी सी चींटी भी विशाल हाथी को मार सकती है। सत्य है कि एक महीन-सा कोरोना वायरस भी इतना खतरनाक है कि उससे पूरी दुनिया हिल गई है। दुनिया के सारे शेयर बाजार धड़ाम हो गए हैं। मानव जाति के दुश्मन कोरोना से हर देश लड़ने के लिए युद्ध स्तर पर काम कर रहा है, फिर भी बहुत ही तेजी से ये संक्रमक फैलता जा रहा है। प्राकृतिक इलाज व सोशल डिस्टेंसिंग ही कारगर साबित होगा।

mahesh_nenava@yahoo.com

अफवाहों का बाजार

जब देश में कोई बड़ा संकट आता है या बड़ी घटना होती है तब तरह-तरह की अफवाहों का बाजार गर्म हो जाता है। ऐसा ही अब कोरोना वायरस को लेकर हो रहा है। सोशल मीडिया में कोई कुछ भी बता दे रहा है। भ्रामक जानकारी देने से लोगों में भय उत्पन्न होता है। सबसे बड़ी बात है कि इससे पीड़ित बहुत से मरीज ठीक भी हो रहे हैं। जबकि कोई सही दवा इसके इलाज के लिए उपलब्ध नहीं है। सामान्य परहेज से ही यह बीमारी नियंत्रण में आ जा रही है, इसलिए घबराने वाली बात नहीं है। बस संयम रखने की जरूरत है। इसके बचाव के उपाय केवल वही मानने चाहिए, जो डॉक्टर बता रहे हैं। अन्यथा नुकसान हो सकता है।

विजय कुमार धनिया, नई दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

आजकल

कोरोना और भारत की सार्थक कूटनीति

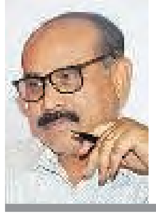

प्रो. सतीश कुमार
राजनीतिक विश्लेषक

कोरोना वायरस से निपटने के लिए भारत की सरकार ने जो रास्ता अपनाया है, उसे दुनिया के तमाम देशों ने भी सराहा है। इटली में तमाम बदहाल दशाओं के बावजूद भारत ने वहां से अपने ढाई सौ छात्रों को निकाल कर उनके परिवारों तक पहुंचाया। जहां दुनिया के कई देश अपने ही फंसे हुए लोगों को निकाल कर लाने की बात पर चुप्पी साधे हुए हैं, वहीं भारत ने नागरिकता और देश के बीच भारतीय सोच को विकसित किया है, जो दुनिया के लिए एक नया आयाम बनेगा

कोरोना के खतरे से निपटने की दिशा में भारत की कूटनीति ने दुनिया के सामने एक नई मिशाल पेश की है। ईरान, इटली और यूरोप के तमाम देशों में रहने वाले भारतीयों को देश वापस लाया गया, जबकि उन्हें वहां से लाने में बहुत ज्यादा मुसीबतें सामने आई थीं। इसके अलावा भारत ने सार्क देशों की एक विशेष बैठक बुलाकर इस वैश्विक महामारी से लड़ने की साझेदारी का नेतृत्व भी किया है। चूंकि यह समस्या वुहान से निकले कोरोना वायरस से उत्पन्न हुई है। इसलिए इसको लेकर भी दुनिया की प्रतिक्रिया भिन्न है। जहां इस मामले में अमेरिका ने चीन को दोषी माना, वहीं अमेरिकी मीडिया पर चीन ने स्वयं को बदनाम करने की साजिश की बात कही, लेकिन आज समस्या जैविक हथियारों को लेकर है या भौतिकवादी जीवनशैली को लेकर। एक बार बीबीसी के एक पत्रकार ने गांधीजी से पूछा था कि भारत के आजाद होने के बाद क्या आप अंग्रेजी आर्थिक ढांचे को लेकर चलेंगे तो गांधी का दो टूक जवाब था कि पूरी धरती को कब्जा करने के बाद भी जिसकी क्षुधा नहीं भरी तो भारत की आबादी दस गुना ज्यादा है। हमें तो ऐसे दस पृथ्वी की आवश्यकता होगी।

आज इस वैश्विक समस्या से निपटने के लिए भारत की सोच भी अलग है। भारत पूरे जगत को एक परिवार मानता है। दुनिया यह मानती थी कि परमाणु हथियारों से दुनिया का विनाश होगा, लेकिन उसके पहले एक ऐसा अदृश्य शत्रु मानव जगत के सामने प्रकट हो गया है जो उसकी पूरी शाख को खत्म करने के लिए आमादा है। इस समस्या ने राष्ट्र राज्य की परिभाषा को नए सिर से परिभाषित किया है।

बीते रविवार को देश ने प्रधानमंत्री की बातों को माना और उसके बाद से निरंतर उसका पालन कर रहे हैं। हालांकि चंद लोगों के नजरिये में यह एक साजिश है जिसे सरकार ने अपनी असफलताओं को ढकने के लिए कोरोना वायरस का ईजाद किया है। एक ओर चीन की कम्युनिस्ट व्यवस्था है जहां पर पूरी सख्ती और निर्ममता के साथ कोरोना वारयस को फैलने से रोकने के लिए कदम उठाए गए। दूसरी ओर इटली और यूरोप के अन्य देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं, जहां पर लोगों की स्वतंत्रता और आजादी की फिक्र देश हित से ऊपर बन गया है। यदि इन दोनों ही व्यवस्था की तुलना करें तो भविष्य में लोग संभवतः यह मानने के लिए विवश हो सकते हैं कि चीन की राजनीतिक व्यवस्था यूरोप से बेहतर और ज्यादा कारगर है।

भारत राष्ट्र की परिभाषा दोनों राजनीतिक व्यवस्था से अलग है। जब भारत ने लॉकडाउन की बात कही है तो उसमें जनता का हित और लोकतंत्र की बुनियादी सोच दोनों ही बातें शामिल हैं। हम मूलतः अपने स्वार्थ के लिए समाज, समुदाय और राष्ट्र को दांव पर नहीं लगा सकते हैं। हमारी बुनियाद ही दूसरों के हित के लिए बनी है। फिर हम कैसे अन्य लोगों की जान को खतरे में डालकर मौज की नींद सो सकते हैं। इसलिए लॉकडाउन जरूरी भी था और उसका पालन भी उतना ही आवश्यक है। जब राष्ट्र चुनौतियों से जूझ रहा हो, उस समय भी राजनीतिक विरोध का परचम लहराना कितना उचित है, यह बात देश की जनता के सामने है।

कोरोना वायरस से निपटने के लिए भारत की सरकार ने जो रास्ता अपनाया है, उसकी प्रशंसा न केवल विश्व स्वास्थ्य संगठन ने की है, बल्कि दुनिया के तमाम देशों ने भी सराहा है। इटली में तमाम बदहाल दशाओं के बावजूद भारत ने वहां से अपने ढाई सौ छात्रों को निकाल कर उनके परिवारों तक पहुंचाया। इसके पहले भी भारत ने चीन के वुहान से व्यापक संख्या में अपने फंसे हुए नागरिकों को निकाला था। जहां दुनिया के कई देश अपने ही फंसे हुए लोगों को निकाल कर लाने की बात पर चुप्पी साधे हुए हैं, वहीं भारत ने नागरिकता और देश के बीच भारतीय सोच को विकसित किया है, जो दुनिया के लिए एक नया आयाम बनेगा।

भारत की सरकार ने अपने कूटनीतिक ढांचे को मजबूत करने के लिए सार्क को भी गतिशील बना दिया और इस गतिशीलता के जरिये यह भी संदेश दिया कि आपदा और संकट के समय में भारत ही दक्षिण एशिया के देशों को निजात दिला सकता है। भारत सरकार ने एक कोरोना आपात फंड की शुरुआत भी की है। इसका प्रयोग भारत के पड़ोसी देशों के हित के लिए किया जाएगा।

इस बीच वर्ष 2016 से सार्क ठंडे बस्ते में है, क्योंकि पाकिस्तान द्वारा आतंकी घटनाओं को जारी रखने के बीच पाकिस्तान में होने वाले सार्क सम्मेलन का भारत ने बहिष्कार किया था। उसके बाद बांग्लादेश, श्रीलंका समेत अन्य देशों ने भी वहां नहीं जाने का फैसला लिया था। उसके बाद से ही सार्क की कूटनीतिक धार कुंद सी हो गई थी। दूसरे कार्यकाल के उद्घघाटन सत्र में प्रधानमंत्री ने सार्क देशों को नहीं, बल्कि बिम्सटेक देशों को न्योता दिया था। भारत पाकिस्तान की वजह से सार्क के विकल्प के रूप अन्य क्षेत्रीय संगठनों को गतिशील बनाने की कूटनीतिक शुरुआत करने लगा, लेकिन सभी को मालूम है कि सार्क ही भारत की चौहद्दी है जहां से भारत के नेतृत्व की शक्ति का आगाज होता है। बिम्सटेक के दो ऐसे देश हैं जो पूरी तरह से चीन के सामरिक समीकरण का हिस्सा हैं उसमें थाईलैंड और म्यांमार शामिल हैं। भारत की विदेश नीति विशेषकर प्रथम पड़ोसी देशों की नीति भी सार्क की पगडंडी पर खड़ी है, लेकिन वह पगडंडी हिलती-डुलती रहती है। जब तक इसमें जान नहीं भरा जाएगा, दक्षिण एशिया की शक्ल भी नहीं बदलेगी।

जहां तक कोरोना वायरस का प्रश्न है वह भी सार्क की सीमाओं से जुड़ा हुआ है। दो सबसे ज्यादा प्रभावित देशों मसलन चीन और ईरान से दक्षिण एशिया की सीमा मिलती है। बड़े पैमाने पर व्यापार और आवागमन इन देशों के साथ है। लेकिन आपदा की दशा में न तो चीन और न ही ईरान की मदद दक्षिण एशिया को निजात दिला सकती है।

लॉकडाउन के लिए कितना तैयार हैं हम

मोहम्मद शहजाद

बचाव इलाज से बेहतर है। यह नुस्खा हमेशा से कारगर रहा है। आज जब पूरी दुनिया कोरोना महामारी की जद में है तो इसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है। कारण इसका तेजी से बढ़ता संक्रमण और अब तक ला-इलाज होना है। यही वजह है कि दुनिया के अधिकतर देशों ने इसी पुराने नुस्खे को आजमाते हुए या तो अपने यहां पूरी तरह से लॉकडाउन घोषित कर दिया है या फिर इस दिशा में बढ़ रहे हैं। निःसंदेह कोरोना के फैलाव को रोकने का यही कारगर तरीका है, क्योंकि इसकी अब तक कोई दवा ईजाद नहीं की जा सकी है। देश भर में स्कूल, दफ्तर, बाजार और यातायात के सभी साधनों को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। ऐसे में सवाल यह भी उठता है कि देश इस स्थिति के लिए कितना तैयार है और कितने दिनों तक इसे बर्दाश्त कर सकता है? दरअसल लॉकडाउन तभी कारगर हो सकता है जब उसे योजनाबद्ध तरीके से लागू किया जाए। चीन के वुहान से आरंभ हुई इस बीमारी के बारे में दुनिया को दो-तीन महीने पहले ही पता चल चुका था। इसके बावजूद चीन समेत दुनिया भर की मेडिकल साइंस की तमाम कोशिशें इसे वहीं तक सीमित करने में असमर्थ रहीं। पड़ोसी होने के नाते तब ही हमें सजग हो जाना चाहिए था।

हमारे देश में सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि लोग इन बीमारियों के प्रति जागरूक नहीं हैं। दुनिया के कई देशों में इसके भयावह रूप लेने के बावजूद लोग आज भी लॉकडाउन को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। पहले कुछ राज्यों द्वारा लॉकडाउन की घोषणा के बाद लोगों ने इसे कामकाज से छुट्टी मानकर तफरी का जरिया मान लिया। बाद में सरकारों ने जब सख्ती दिखाई तो बाजारों में लोग अपनी रोजमर्रा की जरूरत के सामान के लिए उमड़ पड़े। इस आपाधापी को देखकर शहरों में रह रहे काफी लोगों ने अपने पैतृक स्थान और गांवों की तरफ भागना शुरू कर दिया। अगर उन्हें पहले से ही लॉकडाउन के बारे में जागरूक किया जाता तो शायद यह स्थिति टाली जा सकती थी। जो जहां है, उसे वहीं रहने के लिए प्रेरित किया जा सकता था। कई राज्यों में पूर्ण लॉकडाउन होते-होते अच्छी खासी आबादी शहरों से ट्रेन और बस के जरिये अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच चुकी है। इनमें जाने कितने लोग कोरोना से संक्रमित होंगे और आगे यह संक्रमण कितने लोगों तक फैलाएंगे?

शायद यही वजह है कि केंद्र सरकार को पूरे देश में लॉकडाउन जैसा सख्त निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। निःसंदेह यह स्वागतयोग्य है, लेकिन इससे देश के अधिकतर हिस्सों में खाने-पीने की वस्तुओं को जमा करने की जो होड़ मची, उसमें भी लोगों में जागरूकता का अभाव नजर आया। लोग यह भूल गए कि उनके बीच सामाजिक दूरी बनाने के लिए ही इस लॉकडाउन की घोषणा की गई है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि लॉकडाउन का निर्णय हमेशा कल्याणकारी योजनाओं को ध्यान में रखकर लिया जाना चाहिए। देश की आबादी के एक बड़े हिस्से को असंगठित क्षेत्र से रोजगार मुहैया होता है। इनमें काफी तादाद दिहाड़ी मजदूरी करने वालों और कामगारों की है। लॉकडाउन की स्थिति में रोज कमा कर खाने वाले इन लोगों के पास दो जून की रोटी का जुगाड़ कैसे हो पाएगा। अगर उनके पास कुछ जमा-पूंजी होगी तो भी वह इस लॉकडाउन को कितने दिनों को झेल पाने में सक्षम होंगे। आपातकालीन परिस्थितियों में हमारे यहां कालाबाजारी का भी बाजार गर्म हो जाता है। पूरी तरह से लॉकडाउन की घोषणा होते ही दिल्ली समेत कई अन्य जगहों पर राशन और सब्जियों की कीमतें आसमान छूने लगी हैं। ऐसे में आने वाले दिनों ये चीजें इनकी पैदावार करने वालों की पहुंच से ही यह दूर होती जाएंगी। जाहिर है कि असंगठित क्षेत्र से जुड़ी देश की बड़ी आबादी के लिए इस स्थिति का सामना करना बहुत मुश्किल होगा। सरकार के पास ऐसा कोई आंकड़ा भी नहीं है कि फलां आदमी भूख से तड़प रहा होगा, ऐसे में उसे राशन-पानी उपलब्ध कराना उसकी जिम्मेदारी है। इस तरह की समस्याओं पर भी सरकार को ध्यान देना होगा।

खरी-खरी

अमर उठ, लेकिन घर में ही पड़ा रह

मुकेश जोशी

अमर उठ...घर चल। अब घर में ही रह। बाहर मत निकल। अबे बोला ना, घर में ही रह। चहलकदमी कर। अपने बेडरूम से बाड़े तक, घर के आगे से पिछवाड़े तक, यहीं का यहीं टहल। अमर अब आदत बदल। रात को जल्दी सो। सुबह जल्दी उठ। छुट्टी है तो कब तक मुंह घुसेड़े पड़ा रहेगा। जमाने की छोड़, तेरा जमीर क्या कहेगा! चल उठ। बिस्तर छोड़। गोदड़ी घड़ी करके पलंगपेटी में धर। इत्ती धीरे-धीरे नहीं, जरा जल्दी-जल्दी कर। जरा बाहर देख, धूप चढ़ आई है। माना कि छुट्टी है, पर ये छुट्टी भी खुद से एक लड़ाई है।

अमर सुन। पहले कर दातून। आज तुझे बेड टी नहीं मिलने वाली, क्योंकि बीवी सो रही है और बाई नहीं आने वाली। इसलिए सबसे पहले सैनिटाइज कर हाथ। वरना कोरोना दिखा देगा अपनी करामात। पुरानी दिनचर्या पर मत अटक। बासी मुंह चाय मत गटक। पहले वायरस से बच, फिर ही चायरस पीना।

अमर, अब एक और काम कर। थोड़ी देर टीवी पर बाबाजी की देखादेखी हाथ-पांव हिला। नाक को घुटनों से मिला। अपने बचाव के लिए जो भी कर सकता है कर। अभी भोत काम पड़े हैं, इत्ती जल्दी मत मर। सो रही बीवी को मत जगा। खुद ही चाय की तपेली ले, गैस सुलगा। अदरक कूट, माथा नहीं। तेरेको कुछ भी बनाना आता नहीं। चाय बने तब तक पोहे गला, अंडा-आमलेट बंद कर, शाकाहार से काम चला। जहरीले कीटाणु इन्हीं से फैल रहे हैं। अंकुरित अनाज खा, सलाद ले, फल-फ्रूट पर ध्यान दे। सदियों बाद खाली समय मिला है, जरा सेहत पर ध्यान दे। अमर चल अब नहाना-धोना कर ले, पर उससे भी पहले झाड़ू-पोंछा निपट ले।

अब मान जा इस लॉकडाउन में ही तेरी भलाई है। जो बाहर निकले, उन्होंने अपनी तशरीफें सुजाई हैं। अपने शहर की पुलिस को तू मत समझना पटवारी। जरीब नहीं है, लट्ठ है, पड़ जाएगी भारी। अभी इश्क छोड़ और भूल जा शोना बेबी, वैलेंटाइन को। छाना-माना बैठा रह और घर में ही क्वारंटाइन हो। ध्यान रखना, घर में ही सब टाइम पास कर रहे हैं, क्योंकि घर के बाहर यमराज और चित्रगुप्त ओवरटाइम कर रहे हैं।

ट्वीट-ट्वीट

कोरोना महामारी पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चर्चा की राह में चीन ने अड़ंगा लगा दिया है। अगर यह आपदा हमारी लापरवाही से फैली होती तो भारत के खिलाफ सुरक्षा परिषद में चर्चा कराने और उसे दंडित करने के लिए मुहिम चलाने में चीन सबसे आगे होता। मगर अभी अंतरराष्ट्रीय बिरादरी के कोप से बचने के लिए वह भारत पर डोरे डाल रहा है।

ब्रह्मा चेलानी@Chellaney

लॉकडाउन के दौरान देश के लाखों गरीबों की मदद के लिए गुरुवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शानदार पैकेज का एलान किया और शुक्रवार को भारतीय रिजर्व बैंक ने जरूरी राहत पहुंचाई। कोरोना के चलते खराब हुए माहौल में इन खुराकों से बाजार के मिजाज में सुधार आना चाहिए।

अरविंद पानगड़िया@APangariya

दुनिया की एक तिहाई आबादी कोरोना वायरस के खतरे के चलते इस समय लॉकडाउन में है। अपने घरों में कैद है। हम सभी के लिए यह जीवन का विरला अनुभव है। लिंग, धर्म, राष्ट्रीयता और नस्ल जैसी तमाम पहचानों से परे अभी हम सभी कोरोना की दवा का इंतजार कर रहे हैं। फिलहाल दुनिया को सबसे ज्यादा जरूरत एकजुटता दिखाने की है।

तसलीमा नसरीन@taslimanasreen

अभी तक तो ठीक है 'दिल' की धड़कन

आलोक मिश्रा
स्थानीय संपादक, बिहार

बिहार डायरी

बिहार भारत का दिल कहा जाता है। देश के नक्शे पर यह वहीं स्थित है, जहां शरीर में दिल होता है। गनीमत है कि उसकी धड़कन में कोई खास फर्क नहीं आया है। जिस अनुपात में देश में संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़ रही है। बिहार में फिलहाल यह काबू में है। अभी तक नौ मरीज ही मिले हैं और मौत भी एक ही हुई है, वह भी उसकी जो बाहर से आया था और जिसकी दोनों किडनी फेल थी। बस चिंता का विषय एक है कि संक्रमित मरीजों के संपर्क में आए सभी लोगों का न मिलना। अगर समय रहते ये न मिले तो दिक्कत बढ़ जाएगी, क्योंकि यह कहां-कहां, किसको-किसको रोग बांट रहे हैं, नहीं मालूम।

घरों में कैद हुए तीन दिन बीत चुके हैं। बिहार की चिंता यह है कि उसका एक हिस्सा दूसरे राज्यों में बसता है। लगभग 85 हजार तो किसी तरह ट्रेनों और बसों में लदकर वापस आ गए, लेकिन बहुत से लोग फंसे ही हैं। जहां हैं, वहां रोटी तक के लाले हैं। हालांकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ऐसे लोगों के खाने व रहने के लिए वहीं इंतजाम कराने के निर्देश दिए हैं, लेकिन उनमें बसा भय दूर नहीं हो रहा। देश ही नहीं विदेश में पढ़ने गए युवकों का हाल तो और भी बुरा है। किर्गिस्तान में मेडिकल की पढ़ाई करने गए 35 छात्रों को तीन दिन से भोजन नहीं मिला है। पासपोर्ट जब्त कर लिया गया है। वापसी की कोई राह नहीं है, केवल मार्मिक गुहार ही गुरुवार को उनके अपनों तक पहुंची। अपने उसे स्थानीय सांसद तक पहुंचा कर राह निहार रहे हैं। जो लोग लौटे हैं, उनसे घर में भीड़ बढ़ गई है और रोटी की दिक्कत हुई सो अलग। घबराए गांव वालों के लिए ये अछूत की तरह हो चले हैं। किसी में हल्का खांसी-जुकाम भी दिखा तो तुरंत सूचना प्रशासनिक अमले को दी जा रही है। यह बेहतर कदम है, लेकिन इस घड़ी में सौहार्द भी बना रहना चाहिए।

तस्वीर लखीसराय जिले के रामगढ़ चौक प्रखंड अंतर्गत दुरडीह गांव जाने वाली सड़क की है जो पढ़े-लिखे शहरी लोगों को नसीहत देने के लिए काफी है। जागरण

सोशल डिस्टेंसिंग के मामले में बिहार के गांव शहरों को सीख दे रहे हैं। लॉकडाउन की घोषणा होते ही आरा, मधुबनी, बांका जैसे तमाम जिलों के कई गांवों में गांव वालों ने खुद ही बाहर से आने का रास्ता बंद कर दिया। अगर बाहर से कोई आ रहा है तो उसे तब तक नहीं घुसने दे रहे, जब तक उसकी जांच न हो जाए। शहरों में जहां राशन और सब्जी के लिए लोग झुंड बना रहे हैं, वहीं पश्चिम चंपारण जैसे जिले में महनाकुलीगंज गांव के लोगों ने खुद की एडवाइजरी जारी कर दी। चौराहे की दुकानों पर भीड़ न जमा हो, इसके लिए दो हजार की आबादी के गांव को आठ हिस्सों में बांटकर सामान लेने के लिए रोस्टर तक कर दिया है। उसी अनुसार लोग जा रहे हैं, जिससे एक बार में दो या तीन लोग ही जुटते हैं। यही काम इस समय देशभर में होना चाहिए। तभी लॉकडाउन की सार्थकता है और तभी कोरोना का खात्मा भी है।

सरकार अपनी तरह से कोई कसर नहीं छोड़ रही! घर-घर राशन पहुंचाने की व्यवस्था है। संक्रमित और उनके संपर्क में आए लोगों की पहचान के लिए घर पर लाल पोस्टर चिपकाए जा रहे हैं। पेंशन वगैरह खाते में डाली जा रही है, लेकिन संसाधनों की कमी राह में रोड़ा है। अस्पतालों में डॉक्टरों के पास सुरक्षा किट न होने से वे परेशान हैं, लेकिन इसके बावजूद बिहार अपने तरीके से बेहतर ढंग से लड़ भी रहा है। गांवों में पंचायतों और स्कूलों में आइसोलेशन के कमरे बनाए गए हैं, ताकि बाहर से आए लोगों को वहां रखा जाए। मुख्य सचिव सभी पंचायतों के मुखिया और सरपंचों से सीधे बात कर चुके हैं। नगर निकायों के प्रतिनिधियों और आंगनबाड़ी सेविकाओं से सीधे बात हो रही, ताकि वे आइसोलेशन को लेकर गांव-गांव तक रिपोर्ट बना सकें, लेकिन दिक्कत यह भी है कि जो संक्रमित मरीज मिले हैं, उनके संपर्क में आए लोगों में से कुछ मिल नहीं रहे। जो मिले हैं, वे भी मौका पाकर भाग जा रहे हैं। उन्हें समझना होगा कि ऐसा करके वे न केवल अपनी जिंदगी को खतरे में डाल रहे हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी आफत ही हैं। लॉकडाउन से उम्मीद बंधी है कि शायद जल्दी ही इस पर काबू पा लिया जाएगा। इसी उम्मीद में घरों में कैद जिंदगी अपने दिन गुजार रही है।

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या 1.70 लाख करोड़ रुपये के राहत पैकेज से कोरोना संकट से मुकाबला करने में मदद मिलेगी?

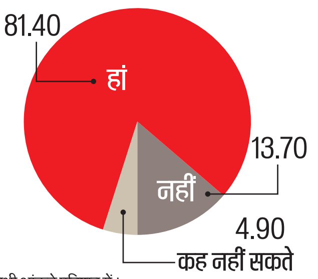

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या आरबीआइ द्वारा उठाए गए कदमों से कोरोना वायरस से अर्थव्यवस्था को बचाने में मदद मिलेगी?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

कोई बाहर से रहा है कुंडी खटकाय,
अगर मुसीबत चाहिए लो घर उसे बुलाय।
लो घर उसे बुलाय नाम उसका कोरोना,
सिर पर रखकर हाथ बाद में जी भर रोना।
घर के बाहर आज मुसीबत लगती सोई,
दरवाजे को खोल न बाहर निकले कोई।

– ओमप्रकाश तिवारी

मंथन

कोरोना के वैक्सीन का इंतजार

संजय श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार

कोरोना वायरस की दवा या वैक्सीन तैयार करने की दिशा में कामयाबी मिलती दिखाई दे रही है, लेकिन आम लोगों के लिए इसे उपलब्ध होने में अभी काफी समय लग सकता है

दुनिया को कोरोना के वैक्सीन का बेसब्री से इंतजार है। इंतजार करने वालों में हम भी हैं। अकेले चीन में ही एकेडमी ऑफ मिलिट्री मेडिकल सर्विसेज और चाइनीज साइंस एकेडमी के 1,200 वैज्ञानिक शोध में जुटे हुए हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैंड, जापान, चीन, रूस, इजराइल और कुछ अन्य देशों की 35 छोटी-बड़ी दवा कंपनियां तथा अकादमिक शोध संस्थान कोरोना की दवा और 41 तरह के वैक्सीन विकसित करने में जुटी हुई हैं। कई कंपनियों का दावा है कि वे दवा और वैक्सीन बनाने के बिल्कुल करीब हैं। कम से कम तीन कंपनियां उस स्थिति में हैं जो कुछ चरणों के बाद उत्पादन की प्रक्रिया में जा सकती हैं। एक कंपनी को अपनी वैक्सीन को सीधे मनुष्यों पर परीक्षण करने की अनुमति मिल चुकी है। दो कंपनियां जानवरों पर सामान्य सा परीक्षण पूरा करके इस ओर अग्रसर हैं। यह गति अप्रत्याशित है। पांच से 15 साल में बनने वाली वैक्सीन 15 महीनों में तैयार करने का दावा किया जा रहा है। पहली बार किसी वैक्सीन का मनुष्यों पर सीधे परीक्षण हो रहा है।

कोरोना की अभी तक कोई दवा नहीं है। हालांकि देश-दुनिया के अनेक हिस्सों में यह दावा किया जा रहा है कि फलां अस्पताल के डॉक्टर ने फलां दवा के जरिये कोरोना का इलाज करने में सफलता प्राप्त की है। जयपुर से जापान तक इन दवाओं की चर्चा है। मलेरिया की दवा क्लोरोक्विन को तो ट्रंप ने गेम चेंजर बता दिया। भारत में एचआइवी की दवा लोपिनाविर और रिटोनाविर काफी चर्चा में हैं। जयपुर के डॉक्टरों ने इनके साथ मलेरिया की क्लोरोक्विन और स्वाइन फ्लू की दवाओं का मिश्रण देकर इटली के मरीज को ठीक करने का दावा किया है।

दिल्ली के अस्पताल में पैरासिटामॉल के साथ एंटीवायरल डोज का इस्तेमाल हो रहा है। ये भी महज तुक्का है तीर नहीं। जापान में एक नए तरह का एनफ्लूएंजा 2014 में हुआ था, उसकी दवा फेवीपिरावीर या एवीगन नोवेल कोरोना में कारगर है, ऐसा चीन और जापान दोनों ने माना है। फ्यूजी फिल्म द्वारा बनाई गई यह दवा मरीजों को चार दिन में पॉजिटिव से निगेटिव कर देती है। क्लोरोक्विन वायरस को मनुष्य की कोशिका से जुड़ने ही नहीं देता। फिर उसके भीतर घुसने और अपने को प्रतिरूपित करने और बढ़ने का मतलब ही नहीं। लेकिन इनमें से कोई दवा सीधे नोवल कोरोना वायरस की नहीं है। न ही उसका पूरा इलाज कर सकती है। रोग होने के बाद माकूल दवा जरूरी है, लेकिन वैक्सीन शरीर की उस प्रतिरक्षक प्रणाली को मजबूत करती है जिसके तहत वह बाहरी रोग के कारणों से लड़ती है जैसे बैक्टीरिया या वायरस से। एक बार वैक्सीन मिल जाने से अगली बार प्रतिरक्षा प्रणाली अपने बाहरी दुश्मनों को पहचान जाती है। वह उसके आक्रमण या उससे भी पहले ही सचेत होकर उसका मुकाबला करती है।

मोडर्ना नामक कंपनी मनुष्यों पर क्लिनिकल ट्रायल की पहली प्रक्रिया पूरी करने वाली है। इसने इस वैक्सीन को नोवेल कोरोना के मेसेंजर आरएनए के जेनेटिक सीक्वेंस के आधार पर तैयार किया है, जबकि पारंपरिक वैक्सीन वायरस का ही इस्तेमाल करके बनती है। यह वैक्सीन सीधे मानव कोशिका तक पहुंचकर वायरस के खिलाफ एंटीबॉडीज का निर्माण करेगी। रेजेमेरॉन दूसरी कंपनी है जो वायरस का ही इस्तेमाल कर वैक्सीन बना रही है। इसमें जेनेटिकली मॉडीफाइड चूहे को मानवीय प्रतिरक्षा प्रणाली के प्रतिरूप के तौर पर बनाया गया है और फिर उसको वायरस से संक्रमित करके उससे वैक्सीन बनाया गया। यह मानव शरीर में पहुंचकर वायरस से लड़ने वला एंटीबॉडी बनाएगा। यह वैक्सीन तब भी कारगर हेगा, जबकि कोरोना अपना रूप बदल रहा हो। रेजिनेरॉन द्वारा बनाया गया वैक्सीन इस प्रोटीन परत को तहस नहस करेगा। यह दवा रोगी होने के बाद भी इस्तेमाल होगी और बचाव में भी काम आएगी। इस तरह की प्रिवेंटिव दवाओं को पैसिव वैक्सीन कहते हैं। इनावियो फार्मास्यूटिकल्स ने चीन द्वारा इस वायरस के सीक्वेंस को ऑनलाइन मुहैया कराने के तीन घंटे के भीतर विकसित कर लिया। इसने डीएनए आधारित वैक्सीन बनाया है। यह वैक्सीन कोशिका में सीधे प्रविष्ट होकर स्वाभाविक प्रतिरक्षी प्रतिक्रिया को मजबूत करने वाली मशीनरी को ताकत देने लगता है।

इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण पक्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन का है। उसका कहना है कि प्रक्रियागत छूट दिए जाने के बाद भी अभी बहुत से वैक्सीन इस स्तर पर नहीं पहुंचे हैं कि उनका मानवों पर परीक्षण भी किया जा सके। बिना पशुओं पर परीक्षण किए इसे मनुष्यों पर लागू करना खतरनाक है। मनुष्यों पर क्लीनिकल ट्रायल भी अभी पहले स्टेज में है। यह जांचना अत्यावश्यक है कि बनाए जाने वाला वैक्सीन मनुष्यों की प्रतिरक्षा प्रणाली या इम्यून सिस्टम पर क्या प्रभाव डालेगा? यह जांचे जाने में भी अभी देर लगेगी कि वैक्सीन मनुष्य के शरीर में पहुंचकर किस जैविक तरीके से काम करती है। सुरक्षा, साइड इफेक्ट, वैक्सीन की डोज, मात्रा, खुराक सब तय करना होगा। इस कुछ विस्तार से तय करना होगा। यह प्रक्रिया बहुत जटिल एवं अत्यंत संवेदनशील है। इसमें परीक्षण के लिए खास प्रकार के लोग चुने जाते हैं और यह प्रक्रिया लंबी चलती है। लिहाजा अभी इसमें बहुत समय लग सकता है।

आर्थिक मंदी में प्रवेश कर चुकी दुनिया : आइएमएफ

वाशिंगटन, एजेंसियां : अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) की प्रमुख क्रिस्टलिना जॉर्जीवा ने शुक्रवार को कहा कि कोरोना संकट के चलते दुनियाभर की इकोनॉमी आर्थिक मंदी में प्रवेश कर चुकी है। उनके मुताबिक इस संकट से उबरने के लिए दुनियाभर की विकसित अर्थव्यवस्थाओं को बड़ी रकम और मदद की दरकार होगी। जॉर्जीवा के मुताबिक अच्छी बात यह है कि दुनियाभर के शीर्ष नेताओं ने माना है कि इस संकट से निपटने के लिए सम्मिलित प्रयास ही कारगर साबित होंगे।

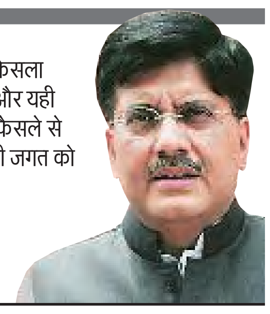

आरबीआइ का फैसला स्वागतयोग्य है और यही समय की मांग थी। इस फैसले से आम जनों और कारोबारी जगत को बड़ी राहत मिलेगी।
— पीयूष गोयल
वाणिज्य व उद्योग मंत्री

मदद के लिए जिस पर सबकी नजर उसी सरकारी खजाने को लगी नजर

हालात ▶ कोरोना की वजह से चालू और अगले वित्त वर्ष के टैक्स संग्रह में बड़ी कमी के आसार

21 दिन के लॉकडाउन से अगले वित्त वर्ष में जीडीपी पर 1.7 फीसद का असर

राजीव कुमार, नई दिल्ली

कोरोना के प्रभाव से जनता को बचाने के लिए सरकार ने एक तरफ जहां खजाना खोल दिया है, वहीं खजाने में आने वाली राशि पर बुरी नजर लग गई है। डायरेक्ट टैक्स और जीएसटी दोनों ही टैक्स कलेक्शन में सिर्फ चालू वित्त वर्ष ही नहीं, अगले वित्त वर्ष में भी गिरावट की आशंका है।

अगले सप्ताह मंगलवार को खत्म होने वाले चालू वित्त वर्ष के जीएसटी कलेक्शन में संशोधित लक्ष्य के मुकाबले पांच फीसद तक की गिरावट रह सकती है। वित्त मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक इस साल 29 फरवरी तक जीएसटी कर का वास्तविक संग्रह 8.75 लाख करोड़ रुपये था जो कि संशोधित अनुमानित लक्ष्य से 1.11 लाख करोड़ रुपये कम है। अप्रत्यक्ष कर संग्रह का संशोधित अनुमानित लक्ष्य 9.86 लाख करोड़ रुपये है। विशेषज्ञों के मुताबिक टैक्स कलेक्शन के रुख को देखते हुए अगर सरकार मार्च महीने में कुल लक्ष्य का 12 फीसद वसूलने में कामयाब हो जाती है तो भी लक्ष्य के मुकाबले 6,000 करोड़ रुपये की गिरावट रह सकती है।

वित्त मंत्री की तरफ से राज्यसभा को दी गई जानकारी के मुताबिक चालू वित्त वर्ष में 10 मार्च तक डायरेक्ट टैक्स का कुल कलेक्शन 8.63 लाख करोड़ रुपये था जो कि चालू वित्त वर्ष के संशोधित अनुमानित लक्ष्य 11.70 लाख करोड़ से 3.06 करोड़ रुपये कम था। पहले यह लक्ष्य 13.35 लाख करोड़ रुपये का था जिसे इस वर्ष पहली फरवरी को पेश बजट में संशोधित किया गया। हालांकि टैक्स विशेषज्ञों का मानना है कि अंतिम 15-20 दिनों में टैक्स कलेक्शन में तेजी आती है, फिर भी संशोधित लक्ष्य को हासिल करना मुमकिन नहीं दिख रहा है। एसबीआइ के मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. एसके घोष के अनुमान के मुताबिक चालू वित्त वर्ष में डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन में 1.2 लाख करोड़ (लगभग 10 फीसद) की कमी रह सकती है।

टैक्स एक्सपर्ट एवं डेलॉय के पार्टनर एमएस मनी के मुताबिक कोरोना की वजह से सेवा क्षेत्र से लेकर आयात तक सब में गिरावट आई है। आयात कम होने से आइजीएसटी का कलेक्शन कम होगा। वस्तुओं की बिक्री होने पर ही जीएसटी कलेक्शन में बढ़ोतरी होगी। विशेषज्ञों का कहना है कि पहली अप्रैल से शुरू होने वाले वित्त वर्ष (2020-21) के दौरान भी प्रत्यक्ष और परोक्ष, दोनों प्रकार के टैक्स कलेक्शन में कमी आएगी। सरकार ने वित्त वर्ष 2020-21 के लिए दोनों टैक्स के कुल कलेक्शन में चालू वित्त वर्ष के मुकाबले 12 फीसद की बढ़ोतरी का लक्ष्य रखा है जो 24.23 लाख करोड़ रुपये है। लेकिन इस दौरान कोरोना के असर को देखते हुए विशेषज्ञ इसे हासिल करना बेहद कठिन बता रहे हैं। एसबीआइ इकोरैप के अनुमान के मुताबिक इस 21 दिन के लॉकडाउन से आगामी वित्त वर्ष 2020-21 के जीडीपी पर 1.7 फीसद का असर दिखेगा, क्योंकि इस दौरान देश की 70 फीसद आर्थिक गतिविधियां ठप हैं। इस लॉकडाउन से 8.03 लाख करोड़ के उत्पादन का नुकसान होगा। वहीं श्रमिकों की आय में 1.77 लाख करोड़ रुपये कमी की आशंका है। वित्त वर्ष 2020-21 में सकल घरेलू उत्पाद की बढ़ोतरी दर मात्र 2.6 फीसद रह सकती है। विशेषज्ञों के मुताबिक आय में कमी से डायरेक्ट टैक्स में कमी आएगी। आय कम होने से वस्तुओं की बिक्री प्रभावित होगी और वस्तुओं व सेवा की खपत में कमी आएगी तो जीएसटी कलेक्शन कम होगा।

विकास दर का अनुमान लगाने से आरबीआइ का परहेज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) की तरफ से मौद्रिक नीति की समीक्षा हो और विकास दर या महंगाई दर पर समिति चुप्पी साध ले, ऐसा अमूमन नहीं होता है। लेकिन शुक्रवार को ऐसा हुआ, जब आरबीआइ ने कोविड-19 कोरोना वायरस के मौजूदा संकट के बीच अपनी मौद्रिक नीति समीक्षा रिपोर्ट पेश की। आरबीआइ ने यह तो तो कहा है कि देश की आर्थिक विकास दर पर काफी दबाव है, लेकिन यह दबाव कितना है यह इस बात से तय होगा कि कोविड-19 कितने दिनों तक रहता है और इसका असर होता है। हालांकि उन्होंने यह कहा कि महंगाई की स्थिति बिगड़ेगी नहीं। फल-सब्जियों व मोटे अनाजों का पर्याप्त उत्पादन होगा जिससे राहत रहेगी। लेकिन केंद्रीय बैंक ने महंगाई का कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है।

आरबीआइ गवर्नर डॉ. शक्तिकांत दास ने कहा कि, 'अब जो हालात बन गए हैं, उसे देखते हुए वर्ष 2019-20 की अंतिम तिमाही के लिए तय 4.7 फीसद और वर्ष 2020-21 की अगली तिमाही के लिए पांच फीसद के विकास दर के लक्ष्य को हासिल करना मुश्किल है। जिस तरह की अनिश्चितता बनी है, उससे फिलहाल विकास दर या महंगाई का कोई लक्ष्य नहीं रखा जा रहा है।' इस महामारी से कृषि व इससे जुड़े कुछ क्षेत्रों को छोड़ दें तो अधिकांश सेक्टर पर काफी विपरीत असर पड़ने की संभावना है। अगर महामारी और भंयकर रूप लेती है तो वैश्विक मंदी और ज्यादा गहराएगी और इसका असर भारत की अर्थव्यवस्था पर ज्यादा होगा। असल में आरबीआइ महंगाई का जो लक्ष्य रखता है, उसी के आधार पर वह सारी नीतियां तय करता है।

देश के बैंक पूरी तरह मजबूत और सुरक्षित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : देश की बैंकिंग व्यवस्था को लेकर पिछले कुछ समय में ग्राहकों का भरोसा जिस तरह डगमगाया है, उसे वापस मजबूती देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) के साथ-साथ सरकार भी सामने आई है। आरबीआइ ने शुक्रवार को बैंकिंग प्रणाली को पूरी तरह से मजबूत व सुरक्षित बताया तो कोरोना की वजह से बैंकों के कामकाज बंद होने की अफवाह को वित्त मंत्रालय ने एक सिरे से खारिज कर दिया। पिछले दिनों पीएमसी और यस बैंक की घटना एवं उसके बाद कोरोना की वजह से किये जा रहे लॉकडाउन से लोगों के मन में बैंकिंग प्रणाली को लेकर कई आशंकाएं उठने लगी थी। देश के कई हिस्सों से बैंकों से भारी मात्रा में जमा पूंजी निकालने की खबरें भी आई हैं। शुक्रवार को वित्त मंत्रालय ने कहा कि कोई भी बैंक शाखा बंद नहीं हो रही है और ग्राहकों को पहले की तरह ही सेवाएं मिलती रहेंगी। पिछले दो दिनों से कोरोना के लॉकडाउन के कारण बैंकों में कामकाज ठप होने की अफवाह चल रही थी। इस बारे में इंडियन बैंक एसोसिएशन की तरफ से भी स्पष्टीकरण जारी किया गया।

एसबीआइ का कर्ज 0.75 फीसद सस्ता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक ने आरबीआइ की तरफ से रेपो रेट में की गई पूरी कटौती का फायदा ग्राहकों को देने का फैसला किया गया है। शुक्रवार देर शाम एसबीआइ ने एलान किया है कि वह सभी तरह के कर्जे पर ब्याज दरों में 0.75 आधार अंकों की कटौती कर रहा है। बैंक ने कहा है कि ब्याज दर तय करने के दोनों तरीकों एक्सटर्नल बेंचमार्क लिंक्ट लेंडिंग रेट (इबीआर) और रेपो लिंक्ड लेंडिंग रेट (आरएलएलआर) में वह पहली अप्रैल से 0.75 फीसद की कटौती कर रहा है। इसका असर यह होगा कि 30 वर्ष की परिपक्वता अवधि वाले होम लोन पर देय मासिक किस्त में 52 रुपये प्रति लाख रुपये की कमी आएगी।

स्वचालित तरीके से लागू होगा आरबीआइ का निर्देश

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

आरबीआइ की घोषणा के बाद भारतीय स्टेट बैंक के चेयरमैन रजनीश कुमार ने बताया कि, 'आरबीआइ ने बैंकों को जो निर्देश दिया है वह स्वचालित तरीके से लागू होगा। उसके बाद चौथे महीने से ही किस्त देनी होगी। इसके लिए ग्राहकों को अलग से कोई आवेदन आदि नहीं देना है। परिसंपत्तियों को बंधक देकर लिया गया कर्ज भी टर्म लोन माना जाएगा यानी ऐसे ग्राहकों को भी इस घोषणा का लाभ होगा। जहां तक वर्किंग कैपिटल लोन की बात है तो यह 'केस टू केस' तय होगा। जिन उद्यमियों का काम काज कोरोना वायरस से प्रभावित हुआ है उन्हें तीन महीने तक बैंकिंग कर्ज पर ब्याज नहीं देना होगा। आरबीआइ ने कहा है कि तीन महीने बाद यानी चौथे महीने इन तीन महीनों का ब्याज देना होगा।'

बीएस-4 वाहनों की बिक्री पर मामूली रियायत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- दिल्ली-एनसीआर को कोई राहत नहीं, 31 मार्च के बाद से नहीं बिकेंगे बीएस-4 वाहन
- देश के अन्य हिस्से में कंपनियां 10 प्रतिशत स्टॉक बेच सकेंगी
- कंपनियों के पास सात हजार करोड़ रुपये मूल्य के बीएस-4 वाहनों की इनवेंट्री

प्रतीकात्मक

कोरोना लॉकडाउन के कारण वाहनों की बिक्री नहीं होने से परेशान वाहन निमार्ता कंपनियों को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिल गई है। सुप्रीम कोर्ट ने बीएस-4 मानक वाले वाहनों की बिक्री पर थोड़ी रियायत दे दी है।

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को बीएस-4 वाहनों की बिक्री सिर्फ 31 मार्च तक किए जाने के पूर्व आदेश में छूट दी है। इसके तहत बिक्री से बचे हुए ऐसे वाहनों में से 10 फीसद को लॉकडाउन समाप्त होने के बाद 10 दिनों के भीतर बेचने की रियायत दी है। हालांकि दिल्ली-एनसीआर में इनकी बिक्री 31 मार्च के बाद किसी सूरत में नहीं होगी।

इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि 31 मार्च के बाद देशभर में बीएस-4 वाहनों की बिक्री नहीं होगी और पहली अप्रैल से सिर्फ बीएस-6 मानक वाले वाहन ही बिकेंगे। शुक्रवार को यह आदेश न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा की अध्यक्षता वाली दो सदस्यीय पीठ ने वाहन निर्माता कंपनियों के संघ की ओर से दाखिल याचिका पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये अर्जेंट सुनवाई में दिया। वाहन निर्माता कंपनियों ने बीएस-4 मानक के 7,000 करोड़ रुपये मूल्य के अनबिके वाहनों की दुहाई देते हुए सुप्रीम कोर्ट से इनकी बिक्री समय-सीमा बढ़ाए जाने का अनुरोध किया था।

वाहन निमार्ताओं का कहना था कि कोरोना के चलते हुए लॉकडाउन के कारण वाहनों की बिक्री नहीं हो रही है। ऐसे में कोर्ट 31 मार्च की समय सीमा 30 दिन के लिए और बढ़ा दे। लेकिन इसके लिए कोर्ट राजी नहीं हुआ। बिक्री की इजाजत देते हुए यह शर्त भी जोड़ी कि इन वाहनों को विक्री के 10 दिनों के भीतर पंजीकृत हो जाना चाहिए। कंपनियों के पास अनबिके वाहनों में पंद्रह हजार कारें और 12 हजार कॉमर्शियल वाहनों के साथ सात लाख दोपहिया वाहन हैं।

हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन की खुली बिक्री पर रोक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- स्डॉक्टर के प्रेस्क्रिप्शन पर मिलेगी दवा, रखा जाएगा रिकॉर्ड

कोरोना वायरस से बचने के लिए मलेरिया की दवा हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन के निर्यात पर पहले ही रोक लग गई थी। अब सरकार ने इसकी खुली बिक्री को प्रतिबंधित कर दिया है। अब केमिस्ट इस दवा को केवल पंजीकृत डॉक्टर की पर्ची के आधार पर ही बेच सकेंगे। साथ ही उसे उस पर्ची की एक प्रति ड्रग विभाग को जमा करानी होगी। मलेरिया की दवा की बिक्री पर प्रतिबंध पहली बार लगा है। अभी तक इस दवा को बिना डॉक्टर की पर्ची के भी कोई भी खरीद सकता था।

स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि कोरोना वायरस से बचाव और इलाज में हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन के कारगर होने की अधकचरी जानकारी के कारण बड़ी संख्या में लोग इसका इस्तेमाल करने लगे थे। बिना डॉक्टर की सलाह के इस दवा के प्रयोग न करने के आइसीएमआर के वैज्ञानिकों के बार-बार अनुरोध के बावजूद लोग मान नहीं रहे थे। यहां तक कि सोशल मीडिया और इंटरनेट पर इस दवा के कोरोना वायरस को रोकने में सफल रहने के दावे के बीच इसके इस्तेमाल की सलाह दी जा रही थी। उन्होंने कहा कि हकीकत यह है कि इस दवा के ज्यादा प्रयोग से आंख की गंभीर बीमारी भी हो सकती है। इसके साथ ही लिवर, दिल और किडनी की बीमारियों से जूझ रहे मरीजों पर इसका दुष्प्रभाव घातक हो सकता है।

'कोरोना का अर्थव्यवस्था पर होगा दीर्घकालीन परिणाम'

राज्य ब्यूरो, मुंबई

रखे विचार
- राकांपा प्रमुख ने कहा, देश को उबरने में लग सकते हैं साल-डेढ़ साल
- केंद्र सरकार और रिजर्व बैंक के कदमों को सराहा

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष शरद पवार का मानना है कि कोरोना महामारी का अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालीन असर होगा और इससे उबरने में देश को साल-डेढ़ साल लग सकते हैं। वह शुक्रवार को फेसबुक लाइव के जरिये महाराष्ट्रवासियों से बात कर रहे थे।

पवार का मानना है कि देश पर आया कोरोना का संकट अत्यंत गंभीर है। इसके दुष्परिणाम मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षियों पर भी होंगे। इससे हर व्यक्ति का आर्थिक गणित बिगड़ेगा। उन्होंने कहा, 'यह संकट बहुत बड़ा है। इसे नजरअंदाज करना उचित नहीं है। घर में रहिए। मैं भी घर में रह रहा हूं। एक-दो लोगों को छोड़कर मैं किसी से मिल भी नहीं रहा हूं। केंद्र एवं राज्य सरकार ने जो निर्देश दिए हैं, उनका पालन करिए। नहीं तो इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।'

राकांपा अध्यक्ष ने कहा कि इस समय पुलिस, डॉक्टर एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मी उदारतापूर्वक दिनरात काम कर रहे हैं। इन्हें वेतन में एक बढ़ोतरी देने का निर्णय सरकार को करना चाहिए। उन्होंने कोरोना संकट के दौरान आम लोगों की मदद के लिए केंद्र सरकार द्वारा दिए गए पैकेज एवं रिजर्व बैंक द्वारा उठाए गए कदमों का स्वागत किया, लेकिन कृषि क्षेत्र के लिए इसे अपर्याप्त बताया। उनका मानना है कि किसानों के लिए ठोस उपाय करने की जरूरत है। गरीबों को मुफ्त अनाज देने का निर्णय स्वागतयोग्य है, लेकिन इसका अर्थव्यवस्था को कोई लाभ नहीं होगा। सरकार को खेती से संबंधित सामान की खरीद में राहत देनी चाहिए। किसान कृषि कर्ज की किस्तें देने की स्थिति में नहीं हैं। उसे 4-5 वर्ष के लिए माफ करने की जरूरत है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि केंद्र सरकार द्वारा घोषित योजनाएं लोगों तक पहुंच सकें।

शरद पवार। फाइल

गेहूं कटाई पर रोक नहीं, मौसम के चलते फसल पकने में हो रही देरी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- गेहूं उत्पादक राज्य भंडारण पर किसानों को देंगे प्रोत्साहन
- रात का तापमान नहीं बढ़ने से चालू सीजन में होगी रिकॉर्ड पैदावार

देशव्यापी लॉकडाउन के बावजूद खेतों में तैयार खड़ी गेहूं की फसल की कटाई के लिए कोई पाबंदी नहीं है। कृषि से जुड़ी समस्त गतिविधियों को आवश्यक सूची में शामिल कर लिया गया है। पूर्ण लॉकडाउन के बावजूद सभी राज्यों में इसकी छूट है। किसानों को उनके गेहूं की फसल की कटाई के लिए कई राज्य सरकारों ने मदद की पेशकश भी की है। इसके लिए कंबाइनर हारवेस्टर समेत कई अन्य तरह की मशीनें मुहैया कराई जा रही हैं। किसानों को उनके खेतों व खलिहानों से तैयार अनाज को घर में रखने यानी भंडारण करने के लिए भी मदद दी जाएगी। इसके लिए किसानों को केंद्र सरकार से लेकर राज्य सरकारें तक हरसंभव वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही हैं।

कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक रात का तापमान नहीं बढ़ने की वजह से इस बार गेहूं की फसल के पकने में देरी हो रही है। इसलिए फसल की कटाई पर लॉकडाउन का कोई असर नहीं पड़ेगा। जबकि इस बार गेहूं की पैदावार बहुत अधिक होने का अनुमान है, जो अब तक का सर्वाधिक होगा। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी एडवांस एस्टीमेट के मुताबिक, चालू रबी सीजन में 10.70 करोड़ टन से भी अधिक गेहूं के उत्पादन की संभावना है। गेहूं की खेती करने वाले प्रमुख बड़े राज्यों में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब और हरियाणा शामिल हैं।

पंजाब व हरियाणा में नहीं पकी फसल: इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ व्हीट एंड बार्ले रिसर्च के निदेशक डॉक्टर जीपी सिंह का कहना है कि इस रबी सीजन में गेहूं उत्पादन रिकार्डतोड़ होने वाला है। मौसम ने खूब साथ दिया है। मार्च के दौरान जहां तापमान बढ़ जाया करता था, उसकी जगह इस समय रात का तापमान बहुत नीचे जा रहा है।

इसके चलते गेहूं के दानों को पकने में समय लगेगा और दाने मोटे होंगे। डॉक्टर सिंह का अनुमान है पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गेहूं की कटाई 15 से 20 अप्रैल के बाद ही संभव हो पाएगी। लॉकडाउन का गेहूं की खेती अथवा किसानों पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ने वाला है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गेहूं की कटाई सामान्य तौर पर अप्रैल के अंतिम सप्ताह में होती है।

मध्य प्रदेश और गुजरात में गेहूं की कटाई फरवरी के आखिरी सप्ताह से शुरू होकर मार्च के पहले सप्ताह में ही समाप्त हो जाती है। वहां कटाई हो चुकी है। डॉक्टर सिंह का अनुमान है कि देश में गेहूं की कटाई का 80 फीसद से अधिक मशीनों से होती है। मजदूरों की कमी और खराब मौसम की मार से बचने के लिए किसान अपने खेतों पर गेहूं की कटाई सीधे कंबाइनर हारवेस्टर से ही कराना पसंद करते हैं। अब तो सरसों और चना की कटाई भी मशीनें करने लगी हैं।

कटाई करने वालों को मदद: हरियाणा में सरकार ने गेहूं किसानों के लिए विशेष योजना चालू की है, जिसके तहत लॉकडाउन के दौरान गेहूं की कटाई करने वाले किसानों को मशीनें उपलब्ध कराई जाएंगी। तैयार गेहूं को अपने घर में 20 अप्रैल तक भंडारण करने वाले किसानों को राज्य सरकार प्रति क्विंटल के हिसाब से प्रोत्साहन राशि देगी।

पंजाब व हरियाणा में सामान्य तौर पर गेहूं की सरकारी खरीद बैसाखी के बाद ही तेजी पकड़ती है, जो इस बार और आगे बढ़ सकती है। गेहूं उत्पादक राज्यों में कृषि से जुड़ी सभी गतिविधियों को आवश्यक सूची में डाल दिया गया है। कंबाइनर, ट्रैक्टर और अन्य उपकरणों के आने-जाने पर पाबंदी हटा ली गई है।

ब्रह्माकुमारीज की प्रमुख दादी जानकी का 104 वर्ष की आयु में निधन

राज्य ब्यूरो, जयपुर

दादी जानकी की फाइल फोटो।

राजस्थान में माउंट आबू के एक निजी अस्पताल में ली अंतिम सांस

महिलाओं द्वारा संचालित दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका तथा स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एंबेसडर राजयोगिनी दादी जानकी का 104 वर्ष की आयु में शुक्रवार को निधन हो गया। राजस्थान के माउंट आबू के एक निजी अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। उन्हें दो महीने से सांस और पेट संबंधी तकलीफ थी। उनका अंतिम संस्कार ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में सम्मेलन सभागार के सामने स्थित मैदान में किया गया।

संस्थान के प्रवक्ता बीके कोमल ने बताया कि कोरोना वायरस संक्रमण के चलते अंतिम संस्कार में संस्था के कुछ पदाधिकारी और कार्यकर्ता ही शामिल हुए। इस दौरान सरकार की ओर से जारी गाइड लाइन का पालन किया गया। अंतिम संस्कार में शामिल लोगों ने मास्क पहना हुआ था और उचित दूरी भी बनाए हुए थे। लॉकडाउन होने के कारण संस्थान के बहुसंख्य लोग दादी की पार्थिव देह पर श्रद्धासुमन अर्पित नहीं कर सके। हालांकि, देश-विदेश के संस्था से जुड़े लोगों को यू-ट्यूब तथा लाइव टेलिकास्ट के जरिये अंतिम दर्शन करवाया गया।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ने शोक व्यक्त किया : दादी जानकी के निधन पर देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए ट्वीट किया। उन्होंने ट्वीट में लिखा कि अध्यात्म, समाज कल्याण और विशेष रूप में महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में उनका योगदान अमूल्य रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दूसरों का जीवन बदलने में तथा नारी शक्ति के आध्यात्मिक सशक्तीकरण में उनका अमूल्य योगदान रहा है।

140 देशों में दिया भारतीय संस्कृति का संदेश : राजस्थान के माउंट आबू से संचालित ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय संस्थान विश्व का एकमात्र संगठन है, जिसका संचालन महिलाएं करती हैं। इसकी 46 हजार सदस्यों की प्रेरणास्रोत थीं दादी जानकी। उन्होंने इस संस्थान के सेवा केंद्रों के माध्यम से दुनिया के 140 देशों में भारतीय आध्यात्म और संस्कृति की खुशबू फैलाई थी।

21 वर्ष की उम्र में जुड़ी थीं संस्थान से : दादी जानकी का जन्म अविभाजित भारत के हैदराबाद-सिंध प्रांत में 1916 में हुआ था। 21 वर्ष की उम्र में वह ओम मंडली (ब्रह्माकुमारीज का पहले यही नाम था) से जुड़ गई थीं। 1970 में दूसरे देशों की यात्रा पर निकलीं और लंदन में कोऑपरेशन हाउस की स्थापना की। इसके बाद 140 देशों तक उन्होंने इस संस्थान को पहुंचाया। इनके जरिये आज विश्वभर में लोग भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का अनुभव ले रहे हैं। 25 अगस्त, 2007 को ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के देहावसान के बाद राजयोगिनी दादी जानकी 94 वर्ष की उम्र में ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका बनीं।

भिलाई स्टील प्लांट के कर्मचारी भड़के, रेल पटरी उत्पादन ठप

नईदुनिया, भिलाई

कोरोना के खौफ के चलते उत्पादन कम करने की मांग कर रहे भिलाई स्टील प्लांट (बीएसपी) के कर्मचारियों ने शुक्रवार को काम बंद कर दिया। इससे रेल पटरी का उत्पादन ठप हो गया।

सबसे पहले बीआरएम (बार एंड रॉड मिल) के कर्मचारियों ने काम का बहिष्कार किया, जिसके बाद रेल मिल और यूनिवर्सल रेल मिल में भी कर्मचारियों ने 'जान है तो जहान है' का नारा लगाते हुए घरों की ओर जाना शुरू कर दिया। इसके बाद यूनिवर्सल रेलमिल के करीब 400 नियमित और 700 ठेका मजदूर भी बगावत के मूड में आ गए। उधर, खुर्सीपार में कोरोना पॉजिटिव मरीज मिलने के बाद प्रबंधन ने संयंत्र के खुर्सीपार गेट को बंद कर दिया है। इस गेट से करीब सात हजार कर्मचारी व श्रमिक प्लांट में आते हैं। गौरतलब है कि भिलाई स्टील प्लांट के कर्मचारी कई दिनों से मांग कर रहे थे कि कोरोना को देखते हुए प्लांट में उत्पादन को बंद कर दिया जाए, जबकि प्रबंधन आवश्यक सेवाओं की बात कहकर उत्पादन को बहाल किए हुए था। शुक्रवार को हुई इन घटनाओं के बाद प्रबंधन तनाव में आ गया है। माना जा रहा है कि जल्द ही पूरे प्लांट को बंद करने की अधिकारिक घोषणा की जा सकती है। उधर, बीएसपी के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (कार्मिक एवं प्रशासन) सुरेश कुमार दुबे की ओर से जारी सर्कुलर में मिल और शॉप को बंद करने की पुष्टि की गई है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री बेनी प्रसाद वर्मा का निधन

बेनी प्रसाद वर्मा की फाइल फोटो।

जागरण संवाददाता, लखनऊ : पूर्व केंद्रीय मंत्री और उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके समाजवादी नेता बेनी प्रसाद वर्मा (79) का शुक्रवार को साढ़े छह बजे निधन हो गया। तबीयत खराब होने पर शुक्रवार दोपहर 2 जे उन्हें लखनऊ स्थित मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। 'बेनी बाबू' के नाम से प्रसिद्ध वर्मा समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्यों में थे और मुलायम सिंह यादव के करीबी माने जाते थे। उनके निधन पर मुलायम और सपा अध्यक्ष अखिलेश समेत कई नेताओं ने शोक जताया है। उनका अंतिम संस्कार शनिवार को पूर्वाह्न 11 बजे बाराबंकी में उनके गांव में किया जाएगा।

पहली पत्नी जीवित तो दूसरी नहीं गुजारा भत्ता की हकदार

दयानंद शर्मा, चंडीगढ़

- पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने दिया अहम फैसला
- दूसरी पत्नी से पैदा हुई अविवाहित पुत्री गुजारे भत्ते की हकदार

पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान स्पष्ट किया है कि अगर पहली पत्नी के होते हुए पुरुष दूसरी महिला से विवाह करता है तो वह गुजारा भत्ते की कानूनी हकदार नहीं हो सकती। लेकिन इस विवाह से उत्पन्न अविवाहित पुत्री गुजारा भत्ता मांग सकती है।

हाई कोर्ट ने आपराधिक प्रक्रिया संहिता की धारा 125 का जिक्र करते कहा कि पत्नी को परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन कानूनी रूप से विवाहित पत्नी के अतिरिक्त किसी भी महिला को पत्नी नहीं माना जा सकता। हिंदू विवाह कानून की धारा पांच में बताया गया है कि यदि दोनों में से किसी का भी जीवनसाथी जीवित नहीं है, तो वे एक-दूसरे से शादी कर सकते हैं। इस प्रकार कोई भी विवाह जिसमें इस प्रावधान का उल्लंघन किया गया है, वह अमान्य होगा। हाई कोर्ट ने कहा कि यहां याचिकाकर्ता वह दूसरी पत्नी है, जो यह जानते हुए भी प्रतिवादी से विवाह करती है कि उसकी पहली पत्नी जीवित है और उसे तलाक भी नहीं दिया गया है। इसलिए वह धारा 125 के तहत तो गुजारा भत्ते ही हकदार नहीं है। किसी अन्य कानून में उसे राहत प्रदान की जा सकती है।

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में आंशिक बादलों के साथ मौसम शुष्क रहेगा। दिन के तापमान में वृद्धि होगी। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में एक-दो स्थानों पर गरज के साथ वर्षा होगी। दिन के तापमान में वर्षा में कमी के कारण वृद्धि होगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	35/21/आंबा	अहमदाबाद	39/16/व
कोलकाता	33/21/आंबा	बड़ौदा	38/16/सा
चेन्नई	34/26/व	नागपुर	35/20/व
हैदराबाद	35/23/आंबा	इन्दौर	34/17/व
बंगलूरू	34/22/आंबा	राँची	30/16/व
त्रिवेन्द्रम	34/26/आंबा	पटना	32/17/व
गुवाहाटी	34/21/आंबा	जमशेदपुर	32/17/व
गंगटोक	15/08/आंबा	पुणे	35/18/व

2000 से ज्यादा भारतीय कोरोना वायरस फैलने के बाद सरकार द्वारा लागू लॉकडाउन के कारण श्रीलंका में फंसे हैं। श्रीलंका पर्यटन एवं विकास प्राधिकार की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक, देश में फंसे पर्यटकों में सबसे ज्यादा 2,439 भारतीय हैं।

पैंगोलिन के जरिये कोरोना फैलाने की आशंका

- चीन में तस्करी से पहुंचाया जाता है चींटीखोर स्तनपाई जीव
- वैसे शोधकर्ता अभी दावे से कुछ कहने की स्थिति में नहीं

बीजिंग, प्रेट्र : एक अध्ययन के अनुसार अनुमान लगाया जा रहा है चीन में तस्करी के जरिये पहुंचे चींटीखोर पैंगोलिन से तो कहीं कोरोना वायरस फैला।

नेचर पत्रिका में छपी एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार चीन में दूसरे देशों से तस्करी करके लाये गये पैंगोलिन में जो कोरोना वायरस मिले उनमें और कोविड-19 में इतनी समानता नहीं है कि इस बात को अभी दावे से कहा जा सके कि यही जीव कोरोना की महामारी फैलाने का जिम्मेदार है।

इस संबंध में हांगकांग विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं समेत अनेक विशेषज्ञों ने बताया कि पैंगोलिन दूसरा ऐसा स्तनपाई जीव है जो कोरोना वायरस का करियर है। उन्होंने कहा कि भविष्य में किसी वायरस जनित बीमारी को रोकने के लिए जरूरी है कि पैंगोलिन की खरीद बिक्री पर सख्ती से रोक लगाई जाये।

चीन में पैंगोलिन की खरीद बिक्री पर सख्ती से रोक लगाने की हो रही मांग। फाइल

शोधकर्ताओं का मानना है कि अभी तक मिले प्रमाणों से चमगादड़ ऐसा जीव है जिसके शरीर में जानलेवा सार्स-सीओवी-2 वायरस बहुतायत से पाया जाता है। चमगादड़ के संपर्क में आकर किन किन जीवों के जरिये मानव शरीर में वायरस पहुंचा यह अभी रहस्य है।

कोरोना फैलते ही समुद्री जीवों पर जो संदेह व्यक्त किया गया था वह कुछ दिनों बाद ही दूर हो गया था। इसके बाद पैंगोलिन ही ऐसा संभावित जीव माना जा रहा है जिससे इस बीमारी के फैलने की आशंका हो सकती है। चीन में इसका उपयोग खाने और दवाओं में होता है।

इस अध्ययन रिपोर्ट में अगस्त 2017 से जनवरी 2018 के बीच मलाया से तस्करी कर दक्षिण चीन लाये गये 18 पैंगोलिन के नमूनों को शामिल किया गया है। इनमें से पांच में सार्स-सीओवी-2 वायरस पाये गये थे जो कोरोना परिवार के होते हैं। इसी तरह चीन के दो और प्रांतों में तस्करों से जब्त पैंगोलिन में तीन में यही खतरनाक वायरस पाया गया। शोधकर्ताओं ने बताया कि इन नमूनों और मानव शरीर में मिले सार्स-सीओवी-2 के सीक्वेंस एक खास फर्क पाया गया जिसके आधार पर यह दावे से नहीं कहा जा सकता कि पैंगोलिन से यह वायरस मानव शरीर में फैला।

हॉलीवुड अभिनेता मार्क ब्लम की संक्रमण से मौत

लॉस एंजिलिस, प्रेट्र : हॉलीवुड फिल्मों के चर्चित अभिनेता मार्क ब्लम की कोरोना संक्रमण के कारण गुरुवार को मौत हो गई। फिल्मों के अलावा टीवी और रंगमंच के मंझे कलाकार ब्लम ने 'डेसपेरेटली सीकिंग सूसन' और 'क्रोकोडायल डुंडी' फिल्मों में अपने दमदार अभिनय से काफी वाहवाही बटोरी थी। 69 साल के ब्लम ने हाल में नेटफ्लिक्स की 'यू' वेब सीरीज में भी काम किया था।

कोरोना की नकली दवा बेचते हॉलीवुड अभिनेता गिरफ्तार : उधर, आइएएनएस के हवाले से बताया गया है कि अमेरिका की संघीय जांच एजेंसी (एफबीआइ) ने हॉलीवुड फिल्म 'आयरन मैन 2' में काम कर चुके अभिनेता कीथ लॉरेंस मिडलब्रुक को कोरोना की नकली दवा बेचने के जुर्म में गिरफ्तार किया है। मिडलब्रुक क्वांटम प्रिवेशन सीवी इंक नामक कंपनी की एक दवा को यह कहते हुए बेच रहे थे कि इससे कोरोना के मरीज ठीक हो चुके हैं। एफबीआइ ने बीते बुधवार को मिडलब्रुक की गिरफ्तारी लॉस एंजिलिस से की।

पहले वायरस फैलाया, अब मास्क बेचकर नोट छाप रहा है चीन

- दो महीने के भीतर करीब 9,000 मास्क उत्पादन के क्षेत्र में कूदीं कंपनियां
- चीन में इस समय प्रतिदिन 11.6 करोड़ से ज्यादा मास्क का उत्पादन
- दक्षिण कोरिया और इटली समेत यूरोपीय देशों में मास्क की भारी मांग
- मास्क तैयार करने वाली मशीन बनाने वाले उद्यमी भी कमा रहे मोटा मुनाफा

प्रतीकात्मक

बीजिंग, एएफपी : दुनियाभर को कोरोना वायरस जैसी महामारी की मुसीबत में झोंक देने वाला चीन अब उसी के माध्यम से नोट छाप रहा है। कोरोना वायरस से बचाव के लिए चीन दुनिया के कई देशों को मास्क का निर्यात कर रहा है और उसके लिए यह धंधा बहुत फायदे का साबित हो रहा है।

मध्य चीन के हुबेई प्रांत की राजधानी वुहान में जनवरी के आखिर में कोरोना वायरस का प्रकोप शुरू हुआ। फरवरी तक वुहान के साथ ही हुबेई प्रांत के अन्य हिस्सों को भी वायरस ने अपनी चपेट में ले लिया था। ऐसे में गुआन शूंजे नामक कंपनी ने मात्र 11 दिन में ही मास्क बनाने वाली एक नई फैक्ट्री खड़ी कर दी। उत्तरपूर्वी चीन में पांच इकाइयां स्थापित करने वाली यह कंपनी अब व्यापक पैमाने पर एन95 मास्क बना रही है, जिसकी दुनियाभर में भारी मांग है।

चीन में कोरोना वायरस से संक्रमण का मामला कम हुआ तो फैक्ट्री के युवा मालिक ने इटली को मास्क का निर्यात करना शुरू कर दिया, जो चीन से भी ज्यादा बुरी तरह से इस वायरस से प्रभावित हुआ है। बिजनेस डाटा प्लेटफार्म तियानयंचा के मुताबिक भारी मांग को देखते हुए इस साल के पहले दो महीने के भीतर ही चीन में 8,950 कंपनियों ने मास्क बनाने का काम शुरू कर दिया है। दुनियाभर में चार लाख से ज्यादा लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुके हैं। मास्क समेत अन्य सुरक्षा उपकरणों की मांग बढ़ गई है। दक्षिणपूर्वी गुआंगडोंग प्रांत के डोंगगुआन शहर में एन95 मास्क तैयार करने वाली मशीन बनाने वाली कंपनी के सेल्स मैनेजर शी चिंघुई ने कहा, 'मास्क मशीन वास्तव में नोट छापने की मशीन बन गई है। जहां एक मास्क पर पहले एक से दो फीसद तक लाभ होता था, अब वह बढ़कर कई प्रतिशत तक हो गया है। एक दिन में 60,000 से 70,000 मास्क बनाने का मतलब उतने नोट छापना है।'

डोंगगुआन में ही मास्क तैयार करने वाली मशीन बनाने वाली कंपनी के मालिक की गुआंग्तू ने बताया कि उन्होंने अपनी कंपनी में 70 लाख डॉलर (लगभग 50 करोड़ रुपये) का निवेश किया है, लेकिन लागत निकालने की कोई चिंता ही नहीं है। उन्होंने बताया कि अब तक 71 सेट मशीन बेच चुके हैं। एक मशीन की कीमत 71000 डॉलर (लगभग 50 लाख रुपये) है।

कंपनी के पास अभी दो सौ से ज्यादा मशीन का ऑर्डर है। इसी तरह कई ऐसे लोग हैं, जिनका मास्क तैयार करने वाली मशीन बनाने से दूर-दूर तक कोई लेना देना नहीं था। लेकिन वो लोग भी अब इस धंधे में उतर गए हैं और मोटी कमाई कर रहे हैं। व्यापारियों के मुताबिक मास्क तैयार करने में इस्तेमाल होने वाले कपड़े की कीमत भी बढ़ गई है।

चीन के सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस समय देश में 11.6 करोड़ मास्क का प्रतिदिन उत्पादन हो रहा है। दूसरे देशों से मास्क की भारी मांग है। एक उत्पादक ने बताया कि वह अब तक 10 लाख मास्क इटली भेज चुका है। दूसरे उत्पादक ने बताया कि दक्षिण कोरिया और यूरोप के अन्य देशों से उसके पास मास्क के दो सौ से ज्यादा ऑर्डर पड़े हैं।

स्पेन ने खराब जांच किट की खेप चीन को लौटाई

मैड्रिड, एएनआइ : स्पेन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया है कि चीन से खरीदी गईं कोरोना वायरस जांच किट विफल साबित हुई हैं। वे लगातार पॉजिटिव मामलों की जांच नहीं कर पा रही हैं और उनकी सटीकता स्तर भी 30 फीसद से नीचे है। इससे ये इस्तेमाल करने के लायक नहीं पाई गई हैं। किट के बड़े पैमाने पर दोषपूर्ण पाए जाने को ध्यान में रखते हुए स्पेन ने चीन से मिली कोविड-19 जांच किट के पहले बैच को वापस भेजने की घोषणा की है। कोरोना वायरस से स्पेन बुरी तरह प्रभावित है और वहां इससे हुई मौत का आंकड़ा 4000 के पार कर गया है। स्पेन में चीन के दूतावास ने इसपर त्वरित प्रतिक्रिया दी है। दूतावास ने कहा है कि दोषपूर्ण किट की पहली खेप हाल ही में दोनों देशों के बीच हुए 42 करोड़ यूरो से ज्यादा के सौदे में शामिल नहीं है। इस सौदे में 55 लाख जांच किट भी शामिल थीं। दूतावास ने कहा है कि ये दोषपूर्ण किट किसी गैर लाइसेंसी प्रोवाइडर से आई हैं।

अमेरिका में संक्रमित हैं सबसे ज्यादा लोग

कोरोना का प्रकोप ▸ गुरुवार को 16,877 नए मामले सामने आए, संक्रमितों की संख्या बढ़कर 85,600 हुई

चीन में अब तक संक्रमण के 81340 मामले आ चुके हैं सामने, 3292लोगों की हो चुकी है मौत

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	8215	80,589
स्पेन	4858	64,059
चीन	3292	81,340
ईरान	2,378	32,332
अमेरिका	1290	85,600
फ्रांस	1696	29,155
ब्रिटेन	578	11,658

कोरोना वायरस से जूझ रहे ईरान की सेना ने राजधानी तेहरान में एक अंतरराष्ट्रीय एग्जिबिशन सेंटर को 2000 बेड के अस्पताल में बदल दिया है। गुरुवार को ईरान में 144 और मौतों के साथ यह आंकड़ा लगभग 2400 हो गया है। एपी

- अमेरिका के विमानवाहक पोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट में संक्रमित लोगों की संख्या 23 हो गई है।
- कोरोना के संक्रमण से इटली में 101 साल का बुजुर्ग ठीक हुआ।
- विदेश से ऑस्ट्रेलिया लौटने वाले नागरिकों को अनिवार्य रूप से चौदह दिनों तक आइसोलेशन में रहना होगा।
- छह फुट की दूरी पर नहीं खड़े होने पर सिंगापुर में छह महीने की जेल भेजने की बात कही है।
- हांगकांग में चार से ज्यादा लोगों के एक जगह एकत्र होने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

वाशिंगटन, प्रेट्र: गुरुवार को 16,000 से अधिक संक्रमण के मामले सामने आने के बाद अमेरिका में संक्रमित व्यक्तियों की संख्या पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा 85,600 हो गई है। केवल एक सप्ताह के अंदर संक्रमित व्यक्तियों की संख्या में 10 गुना का इजाफा हुआ है। सात दिन पहले यह आंकड़ा मात्र आठ हजार था। बता दें कि चीन में अब तक संक्रमण के 81,340 मामले सामने आ चुके हैं जबकि वहां पर 3292 लोगों की मौत हो चुकी है।

वेबसाइट वर्ल्डओमीटर के अनुसार गुरुवार रात तक अमेरिका में 85,600 लोग संक्रमित थे। एक दिन में संक्रमित व्यक्तियों की संख्या में 16,877 का इजाफा हुआ था। गुरुवार को 263 लोगों की मौत भी हुई। यह एक दिन में होने वाली सबसे अधिक मौतें हैं। अब तक इस महामारी के प्रकोप से 1290 अमेरिकियों की मौत हो चुकी है। जो लोग संक्रमित हैं, उनमें से दो हजार की हालत गंभीर है। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में संक्रमित और मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

ट्रंप बोले-चीन के आंकड़े कोई नहीं जानता : राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि बड़े पैमाने पर किए जा रहे टेस्ट के फलस्वरूप संक्रमित लोगों का पता चल रहा है। उन्होंने कहा कि कोई नहीं जानता है कि चीन में संक्रमित होने वाले और मृतकों की संख्या कितनी है। उपराष्ट्रपति माइक पेंस ने कहा कि जो अस्पताल और लेबोरेटरी टेस्ट कर रही हैं, वे सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल और फेडरल इमरजेंसी मैनेजमेंट एजेंसी से अपने आंकड़े साझा करें, जिससे सरकार को सही स्थिति समझने में मदद मिल सके। उधर, एबोट लेबोरेटरी ने एफडीए को एक प्रस्ताव दिया है, जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति डॉक्टर के पास जाकर अपना परीक्षण करा सकता है। इसकी रिपोर्ट 15 मिनट में आने की बात कही गई हैं।

दक्षिण अफ्रीका में दो लोगों की मौत : संक्रमण से शुक्रवार को दक्षिण अफ्रीका में दो लोगों की मौत हो गई। वहीं संक्रमित लोगों की संख्या एक हजार से ज्यादा हो गई है। गुरुवार रात से वहां तीन सप्ताह के लॉकडाउन का एलान किया गया, लेकिन इसके तत्काल बाद कई फूड स्टोर और बस टर्मिनल के बाहर भारी भीड़ दिखाई दी। केन्या, रवांडा और माली में संक्रमण के 3200 केस हैं जबकि 89 लोगों की मौत हो चुकी है।

रूस में होटल और रिसॉर्ट बंद किए गए : रूस ने सरकार द्वारा संचालित होटल, रिसॉर्ट और मनोरंजन सुविधा केंद्रों को शनिवार से एक जून तक के लिए बंद कर दिया है। इसके अलावा व्लादीमिर पुतिन ने अगले सप्ताह को गैर कामकाजी सप्ताह घोषित कर दिया है। साथ ही महामारी से सर्वाधिक प्रभावित मास्को में सभी कैफे हाउस, रेस्तरां पांच अप्रैल तक बंद कर दिए गए हैं। रूस में संक्रमित लोगों की संख्या 1036 हो गई है।

स्पेन में पिछले चौबीस घंटे में 769 लोगों की मौत: स्पेन में पिछले चौबीस घंटे में 769 लोगों की मौत हुई है। यह एक दिन में मरने वालों की सर्वाधिक संख्या है। मरने वालों की संख्या 4858 हो गई है। संक्रमित लोगों की संख्या 64,059 हो गई है। संक्रमण के नए मामलों में चार फीसद की कमी आई है।

ईरान में मेथेनॉल पीने से सैकड़ों की जान गई : ईरान में मेथेनॉल पीने से सैकड़ों लोगों के मरने की बात सामने आई है। दरअसल, सोशल मीडिया में इस प्रकार की चर्चा चल रही थी कि मेथेनॉल पीने से कोरोना का संक्रमण नहीं होता है जिसके बाद पूरे ईरान में कई लोगों ने मेथेनॉल पी। ईरानी मीडिया के मुताबिक अभी तक लगभग 300 लोगों की मौत हुई है जबकि 1,000 से अधिक बीमार हैं। वहीं ईरान के स्वास्थ्य मंत्रालय से जुड़े एक डॉक्टर के मुताबिक यह संख्या पांच सौ के लगभग है।

और खराब हो सकते हैं हालात : फ्रांस

फ्रांस में एक दिन में कारोना से 365 लोगों की मौत हुई और संक्रमण के 2300 मामले सामने आए हैं। फ्रांस के प्रधानमंत्री ने देश में संक्रमण के मामलों में हो रही वृद्धि पर चिंता जताई और चेतावनी दी कि आने वाले दिनों में हालात और खराब हो सकते हैं।

दुबई एयरपोर्ट पर फंसे भारतीयों समेत सभी लोगों की मदद की कोशिश

दुबई, प्रेट्र: संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) प्रशासन दुबई एयरपोर्ट पर फंसे 22 भारतीयों समेत अन्य लोगों की मदद की कोशिशों में जुटा है। विभिन्न देशों में अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर पाबंदी के चलते ये लोग फंस गए हैं।

खलीज टाइम्स के मुताबिक दुबई एयरपोर्ट प्रबंधन की तरफ से शुक्रवार को जारी बयान में कहा गया है कि एयरलाइंस और संबंधित दूतावासों द्वारा फंसे हुए लोगों को उनके देश भेजने के लिए काम किया जा रहा है। इनमें से कई लोग ऐसे हैं जो 18 मार्च से ही एयरपोर्ट पर फंसे हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा कोरोना वायरस को वैश्विक महामारी घोषित किए जाने के बाद कई देशों ने इस महीने के शुरू में ही अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर रोक लगा दी थी। भारत ने भी 25 मार्च से सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर पाबंदी लगा दी है। भारतीय दूतावास ने कहा कि वह अपने देश के यात्रियों के लिए इंतजाम को लेकर यूएई सरकार के साथ बातचीत कर रहा है। दुबई में भारत के महावाणिज्य दूत विपुल ने कहा कि यह देखा जा रहा है कि यूएई सरकार की मदद से इन यात्रियों के लिए क्या कुछ किया जा सकता है।

चिनफिंग की ट्रंप से वार्ता, साथ मिलकर लड़ने का प्रस्ताव

- अमेरिका के राष्ट्रपति ने भी दी सकारात्मक प्रतिक्रिया

बीजिंग, एएफपी : कोरोना की तबाही से सहमे चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को फोन कर साथ मिलकर वायरस से लड़ने का प्रस्ताव किया है। कहा है कि चीन और अमेरिका मिलकर कोरोना वायरस जनित महामारी पर काबू पा सकते हैं। चिनफिंग ने दोनों देशों के संबंधों में प्रगति की भी आवश्यकता जताई।

अमेरिका और बाकी दुनिया में जिस तरह से हाल के हफ्तों में कोरोना वायरस का प्रकोप बढ़ा है उससे अमेरिका और चीन के संबंधों में कड़वाहट बढ़ी है। चीनी मीडिया के अनुसार चिनफिंग ने आशा जताई है कि चीन के साथ सकारात्मक संबंध बनाने के लिए अमेरिका समुचित कदम उठाएगा। चीन के राष्ट्रपति ने ट्रंप से कहा, दोनों देश साथ मिलकर कोरोना के संकट से निपट सकते हैं। इसके लिए चीन अपना अनुभव और सूचनाएं साझा करने को तैयार है। इस बातचीत पर प्रतिक्रिया में ट्रंप ने सकारात्मकता दिखाई है। उन्होंने ट्वीट कर चिनफिंग के साथ अपनी बातचीत को बहुत अच्छा बताया है। कहा है कि दोनों नेताओं ने कोरोना वायरस के संकट पर विस्तार से चर्चा की। चीन को कोरोना वायरस से लड़ने का ज्यादा अनुभव है। उसके पास इस वायरस को लेकर ज्यादा सूचनाएं हैं। हम साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं।

इससे पहले राष्ट्रपति ट्रंप और उनके विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने कोरोना वायरस के प्रकोप की जानकारी छिपाने को लेकर चीन पर तल्ख टिप्पणियां की थीं। इसका चीन के विदेश मंत्रालय ने भी तीखा जवाब दिया था। लेकिन चिनफिंग और ट्रंप की ताजा बातचीत से दुनिया की शीर्ष महाशक्तियों के बीच तनाव थोड़ा कम होने के संकेत मिले हैं। चीन के सरकारी मीडिया सीसीटीवी के मुताबिक चिनफिंग ने ट्रंप से कहा, दोनों देशों के संबंध मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। इसलिए आपसी सहयोग दोनों के लिए फायदेमंद रहेगा। हालात में सुधार का सही तरीका भी यही है। उल्लेखनीय है कि कोरोना वायरस सबसे पहले दिसंबर में चीन के हुबेई प्रांत में ही सामने आया था। इसके बाद इसका प्रकोप बढ़ता गया। अब यह दुनिया के करीब दो सौ देशों में पहुंच चुका है।

ब्राजील के राष्ट्रपति बोल्सोनारो ने चर्च को लॉकडाउन से दी छूट

ब्राजीलिया, एएफपी : ब्राजील में कोरोना संक्रमण के मामले बढ़ने के बावजूद देश के राष्ट्रपति जेर बोल्सोनारो ने चर्च जैसे धार्मिक स्थलों को लॉकडाउन से बाहर रखने का एलान किया है। ब्राजील सरकार के नए आदेश में मेडिकल स्टोर और सुपर मार्केट के साथ चर्च को भी लॉकडाउन से छूट की बात कही गई है। सरकारी सूचना में कहा गया है कि चर्च जैसे पूजास्थल आवश्यक सेवाओं की श्रेणी में आते हैं, इसलिए इन्हें बंद नहीं किया जाएगा।

वर्ष 2018 में सत्ता में आए बोल्सोनारो को ईसाई समुदाय का जबरदस्त समर्थन मिला था। इसकी वजह से सरकार रूढ़िवादी पादरियों के इशारे पर काम करती रही है।

दुनियाभर में कोरोना संक्रमण फैलने पर ब्राजील के एक शीर्ष पादरी ने इसे शैतान की कुटिल चाल बताया। बोल्सोनारो से जब पूछा गया कि ब्राजील में अगर अमेरिका जैसे हालात हो गए तो उन्होंने कहा, यहां ऐसा कुछ नहीं होगा। ब्राजील में कोरोना संक्रमण के अब तक करीब 3,000 मामले सामने आए हैं और 77 लोगों की मौत हो चुकी है।

चीन के शंघाई में आज से खुलेंगे 200 सिनेमाघर

शंघाई, एजेंसियां: कोरोना वायरस के प्रकोप से बुरी तरह प्रभावित चीन में अब हालात धीरे-धीरे सामान्य हो रहे हैं। हुबेई प्रांत में पाबंदियों में ढील के बाद चीन की व्यावसायिक राजधानी शंघाई में शनिवार से 200 से ज्यादा सिनेमाघर फिर खोल दिए जाएंगे। दर्शकों को हालांकि फेस मास्क पहनना होगा और एक सीट छोड़कर बैठना होगा। सिनेमाघर खोलने का फैसला करने वाला शंघाई चीन का पहला टियर-वन शहर है। संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए दो महीने से पूरे शहर में लॉकडाउन था। दर्शकों को सिनेमा देखने को प्रोत्साहित करने के लिए शंघाई प्रशासन ने टिकट दरों में छूट का भी एलान किया है।

तीन दिन बाद चीन में सामने आया घरेलू संक्रमण का मामला : चीन में तीन दिन बाद घरेलू संक्रमण का पहला मामला झेजियांग प्रांत में सामने आया। गुरुवार को 54 अन्य लोगों में भी संक्रमण का पता चला, लेकिन ये सभी विदेश से लौटे थे। विदेश से लौटे संक्रमित लोगों की संख्या 595 हो गई है। महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित हुबेई प्रांत और उसकी राजधानी वुहान में संक्रमण का कोई मामला सामने नहीं आया है। हुबेई में गुरुवार को पांच और लोगों की मौत हुई। इस महामारी में चीन में करीब 3300 लोग अपनी जान गंवा बैठे। 81 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित हैं।

चीन में गुरुवार को यहां राष्ट्रीय वेशभूषा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर लोगों ने पारंपरिक हान वेशभूषा में हुनान प्रांत के एक थीम पार्क में वॉक किया। रायटर

विदेशियों के आने पर प्रतिबंध : विदेश से आने वाले लोगों में कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए चीन ने गुरुवार को वीजा या रेजिडेंट परमिट रखने वाले विदेशियों के आने पर अस्थायी रूप से प्रतिबंध लगा दिया। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में भी बड़े पैमाने पर कटौती की गई है।

कुत्ते सूंघकर पता लगाएंगे वायरस का संक्रमण है या नहीं

लंदन, आइएएनएस : ब्रिटेन की एक संस्था लंदन स्कूल ऑफ हाइजिन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड डरहाम यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर कुत्तों को कोरोना वायरस सूंघ कर पता लगाने का प्रशिक्षण देने में जुटी है। संस्था का प्रयास सफल रहा तो संक्रमित को त्वरित इलाज मुहैया कराया जा सकेगा। शुक्रवार को मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई है।

मेडिकल डिटेक्शन डॉग्स नाम की संस्था कैंसर का अनुसंधान और डायबिटीज का पता लगाने में काम कर चुकी है। संस्था का मानना है कि कुत्ते कोरोना वायरस को सूंघ सकते हैं। मेट्रो समाचारपत्र में छपी रिपोर्ट में कहा गया है, 'कोविड-19 की तलाश करने के लिए कुत्तों को उसी तरह का प्रशिक्षण दिया जाएगा जिस तरह संस्था ने कैंसर, पार्किंसन्स और बैकटेरिया संक्रमण का पता लगाने के लिए दिया है। संस्था के प्रशिक्षण कक्ष में सूंघने वाले नमूने से यह काम किया जा रहा है। जैसे ही कुत्ते को इसका संकेत मिलेगा वे संकेत देंगे।' संस्था के सीईओ एवं को-फाउंडर क्लैर गेस्ट ने कहा, 'यदि चमड़े के तापमान में कोई बदलाव होता है तो कुत्ते उसका भी पता लगाने में समर्थ हैं।

मुसीबत

क्या हुक्मरान, क्या अवाम, किसी को खतरे की परवाह नहीं, पूरे देश में पहले की तरह चल रही हैं गतिविधियां

महामारी से निपटने के लिए पाकिस्तान में बंदोबस्त न के बराबर

न्यूयॉर्क टाइम्स से

कराची : दुनिया भर के देश जहा इन दिनों कोरोना वायरस से निपटने के लिए अपने सारे संसाधनों के साथ जी जान से जूझ रहे हैं वहीं पाकिस्तान इन सबसे बेखबर उल्टी दिशा में चल रहा है। जैसे हुक्मरान, वैसी अवाम। लगता है किसी कोई फिक्र ही नहीं है। दुनिया के दूसरे देश जहां अपने नागरिकों की जान बचाने के लिए लाकडाउन कर रहे हैं वहीं पाकि स्तान का कहना है कि ऐसा किया तो गरीबों को तकलीफ होगी।

विश्व में पांचवे सबसे अधिक आबादी वाले मुल्क में कोरोना तेजी से पैर पसार रहा है। एक हफ्ते पहले संक्रमितों की संख्या 250 थी जो गुरुवार को बढ़कर 1098 हो गई। आठ लोगों की इस बीमारी से जान भी जा चुकी है लेकिन इससे किसी को फिक्र होती नजर नहीं आ रही। खस्ताहाल इन्फ्रास्ट्रक्चर वाले इस मुल्क में डाक्टर हड़ताल पर हैं, मस्जिदों में जमात में नमाजें हो रही हैं। बच्चे मैदानों में क्रिकेट खेल रहे हैं और इनके मां-बाप घरों में रुकने को तैयार नहीं हैं। यहां के इमामों ने मस्जिदों में नमाज पर पाबंदी लगाने से इनकार कर दिया है।

इमरान खान। फाइल

पाकिस्तान के पीएम इमरान खान भी संकट को हल्के से ले रहे हैं। उन्होंने लाकडाउन को देश की इकानमी के खिलाफ बताते हुए लोगों से काम पर लौटने को कहा है। हालांकि रविवार को सेना ने पीएम को दरकिनार कर मोर्चा संभाला और कराची जैसे शहरों में जगह-जगह बैरियर लगाकर भीड़ को एक जगह जमा होने से रोकने की कोशिश की। लेकिन यह बहुत देर से उठाया गया कदम साबित हो रहा है। मुल्क की राजधानी इस्लामाबाद के पाकिस्तान इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के डाक्टर और नर्स पर्याप्त उपकरणों के अभाव में काम पर लौटने को तैयार नहीं हैं। इमाम कोई सहयोग नहीं कर रहे। वे मस्जिदों में भीड़ कम करने के पक्ष में नहीं हैं। उनका कहना है कि जुमे की नमाज मस्जिद में न पढ़ी तो ऊपर वाले का कहर टूटेगा। कराची की एक मस्जिद में नमाज पढ़ने आये एक व्यापारी ने शब्बीर चांद ने कहा कि ऐसे में हमें अपनी सलामती के लिए और बड़ी तादाद में नमाज पढ़ने आना चाहिये।

पाक ने 3.7 अरब डॉलर का कर्ज मांगा

इस्लामाबाद, प्रेट्र : पाकिस्तान ने कोरोना वायरस के प्रकोप से उत्पन्न आर्थिक संकट से निपटने के लिए तीन मल्टीनेशनल कर्ज दाताओं से 3.7 अरब डॉलर (करीब 26 हजार करोड़ भारतीय रुपये) का अतिरिक्त ऋण मांगा है। देश में कोरोना वायरस से अब तक आठ लोगों की मौत हो चुकी है और 1,100 से अधिक लोग इससे संक्रमित हैं। वित्त मामलों पर प्रधानमंत्री के सलाहकार अब्दुल हाफिज शेख ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) से 1.4 अरब डॉलर कर्ज के अलावा, विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक देश में क्रमशः एक अरब डॉलर और 1.25 अरब डॉलर कर्ज को विस्तारित करेंगे। ताजा आधिकारिक आंकड़े के अनुसार, पाकिस्तान में कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या 1,102 पहुंच गई है। स्वास्थ्य सेवाओं के मंत्रालय की वेबसाइट के अनुसार, सिंध में 417, पंजाब में 323, बलूचिस्तान में 131, खैबर पख्तूनख्वा में 121, गिलगित-बाल्टिस्तान में 84, इस्लामाबाद में 25 और गुलाम कश्मीर में एक मामला सामने आया है। अब तक आठ लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 21 लोग ठीक हो गए हैं।

इजरायल में बेंजामिन नेतन्याहू बने रहेंगे प्रधानमंत्री

- स्पीकर बने गेंट्ज बोले, कोरोना प्रकोप की वजह से किया समझौता

यरुशलम, रायटर : इजरायल में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और संसद के स्पीकर बेनी गेंट्ज के बीच मिलकर सरकार चलाने की सहमति बन गई है। इससे गेंट्ज को समर्थन देने वाले मतदाताओं को तगड़ा झटका लगा है जिन्होंने लगातार तीन चुनावों में नेतन्याहू की लिकुड पार्टी के खिलाफ गेंट्ज की ब्ल्यू एंड व्हाइट पार्टी का समर्थन किया था। हजारों लोगों ने सार्वजनिक तौर पर अपनी नाराजगी जाहिर की है।

गुरुवार को संसद के स्पीकर पद के चुनाव में गेंट्ज की उम्मीदवारी का लिकुड पार्टी ने समर्थन किया था। इससे गेंट्ज निर्विरोध चुने गए थे। इससे सत्तारूढ़ लिकुड पार्टी और विपक्ष की भूमिका में चुनाव लड़ी ब्ल्यू एंड व्हाइट पार्टी के बीच समझौता होने के संकेत मिले थे। इस चुनाव के बाद ब्ल्यू एंड व्हाइट पार्टी के साथ गठबंधन में शामिल कई पार्टियों के नेताओं ने नाराजगी जताई थी। उन्होंने भ्रष्टाचार के आपराधिक मामलों में फंसे नेतन्याहू के साथ गेंट्ज के जाने पर सवाल उठाए थे। नेतन्याहू पर लगे आरोपों की अदालत में जल्द ही सुनवाई होने वाली है। लेकिन गेंट्ज ने कहा है कि देश में कोरोना वायरस से पैदा हुई बुरी स्थिति को देखते हुए नेतन्याहू के साथ उन्होंने समझौता किया है। 87 लाख की आबादी वाले इजरायल में कोरोना पीड़ित लोगों का आंकड़ा तीन हजार को पार कर चुका है, दस लोगों की मौत भी हो चुकी है। गेंट्ज के इस फैसले से महज 13 महीने पहले बनी उनकी ब्ल्यू एंड व्हाइट पार्टी के टूटने का खतरा पैदा हो गया है। यह पार्टी दक्षिणपंथी लिकुड पार्टी और दस साल से सत्ता पर काबिज नेतन्याहू के विरोध में बनी थी।

हमारे देश के जो भी स्वास्थ्य अधिकारी कोरोना के खिलाफ जंग लड़ रहे हैं, उनका धन्यवाद।
— डेविड बैकहम, इंग्लैंड के पूर्व फुटबॉलर

लड़ाई आसान नहीं है, आपसी दूरी बनाए रखें : कोहली

नई दिल्ली, आइएएनएस : भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ने केंद्र सरकार द्वारा लगाए गए लॉकडाउन को लेकर देश के नागरिकों से अपील की है कि वह इस दौरान घरों में ही रहें और लॉकडाउन का पालन करें। कोहली ने साथ ही लोगों से स्वास्थ्य विशेषज्ञों की सलाह मानने की भी अपील की है। उन्होंने कहा कि इस वक्त सबसे ज्यादा जरूरी चीज घर पर ही रहना है।

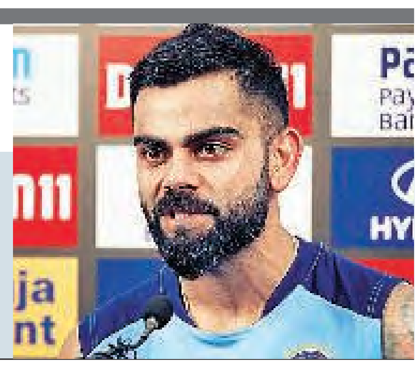

एक नजर में

विश्व कप की तैयारी के लिए आइपीएल सर्वश्रेष्ठ : लैंगर

सिडनी : ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर का मानना है कि टी-20 विश्व कप की तैयारी के लिए आइपीएल सर्वश्रेष्ठ मंच है लेकिन स्वीकार किया कि मौजूदा माहौल में सेहत सर्वोपरि है। इंडियन प्रीमियर लीग 29 मार्च से शुरू होने वाली थी जिसे कोरोना के कारण 15 अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। लैंगर ने कहा, 'इस संकट से पहले हम तय कर चुके थे कि हमारे खिलाड़ी आइपीएल खेलेंगे क्योंकि टी-20 विश्व कप की तैयारी के लिए इससे बेहतर टूर्नामेंट नहीं हो सकता।' (एएफपी)

चेकप्वाइंट बनाकर क्रिकेट शुरू करना चाहता है ईसीबी

लंदन : इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड स्टेडियम के बाहर कोरोना वायरस चेकप्वाइंट और आइसोलेशन यूनिट बनाकर बिना दर्शकों के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट चालू कराना चाहता है। ईसीबी ने 28 मई तक सभी क्रिकेट गतिविधियों पर पूर्ण विराम लगा रखा है। ईसीबी के इवेंट डायरेक्टर स्टीव एलवर्थी ने कहा कि हम बंद दरवाजों में क्रिकेट चालू कराना चाहते हैं और इसके लिए जरूरी कदम उठाने के लिए तैयार हैं। (प्रेट्र)

इंडोर वर्कआउट में जुटे पंत

नई दिल्ली : रिषभ पंत भी अन्य भारतीय क्रिकेटरों की तरह लॉकडाउन के वक्त में घर पर ही वक्त बिता रहे हैं। क्रिकेटर्स की फिटनेस बनाए रखने के लिए उन्हें खास ट्रेनिंग प्रोग्राम दिया गया है। बीसीसीआइ ने पंत का एक वीडियो शेयर किया गया है जिसमें वह घर पर ही वर्कआउट कर रहे हैं। पंत इस वीडियो में ट्रेडमिल पर दौड़ रहे हैं और अन्य एक्सरसाइज कर रहे हैं। (एएफपी)

विश्व कप की चिंता : वॉन

लंदन : इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन को डर है कि कोरोना के कारण अक्टूबर-नवंबर में ऑस्ट्रेलिया में होने वाला टी-20 विश्व कप भी रद हो सकता है। वॉन ने कहा कि जब हम खेल के बारे में बात करना शुरू करें तो यह ध्यान रखना चाहिए कि यह इस समय प्राथमिकता नहीं है। इस समय दुनिया के कई लोग जिस समस्या से जूझ रहे हैं उसे पहले देखना चाहिए। आपको उम्मीद करनी चाहिए कि तब तक सब ठीक हो जाएगा लेकिन आप कुछ कह नहीं सकते। आप नहीं जानते उस समय कैसे हालात होंगे। यह अभूतपूर्व वक्त है। हमें मिलने वाली सलाह रोज बदल रही है। दो सप्ताह पहले तक हम सोच रहे थे कि यह बहुत बुरा फ्लू है, लेकिन बाद में हमें अहसास हुआ कि यह इससे काफी बुरा है। (एएफपी)

कुत्ते को कराया कैच अभ्यास

ऑकलैंड : न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन ने शुक्रवार को इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट की, जिसमें वह अपने घर पर अपने पालतू कुत्ते को कैच का अभ्यास कराते दिख रहे हैं। उन्होंने इस पर कैप्शन लिखा कि सैंडी अभी स्लिप्स पर खड़ा है और कोई अन्य कुत्ता क्या उसके साथ जुड़ना चाहता है। विलियमसन ने इससे पहले कोरोना की जंग में डॉक्टरों को धन्यवाद दिया था। (आइएएनएस)

ओलंपिक चैंपियन डोप में फंसे

मोनाको : दो बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता समेत चार नए रूस के ट्रैक एंड फील्ड एथलीट शुक्रवार को डोपिंग में फंस गए हैं। 2008 ओलंपिक ऊंची कूद की चैंपियन एंडेई सिल्नोव, 2012 ओलंपिक में 400 मीटर बाधा दौड़ में नताल्या अंत्युख डोपिंग में फंस गई हैं। सभी नतीजे 2016 में वाडा के लिए नमूनों के आधार पर लिए हैं। (एपी)

थकान की बात करने वाले क्रिकेटर आराम करें : कपिल

1983 विश्व कप विजेता भारतीय टीम के कप्तान कपिल देव ने कहा, लोगों की जिंदगी से बड़ा नहीं है क्रिकेट

कोरोना वायरस से पूरी दुनिया जूझ रही है। दुनिया भर के खेल ठप हो गए हैं। टोक्यो ओलंपिक के बाद अब आइपीएल पर नजर है कि यह स्थगित होगा या नहीं। लगातार क्रिकेट खेलने के बाद अब क्रिकेटर भी आराम कर रहे हैं। हालांकि इन विपरीत परिस्थितियों में भी 1983 विश्व कप विजेता भारतीय टीम के कप्तान कपिल देव सकारात्मक हैं। वह इन कठिन पलों का भी लुत्फ उठा रहे हैं और बाकी लोगों के लिए संजीदा हैं। घर में परिवार के साथ समय बिता रहे लीजेंड **कपिल देव से अभिषेक त्रिपाठी** ने विशेष बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश-

साक्षात्कार

- **वर्तमान में जो हालात हैं उसमें आप देशवासियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?**

-एक ही संदेश हैं। जान है तो जहान है। उसके बिना कुछ भी नहीं है। सभी लोग घर में रहें और अपना ख्याल रखें क्योंकि अगर आपने अपना ख्याल रख लिया तो आपके आस-पास के लोग भी बच जाएंगे। इस कठिन दौर से लोग और ज्यादा जिम्मेदार बनेंगे। लोग अब स्वच्छता को सबक के तौर पर लेंगे। उम्मीद है कि वे अपने हाथों को धोना सीखेंगे, सार्वजनिक जगहों पर थूकना और पेशाब नहीं करना सीखेंगे। हमें अपने आसपास के वातावरण को साफ रखना होगा।

- **खाली समय आप कैसे बिता रहे हैं? आप दफ्तर जाते थे और भी बहुत काम आपको रहते थे। अब कैसे समय काट रहे हैं?**

-पत्नी के साथ बैठकर समय निकाल रहे हैं। इतने सालों में अब मौका मिला है तो क्यों ना समय का लुत्फ लिया जाए। पहले समय ही नहीं मिल पाता था। आप अब यह शिकायत नहीं कर सकते हैं कि परिवार के साथ रहने का वक्त नहीं है। मैं हर चीज को सकारात्मक तौर पर देखता हूं।

- **क्रिकेट रुका हुआ है। क्रिकेटरों को क्या करना चाहिए?**

-क्रिकेटर कहते थे ना कि बहुत क्रिकेट चल रहा है, आराम नहीं मिल पा रहा है। तो भगवान ने दे दिया है आराम, अब आराम करो। आपने आपको सही करो, जिम करो, एक्सरसाइज करो। इसके लिए तो कोई रोकटोक नहीं है। अगर चोट है तो आप उसको सही कर सकते हो। आप सोचते क्या हो? सकारात्मक हो या नहीं। अगर हो तो आपको करने के लिए बहुत चीजें मिल जाएंगी, लेकिन अगर नकारात्मक हो तो रोते रहोगे। यह नहीं होगा वह नहीं होगा, तो मैं तो सकारात्मक हूं, कि यही समय है जो सोचा नहीं था, अगर मिला है तो लुत्फ लो।

- **वर्तमान समय में विश्व क्रिकेट को कैसे देखते हो?**

-जिंदगी से बड़ा नहीं है विश्व क्रिकेट। पहले खुद को संभालो, दुनिया संभालो। हालात है उसके ऊपर ध्यान लगाओ। फिल्म, क्रिकेट, पार्टी, लोगों से मिलना-जुलना सब बाद में हो जाएगा। अगर जिंदगी ही नहीं रहेगी तो क्रिकेट का क्या करोगे। हमें एक चीज सोचनी है कि जिंदगी होनी चाहिए, बाकी सब वापस आ जाएगा।

- **आपको क्या लगता है ओलंपिक स्थगित हो गया है। आइपीएल को भी स्थगित किया जाना चाहिए?**

-सकारात्मक सोचना चाहिए। अगर आइपीएल स्थगित हो जाता है तो होने दीजिए। अगर आप बीमार हो जाते हैं तो डॉक्टर बोलता है ना आपको आराम की जरूरत है, सोच लो कि दुनिया बीमार है और भगवान ने आराम करने का समय दिया है, आराम करिए। अगर आपकी सोच सही है तो सब सही है। आप लंबा सोचिए, कैसे इस समय अपनी सोसाइटी के लिए बेहतर कर सकते हैं। हमें एक दूसरे की मदद करने की जरूरत है।

- **जैसे दुनिया भर के खिलाड़ी पैसों से सरकार की मदद कर रहे हैं। क्या भारतीय क्रिकेटरों को भी सामने आना चाहिए?**

-जरूर, आएंगे ये नहीं कि एक ने कर दिया तो भेड़चाल चले। समय आने पर सब सामने आएंगे। मौका मिलेगा तो सभी जरूर करेंगे। मुझे लगता है कि क्रिकेटर ही क्यों सभी बॉलीवुड के सितारे भी सरकार और लोगों की मदद करें। लोगों ने उनको इतना प्यार दिया है तो उनकी ओर से कुछ जाएगा तो कुछ गलत नहीं होगा।

सफाई कर रहे हैं कपिल

नई दिल्ली : 61 वर्षीय कपिल ने कहा कि घर पर रहने के दौरान मैं घर और बगीचे को साफ करता हूं। मेरा छोटा सा बगीचा ही अब मेरा गोल्फ कोर्स भी है। मुझे अपने परिवार के साथ इतना समय बिताने को मिल रहा है, जिसे मैंने पिछले कई सालों में मिस किया। मैंने कुक को छुट्टी दे दी है और सभी के लिए खाना बनाता हूं। मैंने यह सब इंग्लैंड में खेलते समय सीखा था, जब रोमी (पत्नी) मेरे साथ आने वाली थीं।

कोरोना करियर नहीं खत्म कर सकता : जेम्स

लंदन, एएफपी : संन्यास की कगार पर खड़े इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन ने कहा है कि कोरोना वायरस उनके करियर का अंत नहीं कर सकता है। इंग्लैंड के इस तेज गेंदबाज को उम्मीद है कि आने वाले समय में कोरोना खत्म होगा और वह क्रिकेट के मैदान पर नजर आएंगे।

दुनिया में सबसे ज्यादा 584 विकेट लेने वाले 37 वर्षीय तेज गेंदबाज एंडरसन लगातार अपनी फिटनेस बरकरार रखने के लिए काम कर रहे हैं। वह जल्द क्रिकेट से संन्यास लेने के मूड में हैं। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि एंडरसन 2021 आइसीसी टेस्ट चैंपियन तक खेलेंगे। मौजूदा समय में एंडरसन जमकर अभ्यास कर रहे हैं। उनका कहना है कि कोरोना के चलते उनका टेस्ट करियर खत्म नहीं होने वाला है। उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि मैं दोबारा फिर खेलेंगा। कोरोना के चलते इंग्लैंड में लॉकडाउन है। ऐसे में एंडरसन फिटनेस बरकरार रखने के लिए अपने साथियों स्टुअर्ट ब्रॉड और मार्क वुड के साथ जमकर वर्कआउट कर रहे हैं। एंडरसन ने दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान 151वां टेस्ट मैच खेला था।

कभी खेलों में अहम भूमिका निभाने वाले भारतीय खिलाड़ी अब पुलिस अधिकारी के तौर पर कर रहे हैं लोगों की मदद

नए अवतार में दिख रहे खेलों के योद्धा

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : अब तक खेल के मैदान में देश का नाम रोशन करने वाले एथलीट कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में योद्धा बनकर डटे हैं। पुलिस की वर्दी में सड़कों पर उतर खेलों की दुनिया के ये हीरो अब लोगों से घरों में रहने की अपील करते दिखाई पड़ रहे हैं। टी-20 विश्व कप विजेता क्रिकेटर जोगिंदर शर्मा, कॉमनवेल्थ गेम्स के स्वर्ण पदक विजेता मुक्केबाज अखिल कुमार और एशियन गेम्स चैंपियन कबड्डी खिलाड़ी अजय ठाकुर खेलों से दूरी बनाने के बाद खेल कोटे से मिली पुलिस अधिकारी की ड्यूटी को बखूबी निभा रहे हैं।

रेवाड़ी में तैनात हैं जितेंदर : एशियन गेम्स में कांस्य पदक विजेता जितेंदर रेवाड़ी में तैनात हैं। जितेंदर ने कहा कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहे हैं। जो लोग घर में रह सकते हैं वह रह रहे हैं, जिनके पास कोई मदद के लिए नहीं आ रहा है हम उनकी मदद कर रहे हैं। हमारी कोशिश है कि हम ज्यादा लोगों तक पहुंच पाएं। हम जमीन से जुड़े हैं, हमें पता है भूख क्या होती है।

धौनी के बचाव में उतरी साक्षी : पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी सोशल मीडिया पर दान की गई रकम के लिए शुक्रवार को ट्रोल हो गए। इसके बाद उनकी पत्नी साक्षी का गुस्सा फूट पड़ा। खबर आई कि धौनी ने कोरोना के खिलाफ लड़ाई के लिए एक लाख रुपये की रकम दान दी है। इसके बाद सोशल मीडिया पर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। लोगों को यह हजम नहीं हुआ कि आठ सौ करोड़ रुपये से ज्यादा की संपत्ति का मालिक सिर्फ एक लाख रुपये की रकम दान कैसे कर सकता है। दरअसल सच्चाई यह थी कि पुणे स्थित एनजीओ ने लोगों की मदद के लिए 12.30 लाख रुपये इकट्ठे करने का लक्ष्य बनाया था और इसमें एक लाख रुपये कम पड़ रहे थे। ऐसे में धौनी ने पुणे स्थित मुकुल माधव फाउंडेशन को लक्ष्य में सहयोग के लिए एक लाख रुपये दिए। यह फाउंडेशन अगले 14 दिनों के दौरान करीब सौ मजदूर परिवारों के लिए भोजन की व्यवस्था करेगा।

जोकोविक ने दान किए 8.30 करोड़

बेलग्रेड, एएफपी : विश्व के नंबर एक टेनिस खिलाड़ी सर्बिया के नोवाक जोकोविक ने शुक्रवार को अपने देश को कोरोना वायरस से लड़ने के लिए 8.30 करोड़ रुपये दान किए। दक्षिणी स्पेन के शहर मारबेला से वीडियो कांफ्रेंस के जरिए यह बात कही। मारबेला में वह और उनका परिवार लॉकडाउन है। जोकोविक ने कहा कि हमने यह दान जीवन रक्षक श्वासयंत्र और सैनिटरी संसाधनों के लिए दिए हैं।

डीसीपी जोगिंदर चुनौती पर

2007 टी-20 विश्व कप फाइनल में पाकिस्तान के खिलाफ भारत को यादगार जीत दिलाने वाले जोगिंदर ने कहा कि मैं 2007 से डीसीपी हूं। पुलिस अधिकारी के तौर पर मेरे लिए यह एक चुनौती है क्योंकि यह सामान्य डर है। 36 वर्षीय शर्मा इस समय हिसार में हैं और 21 दिन के लॉकडाउन में अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। शर्मा ने कहा कि हमारी ड्यूटी का समय सुबह छह बजे शुरू होता है और हम पेट्रोलिंग करते हैं, लोगों को जागरूक करते हैं।

गुरुग्राम में अखिल की तैनाती

वहीं पिछले वर्ष सितंबर से मुक्केबाज अखिल कुमार गुरुग्राम में एसीपी हैं। अखिल ने कुछ ही समय पहले अपने मुक्केबाजी के करियर को अलविदा कहा था। उनके कारण ही कई युवा मुक्केबाजी से जुड़े। शुक्रवार को अपना 38वां जन्मदिन मना रहे 2006 कॉमनवेल्थ गेम्स के स्वर्ण पदक विजेता अखिल ने कहा कि लोग सामान्य तौर पर सहयोग कर रहे हैं और आवश्यक सेवाएं जारी हैं तो लोग ज्यादा परेशान नहीं हो रहे हैं।

अजय ठाकुर हिमाचल में निभा रहे कर्तव्य

कबड्डी खिलाड़ी अजय ठाकुर को अर्जुन अवार्ड और पिछले वर्ष पदमश्री से नवाजा गया था। वह हिमाचल प्रदेश पुलिस में डीसीपी हैं और 2017 से पुलिस में हैं। 2014 एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक विजेता अजय ठाकुर को हाल ही में बिलासपुर की सड़कों पर पेट्रोलिंग करते देखा गया था और वह लोगों को वीडियो मैसेज के जरिये स्वस्थ्य रहने की भी अपील कर रहे थे। अजय के इंस्टाग्राम पर दो लाख फॉलोअर्स हैं।

सचिन ने दिए 50 लाख

नई दिल्ली : सचिन तेंदुलकर ने कोरोना से लड़ाई में 50 लाख रुपये की मदद देने का एलान किया है। सचिन ने प्रधानमंत्री राहत कोष और महाराष्ट्र मुख्यमंत्री राहत कोष में 25-25 लाख रुपये की मदद देने का फैसला किया है। इसके अलावा सौराष्ट्र क्रिकेट संघ ने भी 42 लाख रुपये के दान का फैसला किया है। वे 21 लाख रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष और 21 लाख गुजरात मुख्यमंत्री राहत कोष में देंगे। भारतीय महिला धावक हिमा दास एक महीने का वेतन असम सरकार के राहत कोश में देंगी। पश्चिम बंगाल के खेल मंत्री और पूर्व क्रिकेटर लक्ष्मीरतन शुक्ला ने अपने पांच महीने का विधायक वेतन और बीसीसीसीआइ से मिलने वाली पेंशन को कोरोना वायरस से जारी लड़ाई में लगाने का फैसला किया है। इसी के साथ वह मैदान के ग्राउंड स्टाफ की चावल और दाल बांट कर मदद कर रहे हैं। वहीं भारत के दिग्गज धावक रहे मिल्खा सिंह के परिवार ने भी दो लाख रुपये शुक्रवार को दान किए हैं।

फिलहाल टी-20 विश्व कप पर संकट नहीं

क्रिकेट डायरी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) की बोर्ड बैठक में कोरोना को देखते हुए शुक्रवार को टी-20 विश्व कप और विश्व टेस्ट चैंपियनशिप सहित अपने प्रमुख टूर्नामेंट के लिए विभिन्न आपात योजनाओं पर चर्चा की। बीसीसीआइ की तरफ से सौरव गांगुली ने वीडियो कांफ्रेंस के जरिए हुई बैठक में हिस्सा लिया। बोर्ड के कुछ सदस्यों को लगता है कि ऑस्ट्रेलिया में होने वाले टी-20 विश्व कप पर खतरा नहीं है क्योंकि अक्टूबर अभी काफी दूर है।

आइसीसी ने कहा कि महामारी के कारण विश्व स्तर पर खेलों पर पड़ रहे प्रभाव पर चर्चा की गई। टूर्नामेंट को आगे खिसकाने या उनकी तिथियों में बदलाव पर कोई फैसला नहीं किया गया। बोर्ड के एक सदस्य से पूछा गया कि इंग्लैंड अगर पाकिस्तान और वेस्टइंडीज की मेजबानी नहीं कर पाता है तो फिर क्या होगा तो उन्होंने कहा कि अंक वितरित करने का मामला तकनीकी समिति को सौंपा जाएगा। ऐसा हो सकता है कि भारत छह सीरीज खेले और तालिका में शीर्ष पर रहे और इंग्लैंड 'लॉकडाउन' और एफटीपी (भविष्य के दौरा कार्यक्रम) के कारण तीन सीरीज ही खेल पाए। बोर्ड ने इसके साथ ही 2019 के लिए वित्तीय विवरणों तथा विश्व कप 2019 और आइसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप क्वालीफायर 2019 के अंतिम खातों को भी मंजूरी दी।

अश्विन ने 101 वर्षीय शख्स की तारीफ की : ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने इटली में कोरोना वायरस से ठीक हुए 101 साल के बुजुर्ग की कहानी को इंसानों के लिए बड़ी उम्मीद बताया है। इटली की मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, बुजुर्ग को पी नाम दिया गया है और वह कोरोना से ठीक होने वाले सबसे उम्रदराज व्यक्ति हैं।

धौनी को आखिरी मौका जरूर मिलेगा : कोच बनर्जी

कोलकाता : आइपीएल में महेंद्र सिंह धौनी की बहुप्रतीक्षित वापसी फिलहाल होती नहीं दिख रही लेकिन उनके बचपन के कोच केशव रंजन बनर्जी को उम्मीद है कि वह भारत की टी-20 विश्व कप टीम में जगह बना लेंगे। आइपीएल 29 मार्च से शुरू होना था लेकिन कोरोना वायरस महामारी के कारण 15 अप्रैल तक स्थगित हो गया और 21 दिवसीय देशव्यापी बंद के बीच इसके टलने के पूरे आसार हैं।

भावुक हुए ओब्रायन

क्राइस्टचर्च : न्यूजीलैंड के पूर्व तेज गेंदबाज इयान ओब्रायन इंग्लैंड में अपने परिवार से मिलने के लिए तड़प रहे थे। वह अब अपने परिवार के साथ इंग्लैंड में रहते हैं, लेकिन इस समय न्यूजीलैंड में थे। यहां पहुंचकर फ्लाइट रद हो गई और उनके पास वापस जाने के पैसे नहीं थे। उन्होंने सोशल मीडिया पर मदद मांगी। उन्हें इसके लिए 2,08,450 रुपये की जरूरत थी। शुक्रवार को जब वह उठे तो उनके खाते में 3,39,135 रुपये थे।

ओलंपिक का खर्च बढ़ने का अंदेशा

टोक्यो, एएफपी : टोक्यो ओलंपिक के आयोजकों ने कहा कि खेलों को स्थगित करने के बाद अब आयोजन की अतिरिक्त लागत कई गुना बढ़ जाएगी। उन्होंने इस पेचीदा और अभूतपूर्व काम की शुरुआत के लिए गुरुवार को एक वर्क फोर्स का गठन भी किया।

कोरोना के कारण ओलंपिक स्थगित करने के फैसले के बाद आयोजकों के सामने अब अगले साल खेलों के आयोजन की कठिन चुनौती है। गेम्स के सीईओ तोशिरो मुतो ने यह नहीं बताया कि अतिरिक्त खर्च कितना होगा लेकिन आयोजकों का मानना है कि अतिरिक्त लागत करीब 27 अरब डॉलर (20.33 अरब रुपये) होगी। इसमें आयोजन स्थलों का किराया, होटल की दोबारा बुकिंग, स्टाफ और सुरक्षाकर्मियों को अतिरिक्त भुगतान शामिल है।

तारीखों पर माथापच्ची : टोक्यो ओलिंपिक को 2021 में कराए जाने के एलान के बाद अब अगले साल इस खेल महाकुंभ की ओपनिंग और क्लोजिंग सेरेमनी के लिए नई तारीखें तय किए जाने की जरूरत होगी। हालांकि इन तारीखों के बारे में जब तक आइओसी, जापान सरकार और टोक्यो के आयोजक कोई कदम नहीं उठाते तब तक ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता।

क्वालीफाई कर चुके खिलाड़ी 2021 में भी खेलेंगे : टोक्यो ओलंपिक 2020 के लिए क्वालीफाई कर चुके खिलाड़ियों के कोटा स्थान खेलों के एक साल के लिए स्थगित होने के बावजूद सुरक्षित रहेंगे। टोक्यो ओलंपिक में भाग लेने वाले 11000 में से 57 प्रतिशत खिलाड़ी क्वालीफाई कर चुके हैं। कोरोना वायरस के कारण मंगलवार को खेलों को एक साल के लिए स्थगित कर दिया गया। आइओसी और 32 अंतरराष्ट्रीय खेल महासंघों की गुरुवार को हुई टेली कांफ्रेंस में भाग लेने वाले एक अधिकारी ने कहा कि आइओसी अध्यक्ष थॉमस बाक ने खेलों को स्थगित करने के फैसले का कारण बताया। वहीं, डायमंड लीग ने तीन अन्य ट्रैक प्रतियोगिताओं को भी स्थगित कर दिया है। ये प्रतियोगिताएं 24 मई को स्टाकहोम, 28 मई को नेपल्स और रोम तथा 31 मई को मोरक्को के रबात में होनी थी।

टीम के साथ खड़े बिंद्रा

नई दिल्ली : भारत के इकलौते ओलंपिक स्वर्ण पदक (व्यक्तिगत) विजेता अभिनव बिंद्रा ने कहा है कि कोरोना के चलते उनके दोनों संगठनों में स्टाफ में कटौती नहीं की जाएगी। बिंद्रा ने ट्वीट किया कि भारत कोविड-19 महामारी से जूझ रहा है। मैं बहुत ज्यादा करने का दावा तो नहीं करता लेकिन इस अनिश्चितता के बावजूद मैं वादा करता हूं कि अपनी टीम के साथ डटा रहूंगा। जब तक हो सकेगा मैं करता रहूंगा। जब तक हम अपने मरीजों, खिलाड़ियों और क्लाइंट्स की मदद करने को लौट नहीं जाते। बिंद्रा दो संगठन अभिनव बिंद्रा फाउंडेशन और फेसिलिटी फॉर फिजिकल एक्सीलेंस चलाते हैं जिसके भारत में कई केंद्र हैं।

कोरोना का असर

- बार्सिलोना करेगा खिलाड़ियों व कर्मचारियों के वेतन में कटौती
- आर्सेनल के मैनेजर मिकेल अर्टेटा अब ठीक हैं और टीम को घर से ही सुझाव दे रहे हैं
- इटली के खेल मंत्री को मई के अंत तक सीरी-ए फुटबॉल लीग शुरू होने पर संदेह है
- यूएस ओपन गोल्फ टूर्नामेंट को स्थगित कर दिया गया है
- पीएसजी प्रभावित लोगों की मदद के लिए स्पेशल जर्सी बेचेगी
- यूरोपियन निशानेबाजी ओलंपिक क्वालीफायर रद कर दिए गए हैं
- एस्पानयोल भी खिलाड़ियों का 70 प्रतिशत वेतन काटेगा
- मैनचेस्टर युनाइटेड सत्र के रुकने के बाद टिकट वापसी करने को तैयार

जैसे रामचरितमानस पढ़ते हैं, परिवार संग देखें रामायण : दीपिका चिखलिया

जागरण विशेष

स्मिता श्रीवास्तव, मुंबई

रामानंद सागर कृत टीवी धारावाहिक रामायण का पुनः प्रसारण आज से दूरदर्शन पर हो रहा है। 25 जनवरी, 1987 को शो का पहला एपिसोड टेलीकास्ट हुआ था। यह उस समय का सबसे महंगा शो हुआ करता था। अब जब यह दोबारा दूरदर्शन पर प्रसारित होने जा रहा है, धारावाहिक में सीता बनीं दीपिका चिखलिया, रावण बने अरविंद त्रिवेदी और रामानंद सागर के सुपुत्र प्रेम सागर ने इस मौके पर अपने यादगार सफर को दैनिक जागरण के पाठकों के लिए साझा किया।

सुनहरे दौर को याद करते हुए बताती हैं, 'रामानंद सागर की टीम के साथ मैं पहले से काम कर रही थी। वह सीता की तलाश में थे। उन्होंने मेरा चार-पांच बार स्क्रीन टेस्ट लिया था। उन्हें लगा कि यह परफेक्ट सीता है। वह मुझे सीते बुलाते थे। उन्होंने मुझसे कहा था तुम्हें हमेशा सीता के तौर पर याद रखा जाएगा। मैं सोचती थी कि यह तो सीरियल है, लेकिन उनकी बात सच निकली। लोग आज भी हमें मुझे सीता के किरदार से पहचानते हैं।

सीता की भूमिका में दीपिका चिखलिया (बाएं)। उनकी वर्तमान तस्वीर (दाएं) ट्विटर से ली गई है।

दीपिका ने शुक्रवार रात मुंबई में दैनिक जागरण से चर्चा में कहा, किरदार की तैयारी को लेकर हम लोगों को रामायण की समरी दी गई थी। ताकि हमें समझ में आए की शो का फ्लो कैसा होगा। मैं अंग्रेजी मीडियम से पढ़ी हूं, तो मुझे अंग्रेजी में दी गई थी। हम लोग रोज शाम को सागर साहब के रूम में बैठते थे। वह हमें सीन समझाते थे। वह किरदार को निभाने के लिए हमें आजादी भी देते थे। वनवास के दौरान मैंने जो ड्रेस पहनी थी, पहले उसमें दुपट्टा था। आगे चलकर फिर मैंने नारंगी रंग की साड़ी पहनी थी। सागर साहब ने कहा था कि तुम्हें जिसमें आराम महसूस होता है, वह कपड़े पहनो। वनवास के दौरान पहनी गई उस साड़ी को मैंने अपने पास यादगार के तौर पर सहेज कर रखा है।

दीपिका ने बताया, मुझे आर्टिफिशियल च्वैलरी से एलर्जी थी। बड़ी च्वैलरी पहने पर त्वचा में घाव उभर आते थे। च्वैलरी निर्माता उसमें पीछे स्पंज लगाकर देते थे, ताकि वह मेरे शरीर में टच न हो। धारावाहिक में वनवास का शूट सबसे मुश्किल था। वनवास का सीक्वेंस शुरू होता है नदी को पार करने से। उसके लिए तपती धूप में रेत पर हमें बिना चप्पल 45 डिग्री तापमान में खड़े रहना पड़ा था। कहीं कोई छाया नहीं थी। पूरे पैर जल गए थे। उस जमाने में एक्टर को सपोर्ट करने के लिए कुछ था ही नहीं। सही मायनों में हमने परिश्रम किया है।

धारावाहिक की लोकप्रियता और बने इतिहास पर कहा, धारावाहिक की लोकप्रियता का अहसास तब हुआ जब पांच-छह महीने में देश विदेश से कॉल्स आने लगे, इंटरव्यूज होने लगे। उसके बाद हमें एहसास हुआ कि हमने इतिहास रचा है। मुझे याद है कि एक प्रशंसक मेरे लिए रोज बेलपत्र लेकर आता था, क्योंकि मैं महादेव की पूजा करती थी। वह करीब चार-पांच साल तक दरवाजे के पास रखकर चले जाते थे। एक ने मेरी पेंटिंग बनाई थी। लोग हमें देख श्रद्धा से भर जाते थे।

नेटफिलक्स और अमेजन के जमाने में रामायण के दोबारा प्रसारण के संबंध में दीपिका कहती हैं, अगर लोग इससे कुछ सीखें, तो अच्छी बात होगी। अगर लोग यह शिकायत करेंगे कि धीमा है, प्रोडक्शन वैल्यू कैसा है, तो वह अपना नजरिया है देखने का। शो में एंटरटेनमेंट वैल्यू मत ढूंढिएगा। अगर तुलसीदास की रामायण पढ़ते हैं, उसी हिसाब से रामायण को देखिएगा। सीखने की कोशिश करें। बच्चों के साथ बैठकर देखिएगा, ताकि उन्हें सीखने का भी मौका मिले। आप भी एंजॉय करेंगे।

वहीं, रामानांद सागर के बेटे प्रेम सागर बताते हैं, उस समय कोई शेड्यूल नहीं होता था। सभी कलाकार 24 घंटे के अलर्ट पर रहते थे। अगर पापा जी तीन बजे रात में सीन को लिख लेते थे तो कलाकार को तैयार होने के लिए कह दिया जाता था। कलाकार मेकअप करके तैयार हो जाते थे। दारा सिंह के मेकअप में तीन घंटे का समय लगता था। हजार जूनियर आर्टिस्ट को बंदर के किरदार में तैयार होना होता था। लिहाजा नारियल के खोखे के अंदरुनी हिस्से में संगमरमर लगाया जाता था। उसे वह दांतों के अंदर पकड़ते थे।

अहंकार नहीं करना चाहिए : अरविंद

धारावाहिक में रावण बने अरविंद त्रिवेदी इस समय 82 वर्ष के हैं। शो के दोबारा प्रसारण से वह खासे उत्साहित हैं। वह बताते हैं, रामायण ने मुझे बहुत शोहरत और लोकप्रियता दी थी। शो की वजह से ही मैं सांसद चुना गया। मैं 1991-96 तक सांसद रहा। उस किरदार को निभाकर मैंने यही सिखा कि रावण के विनाश का कारण अहंकार बना था। इंसान को अहंकार नहीं करना चाहिए।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

दैनिक जागरण
सबरंग
शहर को जानने के...
नई दिल्ली, शनिवार, 28 मार्च, 2020
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

नाम से पहचान है

1857 की क्रांति में दिल्ली के मददगार

राव तुला राम मार्ग, राम तुला राम अस्पताल व कॉलेज समेत इस नाम से फ्लाईओवर दिखते हैं, जेहन में यही सवाल आता होगा कि आखिर राव तुला राम कौन थे? जिनके नाम पर दिल्ली के इतने सारे स्थान हैं। तो आपको बता दें कि राव तुला राम ने देश की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इनका जन्म 9 दिसंबर 1825 को रेवाड़ी के रामपुरा में हुआ था। इनके पिता राव पूर्ण सिंह राजा थे। इनकी रियासत आज के दक्षिण हरियाणा में फैली थी, जिसमें करीब 87 गांव थे। राव तुला राम जब 14 साल के थे तो उनके पिता का देहांत हो गया था। उसके बाद 14 साल की उम्र में ही उन्हें राज गद्दी संभालनी पड़ी थी। पिता की मौत के बाद अंग्रेजों ने उनकी रियासत पर कब्जा करना चाहा। अंग्रेजों ने धीरे-धीरे उनकी आधी से अधिक रियासत पर कब्जा कर लिया था। फिरंगियों की इस हरकत के बाद राव तुलाराम का खून खौलना लाजमी था। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी एक सेना तैयार की। रेवाड़ी के लोगों ने भी इसमें योगदान दिया। उन्होंने अपनी 500 सैनिकों की एक सेना भी तैयार कर ली थी। 1857 के विद्रोह की आग जब मेरठ तक पहुंची तो वो भी इस क्रांति में कूद पड़े। यही नहीं जब क्रांति की ज्वाला दिल्ली पहुंची तो राव तुला राम ने क्रांतिकारियों को सैन्य बल, धन बल और सामग्रियों के जरिए मदद की। इन्होंने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया। रेवाड़ी की सेना ने अंग्रेजी हुकूमत की नाक में दम कर दिया और रेवाड़ी व उसके आस-पास के कई इलाकों पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजों ने इन्हें परास्त करने के लिए ब्रिगेडियर जनरल सोबर्स को एक भारी सेना के साथ भेजा। 5 अक्टूबर 1857 को पटौदी में उनकी झड़प राव तुला राम की एक सैनिक टुकड़ी से हुई। उनके सैनिकों ने 1 महीनों तक अंग्रेजों को घेरे रखा और आगे बढ़ने नहीं दिया। फिर अंग्रेजों ने कर्नल हैराल्ड को उनके साथ लड़ने के लिए भेजा। 16 नवंबर 1857 में अंग्रेजी सेना और राव तुला राम की सेना के बीच नसीबपुर के मैदान में भीषण जंग हुई। हैराल्ड की मौत हो गई। इसके बाद अंग्रेजों ने चाल चलते हुए पास की रियासतों को अपनी ओर से राव तुलाराम के खिलाफ लड़ने के लिए राजी कर लिया। नारनौल में हुई लड़ाई में उनकी सेना के कई अहम योद्धा मारे गए। राव तुला राम ईरान समेत अफगानिस्तान गए और वहां के राजाओं से मदद मांगी। लेकिन इसी बीच काबुल में वो बीमार हो गए और मौत हो गई।

राव तुला राम मार्ग — फाइल फोटो

संजीव कुमार मिश्र

कोरोना को हराना है

हमेशा पर्यटकों से गुलजार रहता था, अभी खामोश है रायसीना हिल से राजपथ, इंडिया गेट तक...ऐसा नहीं है ये खामोशी हमेशा के लिए है...कुछ दिन की बात है फिर सब गुलजार होगा। — ध्रुव कुमार

जूझी...लड़ी हर बीमारी को मात दे डटी रही है दिल्ली

दिल्ली हारती नहीं है, मात देना जानती है...। दिलों पर राज करना जानती है...हर किसी को दिल में बसा लेना जानती है...। अभी दिल्ली-एनसीआर सहित देश महामारी की तकलीफ से गुजर रहा है, ऐसे में भी देखिए, दिल्ली खामोशी से मुस्करा रही है...। सड़कें सुकून में हैं, प्रकृति खुलकर सांस ले रही है, धरोहर की धरा अलग आनंद ले रही है। वैसे भी दिल्ली के चुनौतियों भरा इतिहास रहा है प्लेग, कॉलरा, इंफ्लुएंजा, पोलियो, डेंगू, चिकनगुनिया हर बीमारी को मात दे फिर उठ खड़ी हुई...जी उठी है। इसी जिजीविषा के साथ दिल्ली आज फिर तत्पर है। इन्हीं बीमारियों से कैसे जूझी, लड़ी और डटी रही दिल्ली, रूबरू करा रहे हैं **संजीव कुमार मिश्र** :

चलो सड़कों को भी अवसर मिला, वर्ना कहां हर वक्त वाहनों के बोझ तले दबी रहती थीं, फिलवक्त खाली सड़कों की थकावट दूर हो रही है। हमारी धरोहर भी सुस्ता रही हैं, प्रकृति मुस्करा रही है... देखो कैसा सुकून इनके चेहरे पर खिल खिला रहा है। इस सन्नाटे में प्रकृति की गुनगुनाहट को धैर्य से सुनो...फिर महसूस करना कि ये लॉकडाउन मुसीबत है कि आपकी सेहत का तोहफा है। अब तो हम सुविधा संपन्नता के साथ घरों में वक्त बिता रहे हैं, दिल्ली का तो इतिहास रहा है हर बड़ी बीमारी से ...असुविधाओं के दौर में भी पार पा लिया था।

बैलफोर मानते थे कि दिल्ली हेल्दी है : बीमारियों की बात करें तो भारत में 19 वीं से 21वीं सदी के बीच कॉलरा (हैजा), प्लेग, पोलियो, स्मॉल पॉक्स समेत कई बीमारियां फैलीं। कॉलरा सबसे पहले 1817 में फैला। इसके बाद 1829, 1852, 1863, 1881 और 1899 में भी इसने मानवजाति को काफी नुकसान पहुंचाया। दिल्ली में भी कॉलरा बहुत से लोगों का काल बना। करीब 1861 में तैयार हुई कमिश्नर की रिपोर्ट दिल्ली में कॉलरा बीमारी व उससे लड़ने के जज्बे के बारे में काफी कुछ बताती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि '1857 से पहले दिल्ली, ब्रितानियों के रुकने के लिहाज से सबसे अस्वास्थ्यकर जगह थी। उत्तर भारत में बाकि मिलिट्री स्टेशन के मुकाबले इसे सबसे 'अनहेल्दी मिलिट्री स्टेशन' कहा जाता था। इसी अस्वास्थ्यकर माहौल की वजह से ही ब्रितानियां सिपाही का लंबे समय तक प्रवास मुमकिन नहीं होता था। शहर यमुना के किनारे स्थित है, उत्तर की तरफ रिज एरिया, छोटी पहाड़ी भी थी। जिसे 1857 की क्रांति के दौरान नष्ट कर दिया गया। कमिश्नर की इसी रिपोर्ट में डॉ बैलफोर के हवाले से दिल्ली में उन दिनों फैली बीमारी कॉलरा का जिक्र भी है। डॉ बैलफोर दिल्ली में बतौर सिविल सर्जन कई सालों तक रहे थे।

दिल्ली अनहेल्दी है, यह विचार भी शायद ब्रिटिश छावनी में बीमार पड़े सैनिकों की वजह से ही आया होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि दिल्ली में बहुत सी बीमारियों का प्रकोप रहा है। इसमें बुखार सबसे ऊपर है। लेकिन यदि समय पर इलाज हो तो बुखार बहुत खतरनाक नहीं है। लेकिन कई अन्य बीमारी मसलन सनस्ट्रोक, स्मॉल पॉक्स हैं। लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि अन्य शहरों की तुलना में कॉलरा से निपटने में दिल्ली का प्रदर्शन बेहतर रहा है। 1845 से 1856 के बीच यहां कॉलरा के मामले बहुत नहीं आए। जबकि इसी दौरान दोआब के क्षेत्र काफी प्रभावित रहे। डॉ बैलफोर मानते थे कि दिल्ली के लोग हेल्दी हैं। हां, वो चौड़ी सड़कों वाले इलाकों से तो प्रभावित थे लेकिन बावजूद इसके कॉलरा समेत अन्य बीमारियों से निपटने के लिए घनी आबादी वाले इलाकों को दुरुस्त करने, ड्रेनेज सिस्टम को सुधारने पर बल दिया था। रिपोर्ट में जिक्र है कि 1857 की क्रांति के बाद भी बहुत से सिपाही कॉलरा से ग्रसित हुए थे।'

रैबिज से निपटने को अपनाई थी आइसोलेशन की प्रक्रिया : दिल्ली में महामारी पर पंजाब की रिपोर्ट काफी कुछ जानकारी देती है। पंजाब ने बकायदा डॉ स्मिथ की अगुवाई में इस पर काफी शोध किया एवं रिपोर्ट प्रकाशित की। जिसमें कहा गया है कि सबसे पहले महामारी कुदसिया बाग में फैलनी शुरू हुई। वह एक टूटा फूटा मकान था, जिसमें एक बुजुर्ग और बच्चे थे। उन्हें तत्काल चिकित्सकीय सुविधा मुहैया कराई गई थी। यह 11 जून का दिन था, जब पहला कॉलरा का मामला सामने आया था। इसके बाद दूसरा केस 18 जून को आया। जबकि इसके बाद महज 19 दिनों में 32 मामले सामने आए थे। इनमें से 32 लोगों की मौत हो गई थी। बाद में मामले पांच हजार से भी ज्यादा हो गए थे। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 28 जून को जेल में एक व्यक्ति को भी महामारी ने अपनी चपेट में लिया था। यह व्यक्ति दो दिन पहले ही गुड़गांव (अब गुरुग्राम) से आया था। इसी दिन एक महिला भी बीमारी की चपेट में आई और 19 घंटे के बाद उसकी मौत हो गई। लेकिन इन घटनाओं के बीच बीमारी से निजात के लिए युद्धस्तर पर उपाय शुरू किए जा चुके थे। पुराने जीर्णशीर्ण घरों को दुरुस्त किया जाने लगा। लोगों को कैंपों में रखा गया। साफ सफाई का ध्यान दिया गया। लोगों में पैनिक ना फैले इसका विशेष ध्यान दिया गया था। दिल्ली अभिलेखागार विभाग के हेड ऑफ आफिस संजय गर्ग कहते हैं कि दिल्ली में कॉलरा ही नहीं प्लेग, इंफ्लुएंजा यहां तक की रैबिज से निपटने के लिए भी एक तरह के आइसोलेशन की प्रक्रिया अपनाई गई थी। सबसे प्रभावी कदम तो लोगों को अपने घरों में रहने की सलाह ही देना था। उन दिनों लोग इस सलाह पर अमल भी करते थे।

फोड़ा जिसे कहते थे औरंगजेब बीमारी : 1861 की कमिश्नर की रिपोर्ट में दिल्ली की एक अन्य बीमारी का जिक्र है। जिसे आमबोलचाल की भाषा में फोड़ा अथवा जिसे औरंगजेब बीमारी का नाम भी दिया गया था। रिपोर्ट की मानें तो 1859-60 के बीच ब्रितानिया सिपाही बड़ी बुरी तरह इससे प्रभावित हुए थे। सिपाही लगभग सभी मौसम में इससे प्रभावित होते थे लेकिन स्थानीय निवासी अधिकतर गर्मियों में ही इससे पीड़ित होते थे।

गालिब ने जब कहा प्लेग खत्म हो जाएगा तब मरूंगा : प्लेग को लेकर एक कहावत बहुत प्रसिद्ध थी। कहा जाता था कि प्लेग सिंधु नदी नहीं पार कर सकता, पर 19वीं शताब्दी में प्लेग ने भारत पर आक्रमण कर दिया। सन् 1815 में तीन वर्ष के अकाल के बाद गुजरात के कच्छ और काठियावाड़ में इसने डेरा डाला। अगले वर्ष यह बीमारी हैदराबाद और अहमदाबाद पहुंच गई। 1836 में पाली और मेवाड़ भी पहुंची। लेकिन रेगिस्तान के बालू में अधिक चल न पाया। 1823 में केदारनाथ पहुंचा व इसके बाद 1836 के बाद उत्तर भारत पहुंचा। दिल्ली भी प्लेग से जूझी। काफी जानमाल का नुकसान हुआ। दिल्ली में प्लेग से मिर्जा गालिब भी डर गए थे? उन्हें भी मौत का खतरा लगने लगा था? लेकिन इतिहासकार इससे भिन्न राय रखते हैं। अजमल सिद्दकी कहते हैं कि गालिब ने कुल दो तीन पत्रों में जिक्र किया था। यह एक विधा होती है किता-ए-तारीख। पत्र में किसी भी बीमारी का जिक्र नहीं है, कि क्या बीमारी थी, कितना प्रभाव था। हां, गालिब को एक अंदाजा था कि 1860 में वो मर जाएंगे। लेकिन यह समय आकर चला गया। गालिब सकुशल थे। इस पर उनके दोस्त मीर मेंहदी मजरूह ने खत लिखा, बड़े मजाकिया अंदाज में कहा कि गालिब, तुम तो मरने वाले थे लेकिन मरे नहीं? गालिब ने पत्र लिखा, 1860 वाली बात गलत नहीं थी। मैंने सही भविष्यवाणी की थी, लेकिन मैं मरता उसके पहले ही प्लेग फैल गया। अब मेरे नसीब में नहीं था कि ऐसी जलील मौत मरूं। अब जब प्लेग खत्म हो जाएगा तब मरूंगा।

धैर्य-संयम का परिचय देती रही है दिल्ली : इतिहासकार आरवी स्मिथ कहते हैं कि दिल्ली में समय-समय पर बहुत सी बीमारियों ने जान माल का नुकसान पहुंचाया। कर्फ्यू तो नहीं पता लेकिन 1900-1905 में दिल्ली ने इंफ्लुएंजा का भी दंश झेला। इसमें बहुत से लोगों की मौत हुई थी। एक-एक इलाके में छह-सात लोग मर रहे थे। इसी तरह प्लेग भी फैला था। प्लेग के दौरान तो मकानों में आग लगा दी गई थी। जिस जगह प्लेग का प्रभाव ज्यादा था वहां बहुत से मकानों को जला ही दिया जाता था। लोग कैंपों में रहने लगे थे। स्वास्थ्य सुविधाएं कम तो थी लेकिन लोगों ने धैर्य व संयम का परिचय दिया था। जिसकी वजह से दिल्ली प्लेग ही नहीं अन्य बीमारियों को हराने में कामयाब हो पाई। लेकिन यह सिलसिला यहीं नहीं थमा। जब देश आजादी के बाद खुली हवा में सांस ले रहा था तो दिल्ली एक बार फिर बीमारी की चपेट में आई। इस बार संक्रामक हेपेटाइटिस ने दिल्ली को जकड़ा। जोसेफ एम डेनिस ने इस बाबत एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसे सैन फ्रांसिस्को में हुए वार्षिक मेडिकल कान्फ्रेंस में पेश किया गया था। जिसमें कहा गया है कि 1955 दिसंबर महीने में दिल्ली में अचानक संक्रामक हेपेटाइटिस फैल गया। यह किसी ब्लास्ट की तरह था, जब अचानक मरीज सामने आने लगे। रोकथाम के साथ ही अध्ययन के लिए एक कमेटी भी गठित की गई थी। जिसने पाया कि यह दिल्ली के ट्रीटेड वाटर सप्लाई की वजह से हुआ। करीब सात हजार केस आए थे, 29 हजार 300 केस तो पीलिया के भी थे। अनुमान लगाया गया था कि करीब लाखों की संख्या में लोग प्रभावित हुए थे। हालांकि इस बार भी दिल्ली ने दम लगाकर मुकाबल किया और बीमारी को शिकस्त दी थी। लोग पानी उबाल कर ही पीते थे और साफ सफाई का ध्यान देते थे। डॉक्टरों का परामर्श मानते थे। तभी एक समय के उपरांत मामले कम हो गए थे। अभी भले ही कोरोना संक्रमण एक महामारी की शक्ल अख्तियार कर चुका है। दिल्ली-एनसीआर भी इसकी चपेट में आ गया है लेकिन जिस तरह लोग डॉक्टरों से राय शुमारी कर रहे हैं। खुद को घरों में क्वारंटाइन किए हुए हैं। उससे यह भी संभावना बलवती होती है कि बहुत जल्द इसपर अंकुश लगा लिया जाएगा।

123 साल पुराना कानून

कोरोना से निपटने के लिए 123 साल पुराना कानून हथियार बना है। महामारी बीमारी कानून 1897 में बना। जो 4 फरवरी को लागू किया गया। महामारी कानून 1897 संभवत सबसे छोटा कानून है, जिसमें सिर्फ चार धाराएं हैं। महामारी वाली खतरनाक बीमारियों को फैलने से रोकने और इसकी बेहतर रोकथाम के लिए अंग्रेजी हुकूमत के दौरान यह कानून बनाया गया था। आजादी के बाद महामारी कानून को एक नवंबर 1956 को कुछ राज्यों में छोड़कर पूरे भारत में लागू किया गया था।

प्रकृति बहुत सुकून में है...कुछ ऐसे मुस्करा रही है...खिलखिला रही है...। संजय

दिल्ली की देहरी

अंग्रेजों की दिल्ली में रोग और निदान का इतिहास

नलिन चौहान
दिल्ली के अनजाने इतिहास के खोजी

वर्ष 1803 में दिल्ली जीतने के बाद से ही अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी के राज में जन स्वास्थ्य के विषय पर बहुधा चर्चा होती थी। ऐसा अंग्रेजों के लिए दिल्ली का एक महत्वपूर्ण सैनिक ठिकाना होने और उसके उत्तर पश्चिमी सूबे की राजधानी बनने की संभावना के कारण भी था। 19वीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेजों में भारतीय रोगों और जन स्वास्थ्य की समस्याओं को लेकर अधिक समझ नहीं विकसित हुई थी, पर इन रोगों के मूल कारणों की तह तक पहुंचने और उनके उपायों को खोजने के प्रयास होने लगे थे, चाहे उसमें विदेशी हुक्मरानों की अपनी गरज थी।

किसी बीमारी का अचानक ही वृहत रूप में किसी आबादी को प्रभावित करना महामारी कहलाता है। पहले महामारी का प्रयोग संक्रामक रोग के लिए किया जाता था। जैसे मलेरिया, बड़ी माता, चेचक और हैजा। अंग्रेजों की दिल्ली में प्रचलित रोग जैसे हैजा, मलेरिया थे। दिल्ली के लिए यही माना गया कि ये सभी रोग जल जनित छूत के कारण होते हैं। और इन रोगों का फैलाव बहते पानी, कुएं के खारे पानी और तालाबों के ठहरे पानी के कारण होता है। वर्ष 1817 में नजफगढ़ झील के पानी की निकासी की एक योजना बनाई गई थी, पर शायद इसके निर्माण पर होने वाली खर्च राशि को देखते हुए इसका श्रीगणेश ही नहीं हुआ।

दिल्ली शहर में सफाई के इंतजाम आरंभ से ही भीतर के क्षेत्र में पानी की आपूर्ति से जुड़े हुए थे। अली मर्दन नहर सूख चुकी थी। वर्ष 1852 में शहर के गंदे पानी की निकासी व्यवस्था को लेकर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने पर गंभीरता से विचार किया गया। यहां तक कि अत्याधिक तापमान वाले उजाड़ रिज को भी सैनिकों के स्वास्थ्य के लिए खतरा माना गया। जहां पर तब दो साल से अधिक समय से (1857 के बाद) अंग्रेज फौज की टुकड़ियां टिकी हुई थीं। उल्लेखनीय है कि अंग्रेज सेनापति बर्नार्ड 5 जुलाई 1857 को हैजे से ही मरा था। इसी वजह से तत्कालीन शीर्ष अंग्रेज सैनिक अधिकारी चार्ल्स नेपियर को हैरानी थी कि अगर दिल्ली अस्वास्थ्यप्रद है तो फिर यह इतना भव्य नगर कैसे बना? वह इस बात को जानना चाहता था। शहर को साफ रखने के लिए कठोरता से नियम पालन करवाने वाली पुलिस, नहर से सिंचाई के बारे में सफाई के उपयुक्त नियम, नहरों के साफ किनारे, क्योंकि वहीं से मलेरिया बहुत तेजी से फैलता है, इस तरह ही दिल्ली भारत के किसी भी दूसरे भाग की तरह स्वस्थ होगी।

शहर के नए रूप से मिली राहत : 19वीं शताब्दी के आरंभ में स्वास्थ्य का स्तर बहुत निम्न था क्योंकि पश्चिमी यमुना नहर के दोषपूर्ण तरीके से जुड़े होने और उनके फलस्वरूप पानी जमा होने के कारण दिल्ली में और इस शहर के चारों ओर बुखार मुख्य बीमारी के रूप में फैलता था। अंग्रेज सरकार ने वर्ष 1847 में स्वास्थ्य की स्थिति की मांग के लिए एक समिति बनाई और चिकित्सा अधिकारी ने रिपोर्ट दी कि 75 फीसद से भी अधिक लोगों को प्लीहा (स्पलीन) की बीमारी है। तब दिल्ली पंजाब सरकार का एक जिला थी और चिकित्सा व जन स्वास्थ्य व्यवस्था पंजाब सरकार के सिविल सर्जन के अधीन थी। सिविल सर्जन दिल्ली ने प्लीहा की बीमारी बहुत अधिक होने की और दलदल से जल निकासी की व्यवस्था की कमी से इसका निकट संबंध होने की रिपोर्ट दी। सन् 1898 में शहर को नया रूप देने से स्थानीय जनता के स्वास्थ्य की संतोषजनक स्थिति सामने आई और प्लीहा की बीमारी के मामले घटने आरंभ हो गए।

शाही शहर के लिए किया अंशदान : मुगल दरबार के व्यक्तियों, बैंकरों और बनियों ने खुले हाथ से दिल्ली में एक शाही शहर के लायक एक प्रस्तावित डिस्पेंसरी के लिए अंशदान किया। जहां स्थानीय स्तर पर जमा चंदे से इस काम के लिए करीब दस हजार रुपये जुटे वहीं अंग्रेज सरकार ने केवल 2500 रुपये धनराशि ही स्वीकृत की। वर्ष 1850 में अंग्रेज भारत के शहरों में जन स्वास्थ्य के लिए जनता से कर उगाही के लिए कमेटियों के गठन को लेकर एक अधिनियम बना। वर्ष 1857 के छह वर्ष बाद वर्ष 1863 में दिल्ली नगर निगम की बुनियाद पड़ी। उसकी पहली सभा 1 जून 1863 के दिन हुई। सन् 1881 में इसे प्रथम दर्जे की म्युनिसिपल कमेटी बना दिया गया। उस वक्त इसके 21 सदस्य थे जो सब नामजद थे।

बीमारी से बचने के लिए अंग्रेजों के जतन : वर्ष 1898 में प्लेग के डर की वजह से अंग्रेजों ने यूरोपीय क्लब चांदनी चौक के टाउन हाल से लुडलो कैसल स्थानांतरित किया। अंग्रेजों ने सिविल लाइन को अपनी दिल्ली बना लिया था और शहर की ओर वे कहर की दृष्टि से देखते थे। सिविल लाइन में उनके बड़े-बड़े आलीशान बंगले थे, अपने क्लब थे, जिसमें हिन्दुस्तानी शरीक नहीं हो सकते थे, सब प्रकार की सुविधा और साधन वहां मौजूद थे। और दिल्ली में बेबसी के हालात थे। शहर की सफाई और सेहत की हालत यह थी कि मलेरिया और मौसमी बुखार तो फैला ही रहता था, प्लेग का भी हमला हो जाता था। वर्ष 1911 में जब अंग्रेज राजा शाह जार्ज पंचम का दिल्ली में दरबार हुआ तो उसने कलकत्ते से राजधानी को हटा कर दिल्ली को राजधानी घोषित कर दिया। लाचार अंग्रेजों को भी दिल्ली की दुरुस्ती की ओर ध्यान देना पड़ा। यह कोई हिन्दुस्तानियों पर इनायत करने के लिए न था, बल्कि खुद अपने को खतरे से बचाने के लिए था क्योंकि दिल्ली की सेहत खराब रहने से उनको अपने लिए खतरा था। पुराने दस्तावेजों से पता चलता है कि दिल्ली काफी हद तक मलेरिया से प्रभावित रही है। यह रोग विशेषकर नदी के निकटवर्ती क्षेत्र में और नजफगढ़ झील के चारों ओर फैलता था। अंग्रेजों के समय लाल किले में रहने वाले सैनिकों को विशेष देखभाल में रखा जाता था क्योंकि लाल किले के अंदर और उसके चारों ओर मलेरिया का भारी प्रकोप होता था।

अंग्रेजों के जमाने के अस्पताल

जामा मस्जिद के पास जो डफरिन अस्पताल था, 1885-93 में लार्ड डफरिन ने उसका शिलान्यास किया था। यह 1892-93 में बनकर तैयार हुआ। दिल्ली में यह पहला अंग्रेजी अस्पताल था। इसकी एक मंजिल जमीनदोज थी, एक ऊपर। जब इरविन अस्पताल बना तो यह अस्पताल वहां चला गया और यहां डिस्पेंसरी रह गई। 1857 की आजादी की लड़ाई से पहले लाल किला के पास लाल डिग्गी में एक छोटा सा अस्पताल आठ बिस्तरों का हुआ करता था, जो कि 1857 के बाद खत्म हो गया। सेंट स्टीफेंस अस्पताल वर्ष 1884 को चांदनी चौक में जहां अब सेंट्रल बैंक है, अंग्रेज महिला विंटर की याद में वर्ष 1884 में औरतों के लिए बनाया गया था। डचेच ऑफ कनॉट ने 8 जनवरी को इसका शिलान्यास किया था और वर्ष 1885 में लेडी डफरिन ने इसका उद्घाटन किया था। यह इमारत लाल पत्थर की बनाई गई थी, जो दो मंजिला थी। कुछ ही वर्ष में इसकी इमारत छोटी पड़ गई, तब तीस हजारी में फूंस की सराय के सामने वर्ष 1906 में लेडी मिंटो ने एक दूसरे अस्पताल का शिलान्यास किया। जनवरी 1909 में लेडी लेन ने उसका उद्घाटन किया। अब जीपीएस और केंब्रिज मिशन इस अस्पताल को चलाते हैं। वर्ष 1904 में दिल्ली में औरतों के विक्टोरिया जनाना अस्पताल का शिलान्यास 19 फरवरी 1904 को लेडी रिवाज द्वारा जामा मस्जिद के मछलीवालां में किया गया था। अब तो यह बहुत बढ़ गया है। दिल्ली में तब औरतों के तीन अस्पताल थे। एक यह, दूसरा फूंस की सराय पर मिशनरियों का, जो पहले चांदनी चौक में हुआ करता था और तीसरा लेडी हार्डिंग अस्पताल। लेडी हार्डिंग अस्पताल की स्थापना वर्ष 1912 में लेडी हार्डिंग ने की। उसी के नाम पर इसे चलाया गया, करीब तीस लाख रुपया इसके लिए हिंदुस्तानी राजाओं तथा अन्य लोगों से जमा किया गया। कॉलेज के साथ इसमें दो सौ मरीजों को रखने के लिए अस्पताल भी खोला गया। साथ ही एक नर्सिंग स्कूल और सौ छात्रों के लिए छात्रावास भी खोला गया। इस पर कुल लागत 3391301 रुपये आई। इरविन अस्पताल का शिलान्यास वर्ष 1930 में लार्ड इरविन द्वारा हुआ था मगर यह बनना शुरू हुआ वर्ष 1934 में और अप्रैल 1935 में बन कर तैयार हुआ। करीब 26 लाख रुपया इस पर खर्च आया। इसमें 320 मरीजों की गुंजाइश रखी गई थी। 20 पारिवारिक वार्ड बनाए गए और दस विशेष वार्ड।

लार्ड इरविन के बाद वर्ष 1932 में लार्ड विलिंगडन आया, जो वर्ष 1936 तक दिल्ली में रहा। इसके जमाने की यादगार विलिंगडन अस्पताल है। यह नई दिल्ली के गोल डाकखाने के पास स्थित है। अब यह राम मनोहर लोहिया अस्पताल कहलाता है।

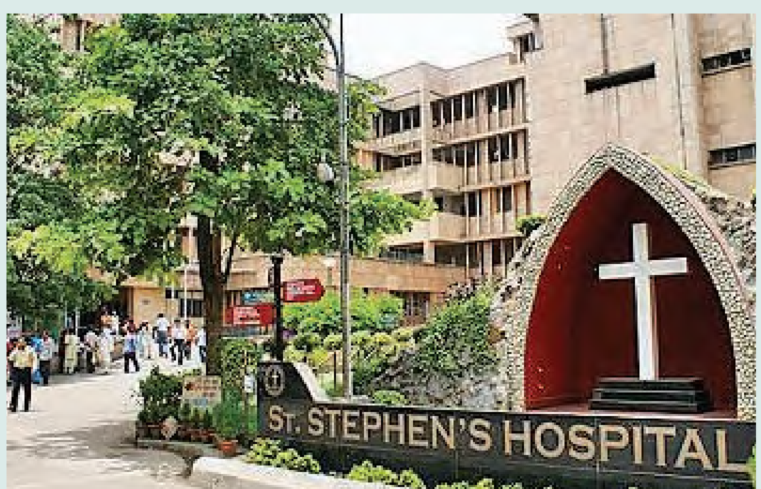

दुनिया भर में पहली बार हुआ सबसे बड़ा साइबर हमला

आज ही के दिन 2013 में इंटरनेट पर सबसे बड़ा साइबर हमला हुआ था। पांच देशों की पुलिस इसकी जांच में जुटी। हमलावरों ने डिस्ट्रिब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें लक्ष्य को बहुत ज्यादा ट्रैफिक भेजा जाता है, ताकि वो पहुंच के बाहर हो जाए।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस नजरबंदी से निकलकर बर्लिन पहुंचे

आज ही के दिन वर्ष 1941 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस मॉस्को होते हुए बर्लिन पहुंचे। भारत में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें नजरबंद किया था। जहां से वे चकमा देकर निकलने में कामयाब रहे। मई में वे जर्मन तानाशाह एडोल्फ हिटलर से मिले।

पहली अस्पताल आधारित एंबुलेंस सेवा शुरू हुई

आज ही के दिन 1866 में अमेरिका के ओहियो में पहली बार अस्पताल आधारित एंबुलेंस सेवा शुरू हुई। इस सेवा का सबसे पहले सही प्रयोग न्यूयॉर्क के डॉक्टर एडवर्ड डॉल्टन ने किया। डॉल्टन अमेरिकी चिकित्सक थे, जिन्होंने युद्ध में भी भाग लिया। मरीजों को लाने के लिए जो एंबुलेंस लगाई गई थी, उनमें चिकित्सकीय उपकरण और जरूरी दवाएं रखी गईं। शुरुआत में यह व्यवस्था खासतौर पर हैजे के रोगियों को लाने के लिए की गई। हालांकि इससे पहले युद्ध क्षेत्रों के लिए एंबुलेंस सेवा अस्तित्व में आ चुकी थी।

जूते घर के बाहर निकालिए और उन्हें साफ रखिए

वैज्ञानिक आधारों पर जांची-परखी भारतीय मान्यताओं-परंपराओं को अब पश्चिम भी अपनाने पर जोर दे रहा है। नमस्ते के बाद जूते-चप्पलों को घर के बाहर रखने पर वहां जोर दिया जा रहा है। कोरोना के प्रकोप ने उन्हें भारतीय ज्ञान-विज्ञान में उम्मीद की किरण नजर आने लगी है। पहले पश्तिम के देश आधुनिकता के नाम पर इन भारतीय परंपराओं को पिछड़ी सोच बताकर विरोध जताते थे। तभी तो आधुनिकता के नाम पर वहां के लोग किचन तक जूते पहनकर घूस जाते हैं। अब भारतीय परंपरा को अपनाने पर वहां के वैज्ञानिक भी जोर दे रहे हैं। तमाम शोधकर्ता और वैज्ञानिक कह रहे हैं कि कृपया अपने जूते आप घर के बाहर ही उतारिए और उन्हें साफ रखिए, ताकि कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ी जा रही वैश्विक लड़ाई को जीता जा सके। ऑस्ट्रेलिया में बाकायदा सरकार ने निर्देश दिए हैं कि जूते घर के बाहर उतारकर ही अंदर जाएं।

जूते कोरोना के वायरस की शरणस्थली

कैलिफोर्निया के सैन डियागियो शहर की डॉ. जॉर्जियन नैनोस ने बताया कि जूते कोरोना वायरस के बड़े वाहक हो सकते हैं। इन्हें हर हाल में घर से बाहर ही उतार देना चाहिए। जूते का सोल बैक्टिरिया, फंगस और वायरस की अच्छी शरणस्थली है। डॉ. नैनोस के दावे को वायरोलॉजिस्ट डॉ. मैरी ई स्कैमिडट भी सही बताती हैं। उन्होंने कहा कि जूता चाहे लेदर का हो या कैनवास का या फिर किसी सिंथेटिक पदार्थ का, उस पर वायरस जिंदा रह सकते हैं। कोरोना वायरस के लिए जूते बेहतरीन कैरियर हैं। जूतों पर कोरोना वायरस पांच दिन तक जिंदा रह सकता है, जबकि स्टील और प्लास्टिक पर कोरोना वायरस तीन दिन (72 घंटे) तक ही जिंदा रह सकता है।

जूते रखें साफ

कैनवास और साफ फैब्रिक-सिंथेटिक लैदर से बने जूतों को कम तापमान में साबुन से अच्छी तरह साफ करें। लेदर के जूतों को 70 प्रतिशत एल्कोहल वाले किसी भी डिस्इंफेक्शन मटीरियल से साफ करें। पूरा जूता साफ करें। फीते और हील को साफ करना कतई न भूलें।

सोल है बेहतरीन शरणस्थली

जूते के सोल को लंबे समय तक टिकने के लिहाज से बनाया जाता है। सामान्य रूप से रबड़, पीवीसी (प्लास्टिक) या लेदर को प्लास्टिक के साथ मिलाकर सोल तैयार किया जाता है। इन्हें सघन रूप से गुथा जाता है। इसमें किसी तरह के छेद नहीं होते हैं। सोल से किसी भी तरह की हवा, पानी या नमी अंदर नहीं जा सकती है। उसके यही गुण बैक्टीरिया, फंगस और वायरस के लिए बेहतरीन हालात मुहैया कराते हैं।

फीते और हील पर भी जिंदा रह सकता है कोरोना

फीते और हील पर भी कोरोना वायरस जिंदा रह सकता है। इसका कारण भी साफ है। दोनों चीजें सिंथेटिक पदार्थों से बनाई जाती हैं।

जूते से कैसे फैलता है कोरोना वायरस

किसी कोरोना संक्रमित की खांसी, थूकने और छींकने से ड्रॉपलेट्स अधिकतम दो मीटर तक जा सकते हैं। वे जमीन पर गिर सकते हैं या पास खड़े किसी व्यक्ति के जूते पर। जमीन पर पड़े ड्रॉपलेट पर आपका जूता पड़ेगा तो कोरोना वायरस उस पर आ जाएगा। इसके बाद वह व्यक्ति जूते पहनकर घर में आ जाता है। भले ही वह हाथ साफ कर ले लेकिन, अब कोरोना वायरस उसके पूरे घर में है। ऐसे में हालात बहुत खराब हो सकते हैं। डॉ. नैनोस जैसे विशेषज्ञों का मानना है कि ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में कोरोना इसी तरह फैला।

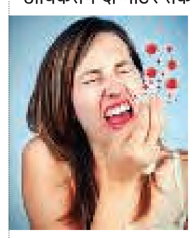

अलग-अलग रखें फुटवियर

ऑस्ट्रेलिया की पब्लिक हेल्थ की विशेषज्ञ डॉ. कोरलो विनर कहती हैं कि अगर आप घर के बाहर जाते हैं तो कृपया जूते घर के बाहर गैराज या मुख्य गेट से बाहर ही निकाल दें। घर में बाहर के जूते न लाएं। घर के अंदर के फुटवियर अलग रखें।

कहां ज्यादा खतरा

सुपर मार्केट, एयरपोर्ट और अस्पताल जाने वाले और पब्लिक ट्रांसपोर्ट इस्तेमाल करने वाले लोगों के जूते कोरोना वायरस की शरणस्थली बन जाते हैं।

स्रोत : डेलीमेल

इधर-उधर की

खाली समय में शिक्षक ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

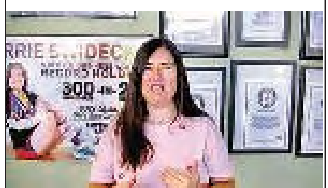

कैलिफोर्निया, एजेंसी : अमेरिका कोरोना संक्रमितों की संख्या के लिहाज से चीन को पीछे छोड़ चुका है। हालांकि इस मुश्किल दौर में ऐसी कई खबरें आ रही हैं जिनसे लोगों में उत्साह का संचार हो रहा है। खाली समय में तरह-तरह के मनोरंजन के उपाय कर रहे हैं। कैलिफोर्निया की एक शिक्षक ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने 18 घंटे 34 सेकेंड तक वीडियो गेम के सामने डांस करके यह कीर्तिमान बनाया। बेकर्सफील्ड की कैरी स्वीडैकी पिछले 20 सालों से इस तरह के खेल खेल रही है। उन्होंने बताया कि इसके कारण वह अपना वजन 75 पाउंड कम कर सकीं। इस तरह से खेल ने उन्हें न सिर्फ मनोरंजन दिया बल्कि पहले से ज्यादा स्वस्थ भी बनाया है। दरअसल, डांस डांस रिवोल्यूशन नृत्य पर आधारित खेल है, जिसमें स्क्रीन पर वर्चुअल किरदार होता है, जिसके साथ में समान लय से नृत्य करना होता है। उनके डांस की वीडियो सोशल मीडिया पर भी खूब वायरल हो रही है।

कोविड19 की तुरंत नतीजे वाली जांच पर उठे सवाल

दो राय ▶ तत्काल नतीजे देने वाली टेस्ट किट से राजनेता हैं उत्साहित

विशेषज्ञ इनके परिणामों को मान रहे हैं कम विश्वसनीय

मैड्रिड, एपी : कोरोना संक्रमितों की जांच के हाल ही में विकसित दो तरह की जांच को लेकर जहां कुछ राजनेता उत्साहित हैं वहीं वैज्ञानिकों ने इन जांच नतीजों की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। इनमें से एक तरह की जांच संभावित मरीज की नाक से लिए गए तरल नमूने और दूसरी जांच सुई की नोक पर लिए गए रक्त नमूने से हो रही है।

कोरोना वायरस यानी कोविड-19 से जंग लड़ रहे स्पेन में संसाधनों का टोटा पड़ गया है। ऐसे में हाल ही में विकसित नाक-गले से लिए गए तरल नमूने और सुई की नोक पर लिए गए रक्त नमूनों से तत्काल परिणाम देने वाली जांच ने बड़ी उम्मीद जगाई थी। हालांकि ये जांच किट भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। इनमें भी कई विश्वसनीय नहीं हैं।

स्पेन के स्वास्थ्य मंत्री सल्वाडोर इला ने कहा कि बाजार में अफरातफरी है। उन्होंने देश में फेस मास्क, सुरक्षा उपकरण और तत्काल जांच की किट की अनुपलब्धता पर अफसोस जताया है। उन्होंने बताया कि इस संकट के समय हर किसी को इनकी जरूरत है। यही नहीं सभी अच्छी गुणवत्ता भी चाहते हैं। देश में इस समय उपलब्ध तत्काल जांच वाले एंटीजेन टेस्ट किट में सभी अच्छी गुणवत्ता के नहीं हैं। स्पेन की सरकार ने एक कंपनी को नौ हजार किट लौटा दी हैं जिनके नतीजे विश्वसनीय नहीं पाए गए। चीन की सरकार के मुताबिक इस किट को बनाने वाली कंपनी के पास इसकी बिक्री का लाइसेंस तक नहीं है।

ब्रिटेन की ईस्ट एंग्लिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने तैयार की थी नई किट। प्रतीकात्मक

जॉनसन ने बताया गेमचेंजर : ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन ने तत्काल जांच किट को गेमचेंजर बताते हुए 35 लाख किट का आर्डर दे दिया है। जॉनसन के अनुसार, तत्काल जांच वाले इन टेस्ट से फौरन पता चल जाएगा कि कौन इस वायरस की चपेट में है और कौन ठीक होकर काम पर लौट सकता है। इन आसान टेस्ट से स्वास्थ्य विभाग के वे कर्मचारी जल्द जल्द काम पर लौट सकेंगे जिन्होंने बीमारी की आशंका के आधार पर खुद को घरों में क्वारंटाइन कर रखा है।

वैज्ञानिकों को नहीं है भरोसा : कई वैज्ञानिकों को इन टेस्ट पर भरोसा नहीं हो पा रहा है। उनका मानना है कि इतनी जल्दी सही जांच नतीजे मिल नहीं सकते। पिछले कई महीनों से जांच का जो तरीका प्रचलित है उसमें मरीज के गले और नाक से रुई के जरिये तरल नमूना लिया जाता है जिसमें जिंदा वायरस हों। इन नमूनों की अनगिनत प्रतियां बनाई जाती हैं जिनका कंप्यूटर से विश्लेषण किया जाता है। इस काम में कई-कई दिन लग जाते हैं। जबकि नए तरीके के टेस्ट (जो कि फ्लू की जांच से मिलते-जुलते हैं) में मात्र 15 मिनट में मिनट में परिणाम आ रहा है। अमेरिका, चीन व कुछ अन्य देशों ने कोरोना के भ्रामक पॉजिटिव व निगेटिव परिणाम आने की जानकारी साझा की है। इसी कारण विशेषज्ञों का मानना है कि तत्काल जांच के नतीजे कम विश्वसनीय हैं।

आइआइटी खड़गपुर ने जनता की तैयारी समझने के लिए किया अध्ययन

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : कोरोना वायरस को लेकर लॉकडाउन के जरिये भारतीय नागरिकों की शारीरिक दूरी बनाने तथा यात्रा प्रतिबंधों को लेकर समझ का मूल्यांकन करने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) खड़गपुर ने एक अध्ययन किया है। यह लॉकडाउन की स्थिति में लोगों की तैयारी को लेकर जागरूकता पर रोशनी डालता है। हालांकि, आइआइटी ने अध्ययन का निष्कर्ष अभी सार्वजनिक नहीं किया गया है।

आइआइटी खड़गपुर ने एक बयान में कहा कि अध्ययन में बंद की स्थिति में लोगों की तैयारियों, उनके व्यवहार का आकलन किया गया। इसके साथ ही यात्रा प्रतिबंधों एवं शारीरिक दूरी बनाकर रखने का उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। आइआइटी खड़गपुर के रणबीर और चित्रा गुप्ता स्कूल ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर डिजाइन एंड मैनेजमेंट, सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अनुसंधानकर्ताओं ने अध्ययन किया, जिसमें प्रोफेसर भार्गब मैत्रा ने मार्गदर्शन किया। अनुसंधान दल में डॉ सौरभ दंडापट, डॉ किंजल भट्टाचार्य, अनाम साई किरण और कौस्तुभ सेसरदार शामिल रहे। यह अध्ययन 22 मार्च तक 28 राज्यों तथा चार केंद्रशासित प्रदेशों के 400 से अधिक शहरों में किया गया। संस्थान ने कहा कि यह अध्ययन भविष्य में इस तरह की किसी विपदा की स्थिति से निपटने के लिए प्रभावी रणनीतिक उपाय करने और नीतिगत तरीके ईजाद करने में मदद करेगा।

इम्यून सिस्टम को कमजोर करता है ज्यादा नमक

शोध अनुसंधान

एक अध्ययन से पता चला है कि भोजन में नमक की अधिक मात्रा ना केवल ब्लड प्रेशर के लिए खराब है बल्कि यह इम्यून सिस्टम को भी नुकसान पहुंचाती है। जर्नल साइंस ट्रांसलेशनल मेडिसिन में प्रकाशित शोध के अनुसार, जो लोग रोजाना सामान्य से छह ग्राम अतिरिक्त नमक का सेवन करते थे, उनका इम्यून सिस्टम कमजोर पाया गया। जर्मनी की बॉन यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सपेरिमेंटल इम्यूनोलॉजी में प्रोफेसर डॉ क्रिश्चियन कर्ट्स ने बताया कि अधिक मात्रा में नमक के सेवन से ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है, जिससे दिल का दौरा पड़ने या स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। पूर्व के अध्ययन से उलट इस शोध से यह भी पता चला कि नमक का ज्यादा मात्रा में सेवन शरीर के इम्यून सिस्टम को भी कमजोर करता है। पहले कहा गया था कि इम्यून सेल्स, जिन्हें मैक्रोफेज के नाम से जाना जाता है, परजीवी पर हमला कर उन्हें नष्ट कर देती हैं। ये सेल्स विशेष रूप से नमक की उपस्थिति में सक्रिय होती हैं। इसलिए शोधकर्ताओं का मानना था कि नमक आम तौर पर इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है। लेकिन नमक का ज्यादा सेवन करने से इसे नुकसान भी पहुंचता है। -प्रेट्र

एस्पिरिन लेने से कम नहीं होता अल्जामइमर का खतरा

एक अध्ययन से पता चला है कि दिन में एक बार कम मात्रा में एस्पिरिन लेने से अल्जाइमर रोग के कारण होने वाले जोखिम कम नहीं होते। अमेरिकन एकेडमी ऑफ न्यूरोलॉजी के मेडिकल जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, एस्पिरिन में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होता है और यह रक्त को भी पतला करता है। सालों से डॉक्टर लोगों को दिल की बीमारी और स्ट्रोक के खतरे को कम करने के लिए थोड़ी मात्रा में एस्पिरिन लेने की सलाह देते रहे हैं। चूंकि एस्पिरिन दिल के लिए फायदेमंद है, इसलिए पूर्व के अध्ययनों में यह माना जाता रहा कि यह मस्तिष्क में सूजन और रक्त के थक्के बनने की प्रक्रिया को कम करके डिमेंशिया के जोखिम को भी कम कर सकती है। ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ता जोएन रेयान ने कहा, हमारे अध्ययन में यह बात साबित नहीं हुई। -एएनआइ

मनरंजन

रणवीर ने डांस दिग्गजों को दिया ट्रिब्यूट

अवॉर्ड शो में बीते जमाने के मशहूर कलाकारों को उनके गानों पर डांस करके आज के सितारे ट्रिब्यूट देते हैं। रणवीर सिंह ने जी सिने अवार्ड में चार कलाकारों के गानों पर डांस करके उन्हें ट्रिब्यूट दिया है। जिन कलाकारों को उन्होंने ट्रिब्यूट दिया, वे अपने जमाने में डांस के खास अंदाज के लिए जाने जाते थे। ये दिग्गज मिथुन चक्रवर्ती, गोविंदा, शम्मी कपूर और जितेंद्र हैं। रणवीर ने यह रेट्रो डांस किशोर कुमार के गाए गानों पर किया था। उन्होंने इसे ऐसे डिजाइन किया था, जिसमें वे इन चार दिग्गजों को अपनी परफॉर्मेंस से सलाम कर सकें। रणवीर ने अपनी डांस परफॉर्मेंस के लिए उन गानों को चुना, जो उन सितारों की पहचान रहे हैं। जितेंद्र के लिए नैनों में सपना... शम्मी कपूर के लिए ओ हसीना जुल्फों वाली... गोविंदा के लिए हुस्न है सुहाना... और मिथुन के लिए डिस्को डांसर... गाने को उन्होंने चुना। इस बार कोरोना वायरस के कारण जी सिने अवार्ड बिना दर्शकों के गत 27 मार्च को मुंबई में हुआ। इस अवार्ड शो का प्रसारण आज शाम साढ़े सात बजे जीटीवी पर होगा।

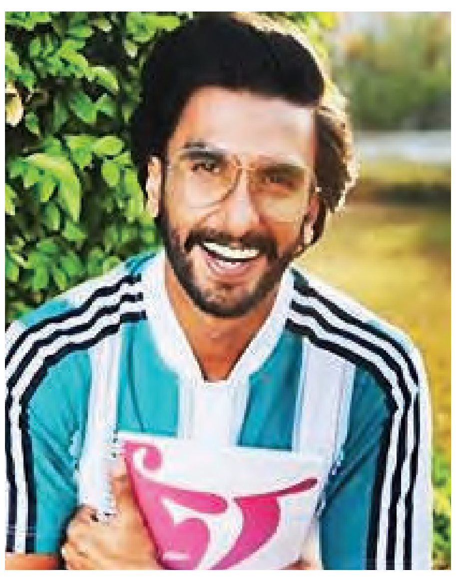

तैयार होकर रहना अच्छा लगता है काजोल को

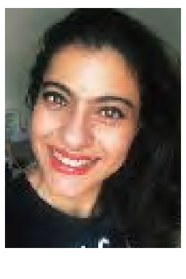

क्वारंटाइन के दौरान अपने प्रशंसकों को अपनी एक्टिविटीज में शामिल कर रहे हैं सितारे। काजोल ने फैंस से सवाल पूछा कि घर में खुद को व्यस्त रखने के लिए उनके पास क्या-क्या आइडियाज हैं? लोगों के दिए हुए कुछ खास आइडियाज को काजोल ने सोशल मीडिया पर साझा भी किया है। कोई कुकीज बना रहा है, तो किसी ने रिसाइकल करते हुए बोतल को एक नया रूप दे दिया है। इसके साथ ही एक यूजर ने लिखा कि मैं एक कलाकार हूं और इस दौरान अपनी एक्टिंग और क्राफ्ट पर काम कर रही हूं। यूजर ने काजोल की फिल्म कभी खुशी कभी गम से उनका गमला वाला डायलॉग भी एक्ट करके दिखाया है। इस पर काजोल ने इसी फिल्म से अपना डायलॉग बोलते हुए कहा कि बड़े मजाकिया हो। काजोल ने लिपस्टिक और मस्कारा लगाकर अपनी एक नई तस्वीर भी साझा की है और उन्होंने महिलाओं से कहा है कि उन्हें तैयार होकर रहना अच्छा महसूस कराता है।

विक्की ने साझा की बचपन की तस्वीर

शुक्रवार को विक्की कौशल ने सोशल मीडिया पर अपने भाई सनी कौशल के साथ बचपन की एक तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में विक्की और सनी दोनों दो कुर्सियों पर बैठे हैं। इस तस्वीर को साझा करते हुए विक्की ने लिखा, 'अच्छे क्वारंटाइन बच्चे। क्या हाल है भाई?'

ऊर्जावान रहने के लिए कंगना ने दिए टिप्स

कंगना और उनकी बहन रंगोली ने नौ दिनों का नवरात्र का व्रत रखा है। इस समय कंगना ने ऊर्जावान रहने के टिप्स दिए। सोशल मीडिया पर उनकी टीम द्वारा पोस्ट किए गए वीडियो में कंगना ने बताया कि वह और उनकी बहन इन नौ दिनों में केवल रात में ही खाती हैं। उन्होंने बताया कि कपालभाति, सूर्य क्रिया, शांभवी महामुद्रा जैसी ब्रीदिंग एक्सरसाइज पूरे दिन ऊर्जा बनाए रखने के लिए बेहद कारगर साबित होती हैं। कंगना ने बताया कि जो पहली बार इस व्यायाम को कर रहे हैं, उन्हें कपालभाति और मूलबंध से इसकी शुरुआत करनी चाहिए। ओम का जाप 10 से 15 बार करें। अनुलोम विलोम करें। कंगना खुद दिन में इस तरह की ब्रीदिंग एक्सरसाइज कर रही हैं। कंगना ने बताया कि गहरी सांस लेने वाले व्यायाम से एंडोर्फिन हार्मोन निकलता है, जिसे अच्छा महसूस कराने वाला हार्मोन भी कहा जाता है।

बॉलीवुड अपडेट

अनूप सोनी को घर की सफाई के दौरान मिली पुरानी शर्ट

अभिनेता अनूप सोनी इन दिनों घर के कामों में पत्नी का सहयोग कर रहे हैं। बकौल अनूप, 'ऐसा नहीं है कि होम क्वारंटाइन होने के बाद मैं घर में सहयोग करने लगा हूं। जब पति-पत्नी दोनों कमाऊ हों, तो घर के काम बंटे रहते हैं। इस दौरान जिम्मेदारियां थोड़ी बदली हुई हैं। मेरा काम है, घर की साफ-सफाई और सैनिटाइज करना। जो भी राशन का सामान बाहर से आता है, उसे सैनिटाइज करके घर लाने की जिम्मेदारी मेरी है।' अलमारी की सफाई के दौरान अनूप को एक पुरानी शर्ट मिली, जो उन्होंने 'क्राइम पेट्रोल' शो के पहले दिन पहनी थी। अनूप कहते हैं, 'वह शर्ट प्रोडक्शन वालों की थी, लेकिन मुझे इतनी पसंद आई थी कि मैं उसे घर ले आया था। उसके बाद उसे पहनने का मौका ही नहीं मिला।' घर पर अपनी दिनचर्या के बारे में उन्होंने कहा, 'शुरुआत में घर पर रहने की आदत डालने में थोड़ी मुश्किलें हुईं। तीसरे दिन से मैंने जल्दी उठना शुरू किया। उसके बाद पानी पीकर सबसे पहले अपना व्यायाम शुरू करता हूं। पूरे दिन एनर्जेटिक रहने के लिए यह सबसे जरूरी है। फिर नहाकर घर के काम में लग जाता हूं। फिलहाल जिंदगी बेडरूम, लिविंग रूम और किचन तक सीमित है। लेकिन मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं, क्योंकि मेरा परिवार साथ है। देखा जाए तो इस लॉकडाउन के कई फायदे हैं। वायरस को फैलने से रोका जा सकता है। बाहर प्रदूषण कम हो रहा है। जब यह लॉकडाउन खत्म होगा, तो एक बेहतर शहर लोगों को मिलेगा। अब लोग जिंदगी की अहमियत को समझेंगे। साफ-सफाई पर ज्यादा जोर देंगे।'

प्रिटी जिंटा ने घर पर सीखा मसाला डोसा बनाना

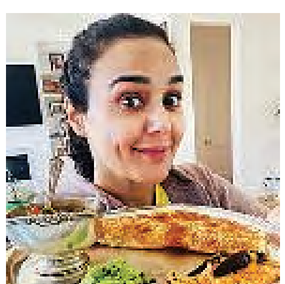

इन दिनों इंडस्ट्री के कलाकार घर पर रहकर समय का सदुपयोग कर रहे हैं। इस दौरान प्रिटी जिंटा ने अपने घर पर मसाला डोसा बनाना सीख लिया है। मसाला डोसा की सजी थाली के साथ सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीर साझा करते हुए उन्होंने यह जानकारी दी। इस तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, 'आखिरकार मैंने मसाला डोसा बनाना सीख लिया है। यह आश्चर्य की बात है कि पिछले 16 दिनों से हम घर से बाहर नहीं निकले हैं और न ही किसी से मिले हैं। थोड़ा अजीब महसूस होता है, लेकिन बाहर जाकर दुखी होने से अच्छा घर में सुरक्षित रहना है। मां के साथ घर में रहना और उनसे पसंदीदा व्यंजनों को बनाना सीखना एक अच्छा अनुभव है। घर के अंदर रहकर भी सकारात्मक और प्रोडक्टिव रहने की कोशिश कर रही हूं।' इससे पहले भी प्रिटी घर में अपनी मां के साथ वक्त गुजारते हुए कई वीडियो साझा कर चुकी हैं। प्रिटी इन दिनों फिल्मों से दूर हैं। आखिरी बार वह साल 2018 में फिल्म 'भैयाजी सुपरहिट' में दिखी थीं।

कोरोना से लड़ाई में रितिक ने मांगी बच्चों से मदद

कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए सिनेमा की कई हस्तियां सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों से अपने घर में ही रहने की अपील कर रही हैं। शुक्रवार को सोशल मीडिया पर साझा किए गए वीडियो में रितिक रोशन कोरोना वायरस से लड़ाई में बच्चों से मदद मांग रहे हैं। वीडियो में वह कहते हैं, 'कुछ बड़े बस नाम के बड़े होते हैं। इन बड़ों को जगाना है और कोरोना को हराना है। इन बड़ों को समझाना होगा कि कोरोना वायरस से लड़ने के लिए घर से बाहर जाने में कोई बहादुरी नहीं है। घर पर रहकर लड़ना होगा, घर पर रहकर हिम्मत दिखानी होगी। मैं जानता हूं कि कुछ बड़े है, जो किसी की नहीं सुनते, पर आपकी सुनेंगे। जब आप उन्हें समझाएंगे कि अगर उन्हें आपकी और आपके परिवार की फिक्र है तो सारे नियमों का पालन करेंगे।' इसके साथ ही उन्होंने बच्चों को भी अपना ख्याल रखने और कोरोना के खिलाफ इस लड़ाई में सभी को शामिल होने की बात कही। इस एक मिनट 50 सेकेंड के वीडियो को साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'मेरे युवा दोस्तों के लिए मेरा एक संदेश। आप भी इस लड़ाई की उम्मीद और हीरो बन सकते हैं।' इससे पहले अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार और कार्तिक आर्यन जैसे कई सितारे वीडियो के माध्यम से लोगों से घर में रहने की अपील कर चुके हैं।

विश्व रंगमंच दिवस पर परिणीति व दीया को याद आए स्कूल के दिन

शुक्रवार को विश्व रंगमंच दिवस के मौके पर हिंदी सिनेमा की कई हस्तियों ने अपनी रंगमंच की स्मृतियों को साझा किया। दीया मिर्जा ने अपने बचपन की कुछ तस्वीरें साझा करते हुए रंगमंच को अपने जीवन के लिए महत्वपूर्ण बताया। तस्वीरों में वह स्कूल में अपने साथियों के साथ कोई नाटक खेलते हुए दिखाई दे रही हैं। परिणीति चोपड़ा ने भी अपने स्कूल के दिनों में नाटक खेलते हुए एक तस्वीर साझा की। इसके साथ उन्होंने लिखा, 'स्कूल में खेले गए एक नाटक के दौरान मैं और मेरे सहपाठी। अगर उन दिनों में मैंने खुद को गंभीरता से लिया होता तो मुझे एहसास हो जाता कि मैं एक अभिनेत्री बन सकती हूं। वहीं संजय मिश्रा ने अपनी बेटी के साथ घर में ही नाटक खेला। इसका वीडियो साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'विश्व रंगमंच दिवस पर समकालीन नाटक घर में ही।' इस नाटक में संजय रोगी बने हैं और उनकी बेटी उन्हें कोरोना वायरस से बचने के उपाय बता रही है।

हुक्का व ताश छोड़ो, कहानियां सुनाओ : रणदीप हुड्डा

जो लोग कोरोना वायरस की गंभीरता नहीं समझ रहे हैं, रणदीप ने हरियाणवी अंदाज में उन्हें घर पर रहने के कई आइडियाज दिए हैं। रणदीप ने सोशल मीडिया पर जो वीडियो पोस्ट किया है, वह हरियाणवी में है, ताकि हरियाणा के ग्रामीणों तक यह संदेश पहुंचे। उन्होंने अपने अंदाज में बताया कि इस समय को व्यर्थ गंवाने की बजाय इसका इस्तेमाल ऐसे कामों को करने में लगाएं, जिससे आप अपने परिवार के बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक कुछ प्राप्त कर सकें। उन्होंने कहा कि घरों में रहने के लिए जो कहा जा रहा है वह हमारी भलाई के लिए है। सभी घर के ताऊ और काकाओं से कहा कि ताश खेलना व हुक्का पीना छोड़कर बच्चों को अपने इतिहास और संस्कृति के बारे में बताएं। उन्हें गीत, चुटकुले सुनाएं। जब तकनीक नहीं होती थी, तब कैसे बड़े-बुजुर्ग बच्चों के साथ वक्त बिताया करते थे। रणदीप ने बच्चों से भी अपील की है कि वे अपने बड़ों से ज्ञान की बातें सीखें, मां की घर के कामों में मदद करें। घर से बाहर न निकलें। इससे पहले रणदीप सेल्फ आइसोलेशन, जानवरों की देखभाल, उन्हें खाना खिलाने आदि जैसे मुद्दों पर सोशल मीडिया पर जागरूकता फैला चुके हैं।